ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑓓𑓖𑓗 𑒧 𑒀𑓀𑒏 𑓐𑓑 𑒀𑒣𑓂𑒩𑒻𑒪 𑓒𑓐𑓒𑓓 (𑒫𑒩𑓂𑒭 𑓑𑓖 𑒧𑒰𑒮 𑓑𑓘𑓔 𑒀𑓀𑒏 𑓓𑓖𑓗)

[𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 ISSN 2229-547X VIDEHA (𑒮𑒢𑒱𑒨𑒹 𑓒𑓐𑓐𑓔) www.videha.com]



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢𑓁 𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭𑒲𑒧𑒱𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒧𑓂



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯- 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒃-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰

𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑓁 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩



(c) २०००- २०२३ सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत वेबआर्काइव माध्यमसँ देखू http://web.archive.org/web/*/videha २५८ चाप्टर (स) जोन २००४ सँ २०१६- http://videha.com/ भालसरिक गाछ- प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई- पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c) २०००- २०२३ विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई- पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (अप्रिल २००४) सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. The Copyright of the contents of the site 'Videha', the Editor, Videha holds the right to print to the contents of the right to be published and reproduce the copy and reproduced in the format and as books. The right to print - for e-books / e-print - to be held by the author and the editor. रचनाकार संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com कैँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई- प्रकाशित रचनाक वेब- आर्काइव थीम- आधारित वेब- आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकर वेब- आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई- प्रकाशन प्रिंट- प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

विदेहो ट्रेडमार्क (लिंक http://www.videha.co.in/) सि। Registered with Controller General of Patents, Designs and Trademarks, Ministry of Commerce and Industry, Government of India. सि। Perfect Sky - Sunset Mid of Day. This Scheme Design is not to be used without the Trade Mark Registration of Videha. Registered Trade Mark of Videha. A distinctive Word-Mark Logo and Trade Mark of Videha are Registered as a Word-Mark and Graphical Mark of Videha at the Trade Mark Registry. Certificate of Trade Mark Registration of Videha issued at the Trade Mark Registry of Government of India. (Attention please) http://www.videha.co.in/, http://www.videhaonline.blogspot.com/, http://www.videha.com/ **Open Access**: http://www.videha.co.in/ with creative commons policy: CC-BY-NC-ND for the contents of the site, the editorial.staff.videha@gmail.com and editorial.staff.videha@gmail.com are available with the contents and documents of the Videha ISSN 2229-547X VIDEHA (April 2004) in peer-reviewed journal Videha. According to the Sustainability Development Goals and Videha is a Registered contents and documents.

विदेहो - ट्रेडमार्क: Registration No. 3967 http://www.videha.co.in/

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *यात्री विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअण खेत्तहि काञ्चि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा)*

माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओहपर (*गद्य- पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

डोन्त जुदगे एअच दाय बय तहे हारवेसत यो रेअप बुत बय तहे सेदस तहात यो प्लानत - रोबेरत लोउिस स्तेवेनसोन

.

विदेह: मैथिली लितेरातुरे मोवेमेन्त

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वं शान्ति:

અનુક્રમ

२.६.कुमार मनोज कश्यप- प्रतिदान

२.७.निर्मला कर्ण- अग्निशिखा (खेप-१६)

२.८.जगदीश प्रसाद मण्डल-जिनगी भार बनि गेल

२.९.आचार्य रामानन्द मण्डल-गौरी आ प्रेम मे धोखा

२.१०. डॉ किशन कारीगर- मिथिला मैथिली के घुन जेंका खोखैर के खा गेल (हास्य कटाक्ष)

२.११.लाल देव कामत- तीन टा पोथीक समीक्षा

३.पद्य खण्ड

३.१.राज किशोर मिश्र-नारी

३.२.मुन्नी कामत- रामायण

३.३.बाबा वैद्यनाथ- गजल- आधार- "रजनी छन्द"



ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ ẇ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয: শান্তি ৰনস্পতয: শান্তির্ৰিশ্বে দেৱা: শান্তির্ব্ৰহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্ৰহ্মণসঁ প্ৰার্থনা জে দ্যুলোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জলমে, ঔষধমে, ৰনস্পতিমে, ৰিশ্বমে, সভ দেৱতাগণমে আ ব্ৰহ্মমে শাঁতি হুঅয।

ॐ-ব্ৰহ্মণ, দ্যৌ-সূৰ্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যুলোকক ৰীঠ, আপ:-জল, ৰিশ্বেদেৰা- সভ দেৰতা, ব্ৰহ্ম- সৰ্জক।

f

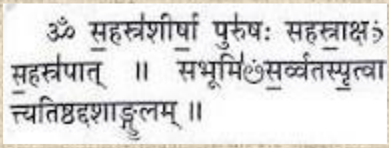
ॐ, सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।

ॐ, স↓হস্ৰা↑ শীৰ্ষা↓ পুৰু↑ষঃ। স↓হ↓স্ৰা↓ ক্ষঃ স↓হস্ৰা↑ পাৎ।

स भूमिं ग्वंग विश्वतौ वृत्वा। अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥

স ভূমিং↑ Ẇ ৰি↓শ্বতো↑ ৱৃ↓ত্বা। অত্যা↑তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।



ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् ॥ सभूमिं सर्व्वतस्पृत्वा
त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

पद्भ्यागँ् शूद्रो अजायत॥

প↓দ্ভ্যাগ্ঁ↑ শূ↓দ্ৰো অ↑জায়ত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रा□त्।

প↓ড্যাঁ ভূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑৯।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

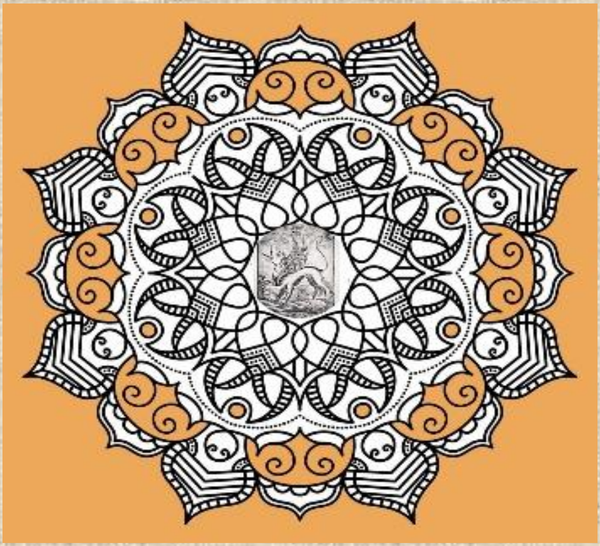
□(Swastik)

□ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम সিদ্ধিৰস্তু, সিদ্ধম Devanagari Anji)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑒀 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑒀



𑓑𑓑.𑒥𑒰𑒪𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩- 𑒬𑒴𑒢𑓂𑒨 𑒁𑓀𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨

𑓑𑓒.𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓖𑓖 𑒣𑒩 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲

૧નૂતન અંક સમ્પાદકીય -ગજેન્દ્ર ઠાકુર

૧

રામચન્દ્ર રાય પ્રસિદ્ધ રામૂ સરક લઘુ આ દીર્ઘ કથાક સંગ્રહ ' સપના સાકાર'

રામચન્દ્ર રાય પ્રસિદ્ધ રામૂ સરક લઘુ આ દીર્ઘ કથાક સંગ્રહ ' સપના સાકાર' ક કથા ' તોહિ બિનુ હમહિ હારબૌ' મે સવર્ણ આ ગૈર સવર્ણક મિલિ જુલિ કઽ રહવાક વર્ણનક સંગ ઈહો જે નવીનક માય- બાબૂક કૌવલા- પાની નોકરીક પહિલ દરમાહાસઁ કૌવલે- પાની પૂરા કરતા આ એકર એકટા અન્તર્જાતીય પ્રેમ કથા, ઈ સભટા ભેટતા પ્રેમ- પ્રસંગમે અપહરાત્મક કેસ દર્જ હોઇતો છૈ, સે એતૌ ભેલ મુદા નૂનૂ ભૈયા એકર માર્ગ ગેલા। ' સપના સાકાર' આત્મકથાત્મક અછિ સે બુઝબામે કનિકો બાઉડ નૈ હોતનિ આ ગરદૈનિક ઉતરી ઉતારવાક નવ વિધિ, એગારહટા પુત્રક પ્રતાડ઼િના કર્મકાણ્ડ આ મૃત્યુભોજક વિદ્યા એકાએક જનિગીમે સ્ત્રીક જીવન, માનસિક રોગ સભ કહિ ભેટતા પગલી પગલી નૈ છલી ઓકરા ઘરમે ભગમન્ત બૂઝલ જાઇ છૈ, મુદા બિયાહક બાદ।

મુદા ઐ સંગ્રહક શ્રેષ્ઠ કથા સભ અછિ દીર્ઘકથા "નિર્વાસિત જીવન" આ "બુચની માઇક બેથા"।

' બુચની માઇક બેથા' મે પંચાયતક બૈસારમે મહિલાક ઉપસ્થિતિ આહ્લાદિત કરૈત અછિ તઁ ઓતૈ બુચની માએક જિન્દગી અવાસક ઢનમનાયલ ઘરક વર્ણન સેહો છૂટલ નૈ અછિ। સસ્પેંસ અછિ, બુચની માએ ઓતૈ ખોલી નામા ચરાણવાવૂ ઓકરા પુતકાવૈ છથિ, એહેન પાપ કરયો કઽ ઓ જીવૈત કેના છથિ? પુત્રક સભકેઁ ઓકરા જનિદા જડ઼ા દેવાક ચાહી। આ બુચની ગુનૂ- સભ પંચકેઁ પૈરનામ! આ જઁ હમ ટૂઽ વાળી તઁ દેહપર વસ્ત્ર ખસય, અંગ કાળ નૈ આવય, સીતાક ભૂમિ પ્રવેશ મોન પડ઼લ? વાઢ઼મે વાન્હ ટુટલૈ, ગામિહત ઓઝાક વરતન- વાસન ચોર કઽ ચોરન કઽ ગુજર કરૈ છલી મુદા ઓહો નૈ રહઽ

𑒠𑒹𑒪𑒏𑒢𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒏𑒰𑒪 𑒖𑒑𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒣𑓀𑒔𑒻𑒞𑒲 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒣𑓀𑒔 𑒮𑒦 𑒄 𑒥𑒖𑒻𑒞, 𑒖𑒹 𑒖𑒑𑒞 𑒢𑒖𑒰𑒨𑒖 𑒏𑒹𑒪𑒏, 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒖𑒑𑒞𑒏 𑒔𑒰𑒏𑒏 𑒔𑒪𑒞𑒹 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒢𑒻 𑒥𑒰𑒖𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒱𑒮𑒲𑒦𑒰𑒑 𑒩𑒰𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒞𑒲𑒢𑒙𑒰 𑒢𑒫𑒨𑒳𑒫𑒏𑒏 𑒏𑒯𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒟𑒰𑒢𑒰 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒲, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒑𑒞𑒏 𑒔𑒰𑒏 𑒍𑒞𑓂𑒞𑒾 𑒩𑒯𑒻। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒻𑒨𑒼 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒰𑒣𑒼𑒏 𑒢𑒻 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒮𑒰𑒏 𑒏𑒱𑒩𑒱𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒫𑒨𑒳𑒫𑒏 𑒮𑒦। 𑒥𑒳𑒔𑒢𑒲 𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒠𑒹𑒞𑒲, 𑒛𑒲𑒋𑒢𑒋 𑒏𑒹𑒩 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒧𑒹 𑒢𑒻 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒙𑒹𑒮𑓂𑒙 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻 𑒂 𑒙𑒹𑒮𑓂𑒙𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒣 𑒖𑒑𑒞𑒹 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒯𑒹𑒞𑒻।

"𑒢𑒱𑒩𑓂𑒫𑒰𑒮𑒱𑒞 𑒖𑒲𑒫𑒢" 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒲𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒏𑒩 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱- 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐𑒏 𑒫𑓂𑒨𑓀𑒑𑓂𑒨𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒬𑒻𑒪𑒲 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒅𑒚𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒦𑒩𑒰𑒧𑒫𑒰𑒪𑒲𑒏 𑒒𑒩𑒧𑒹 𑒔𑒼𑒩𑒲! 𑒔𑒼𑒩𑒏 𑒥𑒳𑒃𑒔 𑒔𑒼𑒩𑒲 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻 𑒏𑒲? 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒦𑒩𑒰𑒧𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒦𑒾𑒖𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒄 𑒔𑒼𑒩𑒲 𑒢𑒻 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒅𑒕𑒢𑓂𑒢𑒩 𑒠𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒂 𑒮𑒹 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒦𑒳𑒙𑒏𑒳𑒢 𑒦𑒰𑒃 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒐𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒪 𑒁𑒣𑒮𑓂𑒨𑒰𑒿𑒞 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱।

𑒌 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒬𑒻𑒪𑒲𑒏 𑒮𑒴𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒁𑒫𑒪𑒼𑒏𑒢 𑒂 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐𑒢। 𑒧𑒙𑒱-𑒏𑒙𑓂𑒙𑒲𑒏 𑒥𑒯𑒢𑓂𑒢𑒹 𑒍𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒖𑒹𑒞𑒰 𑒦𑒳𑒙𑒏𑒳𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒦𑒾𑒖𑒲𑒏 𑒒𑒩𑒧𑒹 𑒠𑒪𑒰𑒢 𑒢𑒻 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒮𑒹 𑒮𑒼𑒯𑒹 𑒂𑓀𑒑𑒢 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒹𑒞𑒰? 𑒦𑒾𑒖𑒲 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒐 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒕𑒯𑒩𑒏 𑒏𑒰𑒞𑒹-𑒏𑒰𑒞 𑒯𑒰𑒛𑓃𑒰 𑒮𑓂𑒟𑒑𑒱𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒪𑒖𑒰 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒪𑒰𑒖𑒹 𑒢𑒻। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒖𑒿 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒨 𑒞𑒐𑒢? 𑒂 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒐 𑒣𑓂𑒩𑒡𑒰𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒠𑓀𑒬। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒼𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒋𑒪𑒟𑒱, 𑒁𑒠𑒯𑒰-𑒁𑒠𑒯𑒲 𑒂𑒩𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱।

𑒌 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒦𑒝𑓂𑒛𑒰𑒩 𑒖𑒹 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏 𑒕𑒪 𑒦𑒩𑒰𑒧𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒦𑒾𑒖𑒲𑒏 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲𑒏 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒦𑒹𑒪।

"𑒢𑒱𑒩𑓂𑒫𑒰𑒮𑒱𑒞 𑒖𑒲𑒫𑒢" 𑒂 "𑒥𑒳𑒔𑒢𑒲 𑒧𑒰𑒃𑒏 𑒥𑒹𑒟𑒰" 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒎𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒞𑒰𑒩 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒌𑒧𑒹 𑒯𑒧 𑒩𑒰𑒧𑒴 𑒮𑒩𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒪𑒹𑒪 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒦𑒰𑒫𑒲 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒕𑒲।

२

११२म ' सगर राति दीप जरय' सहुरियानवटोली- मे सम्पन्न भेल

' सगर राति दीप जरय' कथा साहित्य गोष्ठीक भव्य आयोजन दिनांक २५-मार्च २०२३क शनि दिन मधुबनी जिलाक अन्धरा ठाढ़ीक सटल शिवा पंचायत अन्तर्गत अजनिवा शक्तिषा नकिनन, सहुरियानवटोली केर परिसर - मध्यप्रसिद्ध कथाकार श्री राम चन्द्र राय उर्फ रामू सरजीक संयोजकत्वमे सम्पन्न भेल। आयोजनक शुभारम्भ बिहार सरकारक लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभागक पूर्व मंत्री डॉ रामप्रीत पासवान, साहित्य अकादेमी द्वारा क्रमशः २०२१क पुरस्कार प्राप्त द्वय २०२० : साहित्यकार डॉ कमलकान्त झा आ श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य परिषद्क अध्यक्ष डॉ धनाकर ठाकुर, प्रगतिशील लेखक संघ, मधुबनीक सचिव श्री अरविन्द प्रसाद, दिल्ली उच्च न्यायालयक अधिवक्ता श्री ब्रह्मानन्द प्रसाद आ वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामश्रेष्ठ दिवानाजी सामूहिक रूपेँ दीप प्रज्ज्वलित कए केलैन। मंचासिन अतिथिगणकेँ पुष्पमाला आ नव वस्त्रसँ सम्मानित करैत उद्घाटन सत्रक मंच संचालक श्री राम चन्द्र रायजी कार्यक्रमकेँ आगू बढ़ौलैन। सर्वप्रथम सुश्री शशिप्रभा आ सुश्री चन्दा कुमारी द्वारा स्वागत गान प्रस्तुत कएल गेल। तत्पश्चात् हम स्वागत (उमेश मण्डल) भाषाक संग' सगर राति दीप जरय' क ऐ कथायात्राक संक्षिप्त परिचय - आ कहलैन -प्रस्तुत करैत बजलौं, मैथिली साहित्यक विकास हेतु समर्पित अनेको मंचक मध्य मात्र यएह एक एहन मंच अछि जैपर उपस्थित भेल कोनो लोकविकासम कथाक मैथिली टोक करिको भेल नहि- ' सगर राति दीप जरय' केँ कथाकार उद्घाटनक अछि। जाहि कहल समीक्षक हेतु वर्कशॉप-भिन्न विधामे कुल दस -भिन्न साहित्यकारक विभिन्न रचैत जानी सत्रकेँ कथा सत्रमे प्रवेश करैत एक :क्रमश गोट पोथीक लोकार्पण सेहो भेल।

वरिष्ठ अध्यक्ष मण्डलक गठन भेल जइमे साहित्यश्री प्रीतमकुमार निषाद, श्री राम विलास साहु, डॉ शिव कुमार प्रसाद , प्रो रामेश्वर प्रसाद मण्डल, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री उमेश नारायण कर्ण आ पं शिव कुमार मिश्रकेँ मंचासीन कएल गेलैन, संगे भार तातकि ऐ सत्रक संचालन हेतु श्री नारायण यादव, श्री दुर्गानन्द मण्डल, श्री वैजनाथी राम आ श्री नन्द विलास रायजी सेहो मंचासीन भेल। सबहक सम्मानक संग प्रत्येक कथाकार आ समीक्षक लोकनिकेँ सेहो नव वस्त्र आ पुष्पमालासँ सम्मानित कएल विभिन्न पालीमे कुल ३४ गोट कथाक पाठ भेल आ पठित कथासभपर पूर्व गोष्ठीक भाँति समीक्षाभानि वजे द टिप्पणी सेहो भेल।-सभमे दीप आ पंजी आगामी संयोजक केँ प्रदान कएल गेलैन।(श्री नारायण यादव) पंजी लैत श्री यादवजी आगामी आयोजनक घोषणा कएल कहलैन जे-दीप ' सगर रात दीप जरय' क ऐगला दीप, नहरी गाममे जून मासक (खुटौना) अन्तिम शनि दिन जरत।

अवसरपर लोकार्पित पोथी आ पठित कथा सबहक विवरण निम्न अछि-

१ सपना साकार (कथा संग्रह) : श्री राम चन्द्र राय उर्फ राजू) (सर; २ उपायन श्री राज किशोर मिश्र : (काव्य संग्रह); ३ जगदीश प्रसाद मण्डल एक जीवनी : : श्री रामेश्वर प्रसाद मण्डल; ४ नार्या रहल छली वसुधा (उपन्यास) : श्री रवीन्द्र नारायण मिश्र; ५ अन्तर्ध्वनि : (कथा संचयन) डॉ उमेश मण्डल ; ६ हीरादसिह स्तु मानदाल मातिहलि औरातिर : षह् घाजेनदरा थहाकुर; ७ सेहन्ता सेहनते रहि गेल (कथा संग्रह) : श्री जगदीश प्रसाद मण्डल; ८ सुनयना बेटी श्री जगदीश प्रसाद मण्डल : (उपन्यास); ९ मिथिला सपूत डॉ. गुरमैता : डॉ कमल कान्त झा ; १० मोबाइलक लिला (ललित निबन्ध(: डॉ कमल कान्त झा

कथा पाठ-

१ घटैतदविद्या चन्द्रा -बढैत चन्दा मामा-; २ गोबर बछिनीनारायण -यादव; ३ घी केतए हेराएल तँ दालमिनन्द विलास राय -; ४ बहुगुनी रोटी -जनक लाल मण्डल; ५ देखलेपर देखब पल्लवी -मण्डल; ६ टाइम पास -धनाकर ठाकुर; ७ पढ़ब केना रविभूषण कुमार -; ८ मधुमाछी आ माछी -राम विलास साहु; ९ मोबाइल स्कूलचन्द्र मोहन आचार्य -; १० कहबी खेल -कमलकान्त झा; ११ बुर्कावालीउमेश नारायण कर्ण -; १२ चारिम कथा -मानव अनीस मण्डल; १३ चकबदीर रामेश्वर प्रसाद -मण्डल; १४ डायनोसोर हेबासँ बँचाउअरविन्द प्रसाद -; १५ प्रेमक रश्मिरादुर्गानन्द मण्डल -; १६ परछाँहिझोली पासवान -; १७ पुरना स्वेटररातिकि कुमार -; १८ असल चोर केबीझा डॉ. -प्रसाद; १९ सहोदरकुमार सुनील नारायण -; २० मारूक ममताजगदीश -मण्डल; २१ टेलबिजिनक मुसलमानराम नरेश यादव -; २२ सनेसक गाछ -राधाकान्त मण्डल; २३ अप्पन आसापुरीतम कुमार निषाद -; २४ गोबर कढ़नीकपिलेश्वर राउत -; २५ दस बर्षक बालउमेश -मण्डल; २६ स्थानक महत्वशशि कुमार मिश्र -; २७ आमक पेपीमे गायक योगदानवेचन ठाकुर -; २८ भगवान भुखल नइ राखय छथि- गौरी शंकर साह; २९ कनस्तुसकीसंतोष कुमार राय -; ३० परिश्रमक फल परमानन्द -कुमार राय; ३१ बाबूजीक अरमानसत्यनारायण व्यास -; ३२ दलित मजदूर बैजनाथी राम-; ३३ शॉर्टकट रास्ताजगदीश प्रसाद -मण्डल; ३४ नशामुक्त गामराम चन्द्र राय उर्फ रामू सर। -

सगर राति दीप जरय पहिल सँ ११२ धरिक कथा यात्रा

१ मुजफ्फरपुर, २१०११९९०, प्रभास कुमार चौधरी; २ डेओढ़, २९०४१९९०, जीवकान्त; ३ दरभंगा, ०७०७१९९०, डॉ. भीमनाथ झा, प्रदीप मैथिली पुत्र, बलियकान्त ठाकुर; ४ पटना, ३१११९९०, गोविन्द झा, रमनकान्त झा; ५ बेगुसराय, १३०११९९१, प्रदीप

वहिनी; ६ कटहिया, २२०४१९८९, अशोक; ७ नवानी, २१०७१९८९, मोहन भारद्वाज; ८ सकरी, २२१०१९८९, प्रो सुरेश्वर झा, डॉ राम बाबू; ९ लोहना, १११०१९९२, एसी दीपक; १० विराटनगर, १४०४१९९२, धीरेन्द्र धीर; ११ वाराणसी, १८०७१९९२, प्रकाश कुमार चौधरी; १२ पटना, १९१०१९९२, राजमोहन झा; १३ सुपौल- १, १८१०१९९३, केदार कानन; १४ बोकारो, २४०४१९९३, बुद्धिनाथ झा; १५ पैटघाट, १००७१९९३, डॉ रमानन्द झा 'रमण' ; १६ जनकपुर, ०९१०१९९४, रमेश रंजन; १७ इसहपुर, ०६०२१९९४, डॉ अरविन्द कुमार 'अक्कू' ; १८ सरहद, २३०४१९९४, अमिय कुमार झा; १९ हरिहरपुर, ०९०७१९९४, श्यामानन्द चौधरी; २० घोघरडीहा, २२१०१९९४, डॉ नारायणजी; २१ बहेरा, २१०११९९५, कमलेश झा; २२ सुपौल (दरभंगा) , ०८०४१९९५, कमलेश झा; २३ काठमांडू, २३०९१९९५, धीरेन्द्र प्रेमर्षि; २४ राजबिराज, २४०११९९६, रामनारायण देव; २५ कोलकाता (रजत जयंती, २८१२१९९६), प्रकाश कुमार चौधरी; २६ महिषी, १३०४१९९७, डॉ तारानन्द वियोगी रमेश प्रियोजित; २७ तरौनी, २००६१९९७, शोभाकान्त; २८ पटना, १८०७१९९७, प्रकाश कुमार चौधरी; २९ बेगूसराय, १३०९१९९७, प्रदीप बिहारी; ३० धरौली, ०४०४१९९८, प्रदीप बिहारी; ३१ सहरसा, १८०७१९९८, रमेश; ३२ पटना, १०१०१९९८, श्याम दरिहरे; ३३ वलारस; नागदह, ०८०११९९९, पदम सम्भव; ३४ भवानीपुर, १००४१९९९, डॉ जिष्णु दत्त मिश्र; ३५ मधुबनी, २४०७१९९९, सियाराम झा 'सरस' , डॉ कुलधारी सिंह; ३६ अन्दौली, २०१०१९९९, कमलेश झा; ३७ जनकपुर, २५०३२०००, रमेश

रंजन; ३८ काठमाण्डू, २५.०६.२०००, धीरेन्द्र
प्रेमर्षि; ३९ धनबाद, २१.१०.२०००, श्याम दरिहरे एवं रामचन्द्र
लालदास; ४० बटिठो, २१.०१.२००१, डॉ. अक्कू, प्रो.विद्यानन्द
झा; ४१ हटनी (घोघरडीहा), १९.०५.२००१, प्रो योगानन्द झाअजित
कुआजाद; ४२ बोकारो, २५.०८.२००१, गिरिजानन्द
झा 'अर्धनारीश्वर', मथिलि
सा. परिषद्; ४३ पटना, कविजयंती, ०१.१२.२००१, अशोक, चेतना
समिति, पटना; ४४ राँची, १३.०४.२००२, कुमार मनीष
अरविन्द; ४५ भागलपुर, २४.०८.२००२, धीरेन्द्र मोहन झा; ४६ पटना,
(विद्यापति भवन पटना), १६.११.२००२, अजित कुमार
आजाद; ४७ कोलकाता, २२.१२.२००३, कर्णगोष्ठी, कोलकाता; ४८ खुटौ
ना, ०७.०६.२००३, डॉ. महेन्द्र नारायण
राम; ४९ बेनीपुर, २०.०९.२००३, कमलेश
झा; ५० दरभंगा, २१.१२.२००४, डॉ. अशोक कुमार
मेहता; ५१ जमशेदपुर, १०.०७.२००४, डॉ. रवीन्द्र कुमार
चौधरी; ५२ राँची, ०२.१०.२००४, विवेकानन्द
ठाकुर ; ५३ देवघर, ०८.०१.२००५, श्याम दरिहरे एवं
अविनाश; ५४ बेगूसराय, ०९.०४.२००५, प्रदीप
बिहारी; ५५ पूर्णियाँ, २०.०६.२००५, रमेश; ५६ पटना, ०३.११.२००५, अजी
त कुमार आजाद; ५७ जनकपुर (नेपाल) , १२.०८.२००६, रमेश
रंजन; ५८ जयनगर, ०२.१२.२००६, नारायण
यादव; ५९ बेगूसराय, १०.०२.२००७, प्रदीप
बिहारी; ६० सहरसा, २१.०७.२००७, किसलय कृष्ण; ६१ सुपौल-
२, ०१.१२.२००७, अरविन्द
ठाकुर; ६२ जमशेदपुर, ०३.०५.२००८, डॉ. रवीन्द्र कुमार
चौधरी; ६३ राँची, १९.०७.२००८, कुमार मनीष अरविन्द; ६४ रहुआ
संग्राम (मधुबनी), ०८.११.२००८, डॉ. अशोक अविचल; ६५ पटना, कथा
गंगा-३, २१.१२.२००८, अजित कुमार आजाद चेतना

समिति; ६६ मधुवनी, ३००५२००९, दिलीप कुमार झा; ६७ समस्तीपुर, ०५०९२००९, रमाकान्त राय 'रमा'; ६८ सुपौल- ३, ०५१२२००९, अरविन्द ठाकुर; ६९ जनकपुर, ०३०४२०१०, राजाराम सिंह 'राठौर'; ७० कविलपुर (दरभंगा) , १२०६२०१०, डॉ योगानन्द झा; ७१ वेरमा (हंहारपुर), ०२१०२०१०, जगदीश प्रसाद मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ७२ सुपौल, ०४१२२०१०, अरविन्द ठाकुर; ७३ महिषी, कथा राजकमल, ०५०३२०११, विजय महापात्र; ७४ हजारीवाग, १००९२०११, श्याम दरिहरे; ७५ पटना, हीरक जयन्ती, १०१२२०११, अशोक एवं कमलमोहन 'चुन्नु'; ७६ चेन्नै, १४०७२०१२, विभा रानी; ७७ दरभंगा, कविता जयन्ती, ०११२२०१२, अरविन्द ठाकुर ; ७८ घनश्यामपुर, ०९०३२०१३, कमलेश झा; ७९ औराहा (लौकहि), १५५२०१३, उमेश पासवान; ८० निर्मली (सुपौल), ३०११२०१३, उमेश मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ८१ देवघर, (वजिल कोठी, वम्पासटॉन, देवघर), २२०३२०१४, ओम प्रकाश झा; ८२ मेंहथ, (हंहारपुर), कथा वौय सद्रिय मेहथपा, ३१०५२०१४, गजेन्द्र ठाकुर; ८३ सप्तश्री-जपटियाहि, ३००८२०१४, नन्द विलास रायश्रीगुलाल साहुसूरज नारायण राय 'सुमन' ; ८४ वेरमा (मधुवनी), २०१२२०१४, शिवकुमार मिश्र, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ८५ भागलपुर, (श्याम कुंज, द्वारिकापुरी भागलपुर), ०४०४२०१५, ओम प्रकाश झा ; ८६ लकसेना (मधुवनी), २००६२०१५, राजदेव मण्डल 'रमण', सत्यदेव 'सुमन' ; ८७ निर्मली (सुपौल), १९०९२०१५, उमेश मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी ; ८८ मध्य विद्यालय- डप्पराम (वेनीपुर), ३००१२०१६, कमलेश झा, अमर नाथ झा ; ८९ लौकहि, २६०३२०१६, उमेश पासवान एवं प्रेम

कुमार साहु; ९० लक्ष्मीनियाँ (मधुबनी), १९.०६.२०१६, राम विलास साहु, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ९१ गोधनपुर (मधुबनी) २४.९.२०१६, दुर्गानन्द मण्डल; ९२ नवानी (मधुबनी), ३.११.२०१६, अजय कुमार दास 'पण्डित' ; ९३ रतनसारा (घोघरडीहा), २५.०३.२०१७, राजदेव मण्डल, स्थानीय साहित्यानुरागी ; ९४ लौआहा (मधेपुर), २४.०६.२०१७, डॉ योगेन्द्र पाठक वियोगी, स्थानीय प्रेमी ; ९५ जलसैन डुमरा (मधुबनी), ०९.०९.२०१७, नारायण यादव; ९६ धबौली (लौकही), १६.१२.२०१७, राधाकान्त मण्डल ; ९७ बेरमा (लखनौर), २४.३.२०१८, कपिलेश्वर राउत, बेरमा ग्रामवासी ; ९८ समिया (हरिहरपुर), १६.६.२०१८, डॉ शिव कुमार प्रसाद ; ९९ मुरहद्दी, (बड़की टोल), २२.९.२०१८, प्रो प्रीतम निषाद , १०० निर्मली (तेरापंथ भवन), २२.१२ २०१८, उमेश मण्डल, नवरत्न बैरागी, मनीष जालान ; १०१ हटिकी (मधुबनी), ३.०३.२०१९, भारत भूषण झा ; १०२ महौरा, (मधुबनी), २९.०६.२०१९, जय प्रकाश मण्डल, अशोक कुमार; १०३ रामपुर (मधुबनी), २८.९.२०१९, उमेश नारायण कर्ण 'कमल कवि' ; १०४ बलम नगर-महदेवा (लौकही), १४.१२.२०१९, प्रेम कुमार साहु, उमेश पासवान; १०५ दरभंगा (सीतायन सभागार), १३.०२.२०२१, कमलेश झा ; १०६ हटनी (घोघरडीहा, मधुबनी), २५.०९.२०२१, लालदेव कामत; १०७ बेलहा (खुलपरास), २५.१२.२०२१, जीवकान्तक स्मृति, उमेश मण्डल, ई. शैलेन्द्र मण्डल; १०८ मधुरा (मधुबनी), २६.०३.२०२२, डॉ श्रीशंकर झा; १०९ ननौर (मधुबनी), २५.०६.२०२२, प्रदीप पुष्प; ११० सोनवर्षा (लौकही), २४.०९.२०२२, अच्छेलाल शास्त्री, स्थानीय साहित्य प्रेमी; १११ रहुआ

संग्राम (मधुबनी) ३१.१२.२०२२, अशोक अविचल; ११२ सहुरिया (अन्धराठाढ़ी) मे २५ मार्च २०२३, रामचन्द्र राय। ११३ म सगर राति दीप जरय जून २०२३ मासक अन्तिम शनि दिन हएत- आगामी संयोजक श्री नारायण यादव [स्थान नहरी (पुरैना)गाम]।

१११म 'सगर राति दीप जरय' नहुआ संग्राममे सम्पन्न भेल

साहित्य अकादेमी मैथिली परामर्शदातृ समितिक अध्यक्ष डॉ. अशोक अविचल व्यक्तिगत आयोजनमे १११म 'सगर राति दीप जरय'क आयोजन, वर्षक ३१ दिसम्बर २०२२ शनि दिन, नहुआ संग्रामक 'आदिनाथ मधुसूदन पारस स्मारक संस्कृत महाविद्यालय'क समारोहमे सफलतापूर्वक सम्पन्न करबेलनि। ३३ टा नूतन कथाक पाठ भेल। पठित कथा सभपर मैथिली कथाकार लोकनि टिप्पणी केलनि। एतऽ विभिन्न विधाक १७ पोथीक लोकार्पण सेहो भेल। ई आयोजन तीन- तीन मासपर, वर्ष भरिमे चारि बेर आयोजित होइछ। प्रथम 'मार्च' मे, द्वितीय 'जून' मे, तृतीय 'सितम्बर' मे आ चतुर्थ 'दिसम्बर' मे।

एतऽ किछु मूलधाराक साहित्यकार नाम नै लेबाक शर्तपर सूचित केलन्हि, जे अशोक अविचल आ सात टा गएर लटिगेरी असोसियेशन साहित्य अकादेमीक मेम्बरशिपमे एकटा नाम आगाँ अनलक अछि- डॉ. अजय कुमार झा जे अशोक अविचलक भागिन छथिन्हि (किछु गोटेक अनुसार ममियौत पसियौत); तँ मूलधाराक कथाकार लोकनि १११म सगर जाति दीप जरयक बहिष्कार केलनि। ई पुछलापर जे तखन विभूति आनन्द, हीरेन्द्र कुमार झा, दमन कुमार झा आ अशोक कुमार मेहता केना १११म सगर राति दीप जरयमे पहुँचला, तँ ओ सभ सूचित केलनि जे तइ लेल ऐ चारू गोटेक करार अशोक अविचलसँ भेलन्हि जे ओ एकरा ११२ म सगर राति दीप जरय लिखता, मुदा ओ कोनो आमंत्रणमे से नै केलन्हि आ बैनरपर ऊपरमे छोट

सन 'क्रम ११२' लिखलन्हि। तइपर संचालक हितेन्द्र कुमार झा क उसकेलापर अध्यक्ष विभूति आनन्द समेत दमन कुमार झा आ अशोक कुमार मेहता २-३ घण्टा बाद चा पी कऽ ओतऽ सँ प्रस्थान कऽ गेल, मुदा समानान्तर धाराक सभ कथाकार भोर धरि गोष्ठीमे रहि एकरा सफल बनबेलन्हि। एतऽ ई स्पष्ट कऽ दी जे ई कृत्य हितेन्द्र कुमार झा पहिनहियो केने छथि जे विदेहमे अभिलेखित अछि [८८म सगर राति दीप जरय, औरहा (लौकही), १५.५.२०१३, संयोजक- उमेश पासवान; हितेन्द्र झा द्वारा क्रमांक ८० नै केलापर गोष्ठीक बहिष्कार आ हुनका उसकेलापर अशोक कुमार मेहता सेहो बहिष्कार केलनि]। एतऽ ईहो स्पष्ट कऽ दी जे हितेन्द्र कुमार झा लूज टॉक करैमे माहिर छथि आ अपना सब आयल लोकक विषयमे, कनियो जँ ओ सभ एम्हर-ओम्हर गेल, तँ ढाकीक ढाकी विषवमन करै छथि। संगहि ईहो स्पष्ट कऽ दी जे समानान्तर धाराक लेखक लोकनिक सगर राति दीप जरयमे आगमनसँ पूर्व, जखन हितेन्द्र कुमार झा सभक बोलबाला छलन्हि, गोष्ठीमे सभ चा पी कऽ सूति जाइ छल आ मात्र कथा पढ़निहार असगरे जागल रहै छल, जकर विरोधमे आशीष अनचिन्हार कथा पढ़बासँ मना कऽ देने रहथिन्ह, मुदा मूलधारा भोरमे जे न्यूज देलक तइमे ई गप नै आयल। ई सभटा खेरहा हमर पोथी प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-२ मे अभिलेखित कएल गेल अछि जे उपलब्ध अछि http://videha.co.in/pothi.htm पर। साहित्य अकादेमी द्वारा गत दस वर्षसँ समानान्तर धाराक एकमात्र सशक्त सगर राति दीप जरय केँ गीड़ि लेबाक प्रयास कएल जा रहल अछि। आगामी ११२म 'सगर राति दीप जरय' क आयोजन श्री रामचन्द्र रायक संयोजकत्वमे हुनक पैतृक गाम- सहुरिया (अन्धराठाढ़ी) मे 'मार्च' २०२३ मासक अन्तिम शनि दिन हएत, से सर्वसम्मतिसँ निर्धारित भेल। हितेन्द्र कुमार झा अपन ब्लैकमेलिंग आगाँ सेहो पूर्ण निष्ठासँ जारी राखलनि जखन ०२.०१.२०२३ केँ रामचन्द्र रायकेँ फोन कऽ आगामी गोष्ठीक क्रमांक ११२ नै ११३ करबाक दुष्टतापूर्ण ब्राह्मणवादी आग्रह केलन्हि आ डरेलन्हि, जइ सँ कोनो तरहेँ साहित्य अकादेमीक गोष्ठीकेँ सगर राति दीप जरयक मान्यता भेटि

जाय, जे १ ०५.०१.२०२३कें घटली मानलन्हि साहित्य अकादेमी हुनका दस वर्षसँ जानी ऐ कुत्सित प्रयासक मेहनताना दैत हेतन्हि आ जँ नै देने छन्हि तँ आगाँ देतन्हि। विदेहक आगामी साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक मे सभ गपक खुलासा हएत।

ऐ सन्दर्भमे ई स्पष्ट कऽ दी जे अशोक अविचल ऐ गोष्ठीक आयोजन पूर्ण रूपसँ व्यक्तिगत रूपेँ केने रहथि। दरिभंगाक साहित्य अकादेमीक गोष्ठी जे ठेकेदारक १५० जयन्ती वर्षमे आयोजित भेल आ जकरा साहित्य अकादेमी अपन वार्षिक रिपोर्ट आ आय-व्यय खातामे अपन गोष्ठीक रूपमे वर्णित केलक आ तकरा पाइक वितरण देखेलक आ ऑडिटरसँ अप्रूव करेलक, जे सभ मदमे ठेकेदारक कार्यक्रम छल खर्च भेल (सगर राति दीप जरय छल नै) कें सगर राति दीप जरयक रूपमे मान्यता देवा छल मूल यात्राक पुरस्कार असाइनमेन्ट छलए आ ब्राह्मणवादी छल गत दस वर्षसँ अपस्याँत छथि, से एक बेर फेर असफल भेल।

रहुआ संग्राम गोष्ठीमे निम्न कथाक पाठ भेल, १ डॉ. विभूति आनन्द: आस्था, विश्वास आ परम्परा; २ रवि भूषण कुमार: भोजक वहिष्कार; ३ मानव अनीष मण्डल: सत्यक भ्रूण हत्या; ४ रतिकि मण्डल: गेहूँ तँ हम गेहूँ; ५ पं शिव कुमार मिश्र: वसुधा कहू की न होय; ६ उमेश मण्डल: अप्पन जमिन; ७ आचार्य रामानन्द मण्डल: बाल वैरागी; ८ रामाकान्त मण्डल: जुमहुर आगि आ अछहुआ; ९ होलि पासवान: कारी नाग; १० नारायण यादव: कनियाँक जीवन; ११ कपिलेश्वर राउत: येश्री; १२ जगदीश प्रसाद मण्डल: कुम्हरक बतिया; १३ अमित मिश्र: अयलाहक परिणाम अयलाहे; १४ वैद्यनाथ राम: हमहीं यनीक छी; १५ हरिश्चन्द्र हा: निरीक्षण; १६ प्रीतम कुमार निषाद: वुढ़ारी भ्रूणक हत्या; १७ श्रवण कुमार मण्डल: प्रेम विवाह; १८ रामसेवक ठाकुर: सात पुत रामकें; १९ रामकृष्ण परार्थी: आडि; २० दुर्गेश

मण्डल: द्वन्द; २१ ललदेव कामत: मधुमाछी; २२ शारदानन्द सिंह: जावत सोप्पा के नाव होयतौ तावत; २३ अरविन्द प्रसाद: बैगनू आ मंगनू; २४ अशोक अविचल: मनुआ नायक मोर; २५ नारायण झा: राजनीतिक राजनीति; २६ उमेश नारायण कर्ण: माय; २७ दुर्गानन्द मण्डल: सपना; २८ राम विलास साहु: ठीक करब तँ बेजाए कथि हएत?; २९ नन्द विलास राय: भगल बढ़िया; ३० रामचन्द्र राय: तोहीं जितिऐं हमहीं हारबौ; ३१ रामेश्वर प्रसाद मण्डल: हमरो बहिन अछि; ३२ विनय मोहन जगदीश: छट्ठू; आ ३३ राजेश कुमार शर्मा: संघर्ष।

गोष्ठीमे विमोचन पोथी सभक लोकार्पण भेल- १ साहित्यकारक विवेक (कथा संग्रह) : जगदीश प्रसाद मण्डल; २ नव वनक नव शल (कथा संग्रह) : जगदीश प्रसाद मण्डल; ३ सुचिता (उपन्यास) : जगदीश प्रसाद मण्डल; ४ प्रतिक्रिया एखन बाँकी अछि (काव्य संग्रह) : रामकृष्ण परार्थी; ५ असल पूजा (कथा संग्रह) : नन्द विलास राय; ६ संयोग (कथा संग्रह) : रवीन्द्र नारायण मिश्र; ७ लजकोटर (उपन्यास) : रवीन्द्र नारायण मिश्र; ८ [illegible] थकि जीवन (संस्मरण) : रवीन्द्र नारायण मिश्र; ९ राष्ट्र मंदिर (उपन्यास) : रवीन्द्र नारायण मिश्र; १० मातृभूमि (उपन्यास) : रवीन्द्र नारायण मिश्र; ११ सीमाक ओहि पार (उपन्यास) : रवीन्द्र नारायण मिश्र; १२ नित नवल सुभाष चन्द्र यादव : गजेन्द्र ठाकुर; १३ मैथिली समीक्षाशास्त्र (आलोचना) : गजेन्द्र ठाकुर; १४ ढ़ाजदो मानदाल मातिहिलि औरातिर : घाजेनदरा थहाकुर; १५ सुभद्रा कुमारी चौहान (विनिबन्ध) : डॉ अशोक अविचल; १६ जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी (विचारोत्तेजक गद्यांश संकलन) : डॉ उमेश मण्डल; १७ जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संग्रह (अनुसन्धान विश्लेषण) : डॉ उमेश मण्डल।

𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒨𑒰𑒠𑒫 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 𑓑𑓑𑓑𑒧 𑒮𑒑𑒩 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒠𑒲𑒣 𑒖𑒩𑒨𑒏 𑒮𑒤𑒪𑒞𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑓀𑒠𑒹𑒬 𑒣𑒚𑒾𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒂 𑒢𑒻 𑒂𑒥𑒱 𑒮𑒏𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒠𑒳𑒐 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞 𑒏𑒋𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒪𑒼𑒏𑒰𑒩𑓂𑒣𑒱𑒞 𑒣𑒼𑒟𑒲 ' 𑒢𑒱𑒞 𑒢𑒫𑒪 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒨𑒰𑒠𑒫' 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒑𑒹𑒪, 𑒂 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒪𑒼𑒏 𑒧𑒰𑓀𑒑𑒱- 𑒧𑒰𑒑𑒱 𑒏𑓄 𑒍 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒪𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒂 𑒍𑒢𑒣𑒩 𑒠𑒴𑒩 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲 𑒂 𑒂𑒢- 𑒂𑒢 𑒙𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒋 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 ऑ𑒩𑓂𑒛𑒩 𑒪𑒼𑒏𑒰𑒩𑓂𑒣𑒝 𑒠𑒱𑒢 𑒮𑒿 𑒂𑒥𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪।

- Dhirendra Thakur, Editor, Videha (The paper of Videha www.videha.co.in - Send your whatsapp no to +919560960721 so that it can be added to the videha whatsapp broadcast list)

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

𑓑.𑓒.𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓖𑓖 𑒣𑒩 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲

𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓖𑓖 𑒣𑒩 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲

आशीष अनचिन्हार
नचिकेताक दुनू कविता हुनकर हस्तलिपिमे नीक लागल।
नाति नवल सुशील आ नाति नवल दिनेश कुमार मिश्र नीक जकाँ आगाँ बढ़ि रहल अछि।

यूनीकोड तिरहुता कीबोर्ड आ मैथिली संकेतलिपि सम्बन्धी सम्पादकीय उत्तम अछि।

अपन मंतव्य editorial.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

राजदेव प्रसाद

𑓒𑓑𑒧𑒯𑒰𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠- 𑒥𑒲𑒯𑒢𑒱 𑒏𑒟𑒰- 𑒥𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲



𑒧𑒯𑒰𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠
𑒥𑒲𑒯𑒢𑒱 𑒏𑒟𑒰- 𑒥𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲

-𑒧𑒲𑒞𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒱𑒌 𑒍𑒞𑓄 ?

-𑒏𑒞𑓄 𑒨𑒾?

-𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝𑒥𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒙𑒼𑒪, 𑒣𑒼𑒐𑒩𑒱𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒩 𑒠𑒱𑒮𑒱।

-𑒑𑒹𑒪 𑒞𑓄 𑒕𑒪𑒱𑒌, 𑒖𑒹𑒙𑒫𑒼 𑒏𑒋𑒪, 𑒪𑒹𑒏𑒱𑒢 𑒕𑒻 𑒍𑒏𑒩𑒰, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒥𑒰𑒠 𑒧𑒹 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒱𑒌!

-𑒞𑒐𑒢?

-𑒞𑒐𑒢 𑒏𑒲, 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒞𑓄 𑒖𑒹 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒮𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒏𑒩𑒞, 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒦 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒰 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒳- 𑒥𑒾𑒞-𑒥𑒾𑒞 𑒍𑒏𑒩 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒣𑒩 𑒣𑒮𑒹𑒢𑒰𑒏 𑒥𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒔𑒳𑒥𑒱𑒨𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒻𑒏।
𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒧𑒲𑒞 𑒑𑓀𑒦𑒲𑒩 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪।

𑒞𑒐𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒏𑒰𑒮 𑒮𑒿 𑒥𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒐𑒮𑓄 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒻𑒏। 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒩 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial@videha.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

२२संतोष कुमार राय 'बटोही' - डायरी- 'लव यू टू' (आगाँ)



संतोष कुमार राय 'बटोही'
डायरी -' लव यू टू' (आगाँ(

१४-०८-२०१३

मुगल गार्डन राष्ट्रपति भवन :

लल्ली केर मोन गदगद भ' गेलै, जखन ओ मुगल गार्डनक नाम सुनलीह। मुगल गार्डन राष्ट्रपति भवन केर पाँछा मे छै। फूलक खुशबू सँ गमगम करैत रहैत छै राष्ट्रपति भवन। मुगल गार्डन मे ओनाहि नहि घुसि सकैत छी। मेटल डिटेक्टर सँ चेक करैत छथि सेकुरीटी गार्ड।

लल्ली पिंक कलर कें अंग्रेजी सूट पहिरने छथि। हुनका देह पर ई सूट खूब जँचै छन्हि। हमरा देखि किछ मोन हरषित भेल जे लल्ली पर नीक लागि रहल छथि। मोन मे टिस मारस लागल छल। रायेकहियो लल्ली हमर ! राये-संन्यासिनी बनती ई मोन मे सोचि रहल छलहुँ आओर मुगल गार्डन घुमि नँ गेल ध्यान दसि लल्ली रहल छलहुँ, ओ हमरा दसि ताकि रहल छलीह। हम किछु पछुआ गेल छलहुँ। पाछा तेजी सँ आगा बढ़ैत लल्ली कें सोहा गेलहुँ हम। लल्ली हमर आओर पास आबि गेलीह। ओ एकटा फूल दसि इशारा करैत बजलीह " -व्हाण यु गुेसस ौहात सि तहे नामे ोड तहसि डलौंर ?

હમ અકબકા ગેલ છલહુઁ । હમ અઇ પ્રશ્ન કેર જવાબ દેબા લેલ તૈયાર નહિ છલહુઁ। સચ કહી છલ જે હમ ઓઇ લૂલ કેઁ નહિ ચિન્હૈત છેલિયૈ। હમ ઓકરા સઁ કહલિયૈ -
"સોરરય, ચાન યો ગેસસ ?"
ઓ કહલનિ જે તારિ મે અઇ લૂલક નામ કહલીહ।

૮ - ૧૦- ૨૦૧૩

હંસરાજ કૉલેજ ડાયરી :

નૉર્થ કૈમ્પસ ઉતરિ કસ હમ વિશ્વવિદ્યાલય દિસ ચલૈત રહલહુઁ અછિ। રોડ કેઁ દુનુ કાત ગાછ છૈ। કતૌ રસ્તા મે ભેંટ નહિ ભેલ। સનેહમ આગાઁ વઢૈત :સનૈ : જાક આગાઁ ગેલહુઁ અછિ।સ રસ્તા કેઁ દુટા શેડ ભસ જૈત છૈ। આવ કહિ દુરિ પર એકટા આટો અવૈત દેખાયલ। ડ્રાયવર સઁ પુછિ કસ આગાઁ વઢૈત રહલહુઁ હમ। ઢેર રાશિ ચલસ પડલ। દાહિના ચલિ કસ ૨૦૦ મીટર પર હંસરાજ કૉલેજ કેર ગેટ દેખિ કસ મોન હરખિત ભેલ જે ઓકરી આવ ભેંટ જેતીહ।

હમ અતિ વિહ્વિસમે ચલિ ગેલ છલહુઁ। કૉલેજ પર કતૌ નજર નહિ આયલ। કનકિ દેર ગેટ લગ ઠાઢ રહલહુઁ હમ, તઁ એકટા ગાર્ડ દખાઇ દેલક। સમય કરીબ સાઢે સાત હોયત છલૈહ। ગાર્ડ કહલક દસ બજે કૉલેજ ખુલતૈ। આવ હમ કી કરવ ? મોન હદબદા ગેલ। હમ ઉલ્ટે પૈર રાગિ રોડ દિસ વિદા ભેલહુઁ। ઓકરી સઁ મિલિવાક હોક ચઢલ છલ।

રાગિ રોડ આવિ કસ હમ વસ સ્ટૈડ પર વૈસ ગેલહુઁ । ઓકરી કેઁ ફેરા દેખસ લાગલહુઁ। ઓકરી પર વિશ્વાસ છલ જે ઓ જરૂર ઔતીહ। સાઢે નૌ વાજિ ગેલૈ। ઓકરી કેઁ હમ ફોન લગૌલિયૈ। ઓકરી ફોન નહિ ઉઠૌલક। કનેક મોન છોટ ભ ગેલ। પરન્ચ હમ હારલહુઁ નહિ। ફેર ફોન લગૌલિયૈ। અઇ બેર ઓ ફોન રિસીવ કેલીહ। ઓ આવિ રહલ છલીહ આજાદપુર મે।

હમન મોન ગદગદ ભસ ગેલ। ૨ લલ્લી છથિ। હમન મોન આશ્રોન દલિ પન ઓ કવ્ળા કસ ઉને છથિ। આઁખિ ડિવડવા ગેલ। ૨ મહિન કેં વાદક નોન છયિયા। લલ્લી હમન ળાન અછિ, હ્ૃદયક સ્પંદન અછિ, ઓ હમન કોમલ ભાવ અછિ , લન્તી ળકાઁ વઢૈત અનુનાગ અછિ।

હમ ઓકન હંસ છયિય ઓ હમન હંસિની। હમના લલ હંદ્નલોકક પની સેલ અછિ। લલ્લી કેન સોહ્રા મે મેનકા સેલ અછિ। મોન, કનમ, વચન સઁ ઓ હમન છી।હમન ઓકન છયિયા। ઓ હમન હ્ૃદયક મન્મ કેં વુઢૈત છથિ। ળહિયા હમ મનવ ઓ હમના લલ ળનૂને કનતીહ। હ્ૃદયક અથાહ કોડની મે ઓ ત્નાણિગી મુદ્ના મે અટકલ અછિ। ઓ નાળ વનલ અછિ।

૨૫- ૧૨- ૨૦૧૩

લલ્લી હમન છી

હ્ૃદય અપ્પનો યનિ નહિ માનૈત અછિ કિ લલ્લી હમના છોડ઼િ કસ ચલિ ગેલીહ। મોન કચોટિ કેં હમ નહિ ગેલહુઁ। દેવના હમન પતિન હમન સંગ નહિ દેલક।-દ એક લલ્લી ભેલ। વેકાન પ્નયાસ અંતિમોનિ યનિ નાસમૂમિ મે ઉઁટલ નહીહ, પનસ્ય યન્મેંદ્નળી ઓકના નૂમ પન સઁ ટસ પાપા કેં લલ્લી મસ નહિ ભેલહ।-સ-કી હમ આવ ગેલહુઁ। હાનિ હિમ ગેલીહ। હાનિ લલ્લી કહલાથિ। ગપ પ્વેવાક ળહન કની? ળણિગી પ્નત્મ કનૈ કેં વચિાન કેલહુઁ , પનસ્ય માયક અવસ્થા દેખિ કિસ ૨ વચિાન છોડ઼િ દેલહુઁ।

તેખંડ કે અ૨ મકાન મે આ૨ મનલ ળકાઁ હમ પડ઼લ છી। હ્ૃદય ટુટિ ગેલ અછિ। આઁખિ સઁ નોન વહિ નહલ અછિ। કયિો સુનનાહિન નહિ। ગનીવ કેં પ્નેમ કનવાક કોનહુઁ અધિકાન નહિ હોઇત છૈ। ગનીવ માને નત્નિળીવ હોયત છૈ। લલ્લી હમન નહિ ભેલીહ। હમન હ્ૃદય અાટિ ગેલ। હમન વિશ્વાસ ડગમગા ગેલ। આવ દુનિયિા પન

सँ हमर विश्वास उठि गेल। हम वयहैर काटि किस कारणहुँ अछि। मोन विरक्त भऽ गेल। परिवार , समाज, देश सँ हमरा वैराग्य भाव उत्पन्न भऽ गेल।

हमर दुनिया अन्हार भऽ गेल। अभावस सँ दोस्ती भऽ गेल। एहेन हमरा बिसैर गेलीह, परञ्च हम ओकरा नहि बिसिरलियै अपनो यहाँ अंतिम साँस यहाँ ओ हमर हृदय मे रहतीह। हम आजीवन ओकर गुलाम बनि गेलहुँ अछि। एहेन केर शब्द ' आई लव यू टू' अपनो यहाँ हृदय मे उथल मचौने अछि। मोन मे हरदम उठि जायत अछि। मोन मोसैर कें रहि जायत छी। हमर एहेन हमर छी याहे दुनिया जेना बुझै।

- संतोष कुमार राय ' बटोहि' , ग्राम मंगरौना -

अपन मंतव्य editorial@videha.co.in पर पठाउ।

𑓒𑓓𑒮𑓀𑒞𑒼𑒭 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒩𑒰𑒨 '𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲' - 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 - '𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒲'



𑒮𑓀𑒞𑒼𑒭 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒩𑒰𑒨 '𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲'
𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 -'𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒲'

𑒒𑓀𑒙𑒲 𑒙𑒳𑒢𑒙𑒳𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻। 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒮𑒦 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻। 𑒔𑒹𑒞𑒢𑒰 - 𑒮𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒹𑒩 𑒮𑒧𑒨 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒻। 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒩𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒡𑒰𑒢𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒣𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒧𑒻𑒏 𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒖𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯, "𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒏𑒲 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒮𑒰𑒫𑒡𑒰𑒢, 𑒑𑒳𑒩𑒳𑒩𑓂𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒰 𑒑𑒳𑒩𑒳𑒩𑓂𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳' '

"𑒞𑒴 𑒯𑒲 𑒩𑒰𑒧 𑒯𑒻, 𑒞𑒴 𑒩𑒯𑒲𑒧 𑒯𑒻𑒮𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒹𑓀 𑒞𑒲𑒢 𑒙𑒰 𑒥𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰 -𑒫𑒵𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒔𑒹𑒞𑒢𑒰।" 𑒂𑒑𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒪𑒟𑒱।

𑒂𑒫 𑒍 𑒧𑒼𑒙𑒑𑒩 𑒣𑒹𑒢𑒰 𑒪𑒏𑒿 𑒕𑒛𑓃𑒲 𑒪𑒮𑒏𑒮 𑒣𑒿𑒞𑒱𑒣𑒿𑒞𑒱 𑒒𑒳𑒧-𑒮 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒂𑒃𑒫𑒲 𑒏𑒹𑓀 𑒂𑒬𑒳𑒞𑒼𑒭 𑒏𑒹𑓀 𑒋𑒏 𑒕𑒛𑓃𑒲 𑒙𑒧𑒻𑒮 𑒏𑒮 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒕𑒾𑒛𑓃𑒰 𑒏𑒹𑓀 𑒣𑒲𑒚 𑒁𑓀𑒔𑒱𑒑𑒹𑒪𑒻। 𑒍𑒏𑒩 𑒠𑒳𑒢𑒳 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒮𑒿 𑒢𑒼𑒩 𑒜𑒫𑒜𑒫 𑒐𑒮𑒮 𑒪𑒑𑒪𑒻। 𑒣𑒬𑒱𑒰𑒨 𑒪𑒏◌ँ 𑒍 𑒪𑒛𑒲 𑒫𑒪𑒰𑒏𑒹𑒞 𑒕𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯𑒱।

𑒁𑒖𑒰𑒨𑒱𑒞𑒢 𑒑𑒲𑒞 𑒏𑒹𑓀 𑒍 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒒𑒩𑒹 𑒁𑒪𑒑 𑒪𑒰𑒨𑒹𑒑𑒹 𑒯𑒧-𑒒𑒩𑒹 " -, 𑒙𑒹𑒐𑒹𑒑𑒹 𑒪𑒧𑒰𑒢𑒰"।

માથ પર ' દેવ઼ાનંદ' સ્ટાઇલ કેં કાન્થી રંગ કેર ટોપી પહિરૈત છથિ। વળૈતવળૈત - શ્રાશ્રોર પૈઘ કયિ઼ો છલ હુનકા પસેની। વાઇસ ચાન સવ શ્રુયુની જેલ રહૈત છથિ। પૈઘ સઁ હેડમાસ્ટર છથિન્હિ। હઁકૈત સઁ ઊઠી એકે સવકો છથિ। નહિ છોટ કયિ઼ો રહૈત નાચૈત મે સ્કૂલ ળકઁ વ઼પિટા દનિ જાર છથિ। વ઼દૂષક શ્રો છથિ। ઇ કનિકો નીક ઊગૈન્હ વ઼ા નહિ શ્રોઇ સઁ હુનકા કોનહુઁ પરવ઼ાહ નહિ છન્હિ।

નટુશ્રા ળકઁ હુનકર હાથ ચમકૈત રહૈત છન્હિ। કતૌ ટકિ કસ શ્રો નહિ વૈસૈત છથિન્હિ। ળેના હુનકા હૈવ઼હૈટ જેલ રહૈન્હ , શ્રો દેહ કેં મચિય઼વૈત રહૈત છથિન્હિ। વ઼કીલક કારી કોટ જાર વિરપ્ય પહિરને રહૈત છથિ। ગર્મી, ળાડ઼, વરસાત સજ મૌસમ મે એકે પેહિરાવ઼।।

પ્રેમચંદ ળકઁ મોછ , રંગ ગેહુંશ્રા , છહ શ્રુટક કદકાઠી , દોહારા દેહ , નાક પ્યરગર છન્હિ હિનિકર। કોટ પર શંકરામાઇસનિક પાઉડર છડ઼િશ્રાયલ રહૈત છન્હિ।

કોનહુઁ નાટક પાર્ટી મે પહિનિ કાળ કરૈત છલાહ મનૈ। મઉગી ગાર હુનકા પ્યૂવ શ્રવૈત છન્હિ। મેમોની પાવ઼ર શ્રાતેક મળવૂત ળે કમ્પ્યુટર હુનકા સોહ઼ા મે સ્ટેલ છૈ।

પ્યસ્સિા કહ્વા મે ગોલ હ઼ા કેર કાન કાટૈત છથિ। ડહાકા મારિ કે હઁસૈત છથિ। સ્વ઼ાંગ કરવ઼ા મે હુનકા મહારત હાસલિ છન્હિ। પ્યને પ્યંડતિ છથિ કિનિકો ઊપર, પ્યને ઉહે વ઼ેક્તિ સઁ ઘુલમલિ ક-સ ગપયિ઼ત છથિ। હુનકા છલ કયિ઼ો નહિ પરમાનેંટ દોસ્ત , નહિ દુશમન।

વળૈતછી વળૈત કી વળૈત જાસયિ઼ા ળૈત છથિ-, કતસ વળૈત છી સે સુચવિદ્યા - વટગાવની વ઼યિારર સજ કોનટા પર ટૈગ દૈત છથિન્હિ-શ્રાયાર હના ળાય઼ત છન્હિ। છથિ। વહિર શ્રો મે કહે શ્રુકરા શ્રાશ્રોર

" 𑒔𑒩𑓂𑒧𑒬𑒰𑒪𑒰 𑒯𑒻 ? 𑒖𑒥 𑒧𑒩𑓂𑒖𑒲 𑒞𑒥 𑒂𑒍 𑒮𑒢𑒧 𑒂𑒍 𑒬𑒩𑒧 𑒯𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒞𑒰 𑒯𑒻। ! 𑒥𑒰 𑒖𑒻𑒮𑒹 𑒂𑒨𑒹𑒑𑒰। 𑒌𑒮𑒹 𑒮𑒦 𑒮𑒢𑒧𑒰 𑒖𑒰𑒍𑒣 𑒏𑒰 𑒒𑒩 𑒯𑒻। 𑒃𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒯𑒻𑒯𑒰𑒟 "𑒃𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪। 𑒯𑒹𑒛𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒥 𑒥𑒰𑒖𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒟𑒱। 𑒔𑒧𑒏𑒥𑒻𑒞

𑒏𑒪𑒱𑒨𑒳𑒑 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏𑒑𑒝 𑒋𑒏 𑒛𑒹𑒜𑓃 𑒒𑓀𑒙𑒰 𑒪𑒹𑒙 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 ! 𑒒𑒼𑒩 𑒏𑒪𑒱𑒨𑒳𑒑। 𑒂𑒍𑒩 𑒋𑒏 𑒛𑒹𑒜𑓃 𑒒𑓀𑒙𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒱 𑒃𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒮𑒿 𑒦𑒰𑒑𑒻 𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒯𑒹𑒛𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒥 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒂𑒨𑒩 𑒦𑒼𑒪 𑒕𑒟𑒱, " 𑒮𑒦 𑒏𑒻𑒿 𑒮𑒦 𑒣𑒩𑒰𑒑𑒻𑒩 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 , 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒰𑒫 𑒮𑒳𑒞𑒻𑒩 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।"

𑒂𑒥 𑒍 𑒧𑒼𑒙𑒑𑒩 𑒕𑒛𑓃𑒲 𑒅𑒚𑒰𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂𑒍𑒩 𑒃𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒏𑒻𑒣𑒮 𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒏𑒻𑒿 𑒯𑒼𑒯𑒼𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒛𑒩𑒹 𑒔𑒯𑒳𑒿 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒦𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻।

"𑒩𑒴𑒏𑒼 𑒢𑒱𑒕𑒼𑒯 𑒍 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒪𑒣𑒏𑒪𑒏𑒢𑓂𑒯𑒱। "𑒩𑒴𑒏𑒼 𑒁𑒦𑒲 𑒥𑒞𑒰𑒞𑒹 𑒯𑒻। 𑒥𑒔𑒾𑒪𑒏𑒰 𑒖𑒰𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒦𑒰𑒑𑒪 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒥𑒰𑒯𑒩𑒱

𑒃𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒧𑒹 𑒦𑒢𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒦 𑒏𑒻𑒿 𑒪𑒹𑒙 𑒮𑒿 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒏𑒱𑒮 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒰𑒩𑒰 𑒔𑒜𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒨𑒞 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱, " 𑒂𑒮𑒳𑒞𑒼𑒭 𑒥𑒰𑒥𑒴 , 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒾 𑒁𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒦 𑒏𑒻𑒿𑒯𑒼𑒨𑒞 𑒕𑒻 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒦𑓃 𑒮 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒔𑒰𑒢 , 𑒐𑒳𑒩𑒣𑒲 𑒕𑒳𑒂 𑒥𑒻𑒢 𑒯𑒳𑒂 𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒖 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒞𑒰𑒮 । 𑒁𑒣𑒢𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒧𑒨 - 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒮𑒰 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒤𑒳𑒩𑒮𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒾। 𑒃𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒁𑒥𑒻 𑒏𑒻𑒿 𑒏𑒰𑒖 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻।"

𑒄 𑒩𑒼𑒖𑒏 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒩𑒴𑒙𑒱𑒢 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒢𑒖𑓃𑒩 𑒧𑒹 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒢𑒲𑒏 𑒕𑒟𑒱। 𑒁𑒾𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒢𑒲𑒏 𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒏𑒹𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒪𑒱𑒮𑓂𑒙 𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒖𑒻𑒞 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒣𑒲𑒚 𑒣𑒩𑒼𑒕 𑒖𑒹 𑒧𑒼𑒢 𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒖𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑒼𑒗𑒰 𑒧𑒹 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒏𑒻𑒿 𑒍 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒂𑒍𑒩 𑒦𑒰𑒃𑒖𑒲 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒐𑒢𑒹 𑒠𑒳𑒬𑒧𑒢 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒏𑒩𑒮 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒐𑒢𑒹 𑒮𑒦 𑒮𑒿 𑒧𑒲𑒚𑒑𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒲 𑒖𑒏𑒰𑒿।

એઠ એઠ વી આઓન એમ એસસી કેને છથિ ટીચન ટ્રેનિંગ કેઠ સઁ પહિ આ એયનસ્ઓન્સ મે ટ્રેનિંગ સઁ આવિ ગેઠ છઠથિન્હિ. તૈ અપના કેઁ આ સૌંઠી માનૈત છથિ મધુવની કોર્ટ મે કિછુ દિન પ્રેક્ટિસ કેને છથિ તૈ કાની કોટક દાવા કરૈત નહિ છથિ.

સ્કૂઠ મે માઁ સનસ્વતી કેઁ મંદિન છૈ । એક વનખ પૂળા એવં મેઠા ઠગૈત છૈ. દુ-જાવુચ ખૂવ છૈ. નકિઠે પ્રાન્ના કઠશ તીન દિન સ્કૂઠ પન નોમાંચ વનઠ નહિ છૈ. નીઠકંઠ છૈ. ઠગૈત પૂળા સનસ્વતી નામી મે વુઠાક વિનોઠ પૂને છૈ. હિયત આયોળન છૈ. ળાયત જનઠ કઠશ સઁ મે નહ્ન કમઠા કેઁ વાવા મહાદેવ

" હે હે હેડમાસ્ટન સાહવ ખૂવ નચઠાહ ડીળે કેઁ ગીત પનગાનદા ઉડા દેઠથિન્હિ. નાચિ કિસ । છૌડા સજ પીહકાની માનિ નહઠ છૈ. સજ હઁસિ નહઠ છૈ ।

કિછુ ઠોકનિ વુનછિયા કસ નહઠ છૈ. કિછુ ળનીળાનિ કિહૈત છૈ, "માનચકેહેન્ જ વુઢ઼ ચિપ્રિયુતા ળકાઁ નાચિ નહઠ છૈ. સનધુઆઠવડ઼ા માહ્ટનસ ગેઠે નાક ઠગાઠે છૈ"।

સ સજ જેઠાક વાદો હુનકા મોન મઠિન નહિ જેઠન્હિ ળે ઠોક કી કહિ નહઠ અછિ. અપને ચુને વનાહ. નમગન પ્રાન ઠગોટિયા કેઁ ળી ઠાઠૂ નમગાન જાપ્પા વળૈત છથિ- વળૈત -વળૈત છથિ પૈચ વહ્નન છુડ઼િ છિપ્પન મે ઠેવા ચુટકી છથિ નહઠ માનિ ડ કેઁ શંકનામાસ્સનિ અંશ્ચસચિઁત જેઠ નહૈત છથિ.વિવી નકિાઠિ કિસ મુઁહ મે ઢેન ઠેઠાથિ હઁસૈત છથિ તિઁ અગુઆ દાઁત કેઁ ગહ મે કાનીપ્પ ઠાગઠ વુહૈત છન્હિ.

ખિઠિવૈ પીઆવૈત ળૂન ચાહ ઠાઠ પન એઠા કનિકો પિઠિવૈ મે નામ કમૈત છથિ- નહિ. સાની હનિકન મે વેવહાન અસ છથિન્હિ.

આસ આ નટિયન જાસ ળેતાહ સ્કૂઠ કેઁ કાન્યાઠય સળઠ છૈ. વદિાઈ સમાનોહ જાસ નહઠ છૈ. હુનકા પાઁચ ટૂક કપડ઼ા પેહ્નીઠ ગેઠન્હિ પાગ પ્નનાની હેડમાસ્ટન

𑒮𑒰𑒯𑒥 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒧𑒰𑒟 𑒣𑒩 𑒮𑒖𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻𑒢𑓂𑒯। 𑒫𑒩𑒲𑒨 𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒥 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒏𑒢𑓂𑒯𑒰 𑒣𑒩 𑒮ॉ𑒪 𑒍𑒜𑓃𑒰 𑒏𑓄 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒢𑒧𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱।

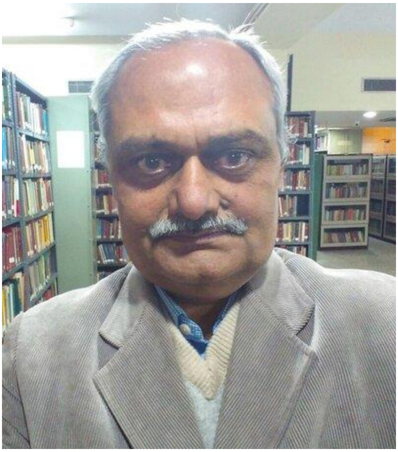
𑒂𑒥 𑒑𑒰𑒧 𑒣𑒩 𑒔𑒾𑒏𑒔𑒾𑒩𑒰𑒯 𑒣𑒩 𑒧𑒧𑒱𑒨𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।-
"𑒏𑒲 𑒯𑒾 𑒏𑒳𑒧𑒩, 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒁𑒨𑒪𑒯 ? " 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒣𑒴𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯।

"𑒠𑒳 𑒠𑒱𑒢 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒩𑒱𑒙𑒰𑒨𑒩 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧 𑒏𑒲 𑒩𑒱𑒙𑒰𑒨𑒩 𑒯𑒹𑒥𑒻। 𑒂𑒥 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒹 𑒩𑒱𑒙𑒰𑒨𑒩 𑒯𑒹𑒞𑒾।𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒏𑒻𑒿 𑒥𑒔𑒱𑒏𑒥𑒻𑒞 𑒯𑒹𑒛𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒥 𑒏𑒳𑒧𑒩𑒖𑒲 𑒮𑒿𑒮𑒏 𑒂𑒪𑒣 " 𑒅𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒯।

- 𑒮𑓀𑒞𑒼𑒭 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒩𑒰𑒨 ' 𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲' , 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒧𑓀𑒑𑒩𑒾𑒢𑒰 -

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒠𑒱𑒞𑒼𑒩𑒱𑒰𑒪𑒮𑒞𑒰𑒤𑓃𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒰०𑒑𑒧𑒰𑒪𑒱𑒨𑒼𑒧 **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓒𑓔.𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩- 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒂 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒠𑒰𑒩



𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩

𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒂 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒠𑒰𑒩

𑒂𑒃-𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱𑒏 𑒨𑒳𑒑𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒂𑒫𑒰𑒮 𑒥𑒠𑒪𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒥𑒠𑒪𑒲 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒣𑒰𑒩𑒲𑒮𑒦 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒯𑒩 𑒥𑒠𑒪𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒑𑒰𑒧-𑒒𑒩𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒪𑒑𑒰𑒣𑒰𑒮𑒏 𑒮𑒯𑒩𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒩 𑒥𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒰𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒮𑓀𑒣𑒠𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱𑒢 𑒮𑒹 𑒮𑒦 𑒏𑒻𑒏-𑒏𑒻𑒏𑒙𑒰 𑒒𑒩 𑒥𑒢𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

जाहि छैक कि स्थानीय घरक ओ की करताह, किराया लगेताह वा बंद रखताह। घरकेँ बंद रखबाक सेहो कोनो लाभकर समाधान नहि अछि, तथापि किछुगोटे किरायादारक संगे द्वन्द्वमे नहि पड़ए चाहैत छथि आ घरकेँ बहुत-बहुत दिन धरि खालीए छोड़ि दैत छथि। ई बात सही अछि जे कैक बेर किरायादारक संगे मकान खाली करेबाक हेतु, किंवा किराया वसूलीमे दिक्कति भए जाइत अछि मुदा तकर माने त ई नहि जे सदिखन सएह होइत रहत। फेर अहाँ जहन गाम-घर छोड़िकेए बाहर जाएब त किरायाक मकान चाहबे करी, अपन मकान कतए-कतए बनबैत रहब? किरायाक मकान भेटैत रहए आ दुनू पक्षकेँ ठीकसँ समय बितैत ताहि उद्येश्यसँ देशभरिमे किराया नियंत्रण कानून बनल अछि।

मकान मालिक आ किरायेदारक बीचमे समस्या बहुत पुरान अछि। समस्याक जड़िमे मकानक अभाव आ बढ़ैत किराया अछि। मकान मालिक चाहैत रहैत छथि जे हुनकर किराया बढ़ैत रहनि आ जखन ओ चाहथि मकान खाली भए जानि। कहक माने जे एहन नहि होइक जे किराएदार मकानपर अवैध कब्जा कए लेथि, किराया सेहो नहि देथि। मुदा किरायदारक समस्या सेहो मानवीय दृष्टिसँ देखब बहुत जरूरी अछि। मकान मालिक बेर-बेर जँ मकान खाली करबैत रहताह त ओकरा नाना प्रकारक समस्या होएब स्वभाविक। बच्चासभक स्कूल, अपन कार्यालय आ बढ़ैत खरचामे तालमेल बैसाएब मोसकिल भए जाइत अछि। कानून एहि समस्यासभकेँ समाधान करैत बीचक रस्ता निकालबाक प्रयास करैत अछि। मुदा कैक बेर ई संभव नहि भए पबैत अछि। दुनू पक्ष एक-दोसरसँ सामंजस्य नहि बैसा पबैत छथि आ मोकदमाबाजी धरि बात चलि जाइत अछि। जँ मकान मालिक दबंग अछि त जबरदस्ती सेहो करैत अछि। बदमासकेँ लगा कए किरायेदारक समान कैक बेर बाहर फेकि देल जाइत अछि।

𑒧𑒯𑒰𑒢𑒑𑒩 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒪𑒏𑒰𑒞𑒰, 𑒧𑒳𑒧𑓂𑒥𑒃, 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒯𑒰𑒪𑒞𑒱 𑒂𑒍𑒩 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒐𑒩𑒰𑒣 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒻𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒹𑒠𑒰𑒩 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒣𑒰𑒩𑒱𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒿𑒔-𑒠𑒮 𑒩𑒳𑒣𑒨𑒰 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒣𑒔𑒰𑒮𑒼 𑒮𑒰𑒪𑒮𑒿 𑒁𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒟𑒱, 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒏𑒰𑒢𑒏 𑒯𑒰𑒪𑒞𑒱 𑒖𑒩𑓂𑒖𑒩 𑒦𑒋 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒧𑒼𑒏𑒠𑒧𑒰 𑒚𑒼𑒏𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒻𑒿 𑒏𑒲? 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒹𑒠𑒰𑒩𑒮𑒦 𑒂𑒣𑒮𑒧𑒹 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢 𑒥𑒢𑒰 𑒏𑒋 𑒞𑒏𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒫𑒰𑒠 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑓀𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒾𑒿 𑒍 𑒧𑒏𑒰𑒢𑒮𑒦 𑒂𑒃-𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒣𑒩 𑒪𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒪𑒰𑒐𑒼𑒧𑒹 𑒦𑒋 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣, 𑒖𑒿 𑒏𑒢𑒰𑒙𑒣𑓂𑒪𑒹𑒮 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢 𑒮𑒰𑒥𑒱𑒏 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒣𑒩 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒍 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒞? 𑒖𑒿 𑒍 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒣𑒩 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒫𑒰 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢 𑒂𑒥 𑒪𑒹𑒥𑒋 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞, 𑒮𑒼𑒔𑒥𑒼 𑒧𑒼𑒮𑒏𑒱𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒢𑒼 𑒧𑒯𑒰𑒢𑒑𑒩𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒞𑒹𑒯𑒢𑒹 𑒯𑒰𑒪𑒞𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒮𑓂𑒞𑒳, 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏𑒮𑒦𑒏 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒐𑒱𑒩 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑓀𑒣𑒞𑓂𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒞𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒲𑒢𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒒𑒩𑒔𑒏𑓂𑒏𑒩𑒧𑒹 𑒑𑒧𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒋? 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒅𑒣𑒰𑒨 𑒏𑒲 𑒁𑒕𑒱?

𑒖𑒲𑒫𑒢𑒧𑒹 𑒦𑒼𑒖𑒢, 𑒫𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩, 𑒂𑒫𑒰𑒮 𑒧𑒾𑒪𑒱𑒏 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒦𑒼𑒖𑒢𑒫𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒩𑒯𑒋 𑒪𑒹𑒪 𑒒𑒩 𑒞𑒿 𑒔𑒰𑒯𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒲। 𑒪𑒼𑒏𑒼 𑒣𑒳𑒕𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒏𑒼𑒢 𑒑𑒰𑒧 𑒒𑒩 𑒦𑒹𑒪? 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒖𑒹 𑒒𑒩 𑒂𑒠𑒧𑒲𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒟𑒱𑒏। 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒲𑒝 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒹𑒬𑒧𑒹 𑒞𑒿 𑒁𑒐𑒢𑒼 𑒒𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒩 𑒥𑒴𑒗𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏 , 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒏 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒢𑒹 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒢𑒹 𑒪𑒼𑒏 𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒏-𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞 𑒑𑒳𑒖𑒩𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒋𑒏𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒪𑒼𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒦𑒩𑒱 𑒩𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒯𑒱𑒪𑒳𑒏𑒰 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒯𑒲 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒃-𑒪𑒱𑒐𑒰𑒃, 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲, 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒣𑒰𑒩 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒪𑒼𑒏 𑒑𑒰𑒧-𑒒𑒩𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒄 𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒢𑒯𑒱 𑒟𑒱𑒏 𑒖𑒹 𑒮𑒦 𑒮𑒯𑒩𑒧𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒩 𑒥𑒢𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒲। 𑒞𑒻𑒿 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒣𑒩 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒪𑒹𑒥 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒕𑒼𑒙 𑒮𑒯𑒩𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒏 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒂𑒮𑒰𑒢𑒲𑒮𑒿 𑒦𑒹𑒙𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒧 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒂 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒖𑒐𑒢-𑒞𑒐𑒢 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒋 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒻𑒒 𑒮𑒯𑒩𑒧𑒹 𑒐𑒰𑒮 𑒏𑒋 𑒧𑒯𑒰𑒢𑒑𑒩𑒧𑒹 𑒯𑒰𑒪𑒞𑒱 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒧𑓂𑒥𑒃𑒧𑒹 𑒞𑒿 𑒄 𑒯𑒰𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒋𑒏𑒯𑒱 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒏𑒯𑒳𑒢𑒰𑒏 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒣𑒩 𑒑𑒳𑒖𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒆𑒣𑒩𑒮𑒿 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒑𑒛𑓃𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒱𑒎𑒏, 𑒧𑒰𑒮𑒹-𑒧𑒰𑒮𑒹 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒞𑒿 𑒔𑒰𑒯𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒲। 𑒩𑒯𑒱-𑒩𑒯𑒱 𑒏𑒋 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒠𑒳𑒪𑒞𑓂𑒞𑒲 𑒧𑒰𑒩𑒞𑒱 𑒩𑒯𑒞, 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒄 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒰 𑒖𑒰𑒃 𑒖𑒹 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒣𑒩 𑒪𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒯𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒞। 𑒁𑒮𑓂𑒞𑒳, 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒹𑒠𑒰𑒩𑒏 𑒯𑒰𑒪𑒞𑒱 𑒏𑒻𑒏 𑒥𑒹𑒩 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰𑒖𑒢𑒏 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒰𑒢 𑒏𑒲 𑒁𑒕𑒱? 𑒮𑒦 𑒂𑒠𑒧𑒲 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒲𑒢𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒣𑒩 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒪𑒹𑒢𑒰𑒃 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒖𑒥𑒴𑒩𑒲 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒧𑒹 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼𑒥𑒹𑒩 𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨𑒰𑒪𑒨𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒣𑒩 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒞𑒧 𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒤𑒻𑒮𑒪𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒍𑒯𑒱𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩𑒼 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏 𑒁𑒕𑒱।

𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒂 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒠𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑓁 𑒠𑒴𑒃𑒋𑒙𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒪𑒹𑒪 𑒠𑓂𑒫𑓀𑒠𑓂𑒫 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏𑓁-𑓑𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒥𑒋 𑒯𑒹𑒞𑒳, 𑓒𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳। 𑒂𑒍𑒩 𑒕𑒼𑒙-𑒧𑒼𑒙 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰𑒮𑒦 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒋 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒧𑒏𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒩𑒧𑓂𑒧𑒞𑒱 𑒏𑒹𑒢𑒰𑒃, 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒥𑒏𑒱𑒎𑒞𑒰 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒢𑒰𑒃, 𑒂𑒠𑒱-𑒂𑒠𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒣𑒙𑒋 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑒏𑓂𑒭 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒣𑒩 𑒪𑒹𑒥𑒋- 𑒠𑒹𑒥𑒋𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒣𑒮𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒏 𑒋𑒏𑒩𑒰𑒩𑒢𑒰𑒧𑒰 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒖𑒾𑒿 𑒪𑒲𑒖𑒏 𑒁𑒫𑒡𑒱 𑒮𑒰𑒪𑒦𑒩𑒱𑒮𑒿 𑒏𑒧 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒍𑒏𑒩 𑒢𑒱𑒥𑒢𑓂𑒡𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒁𑒢𑓂𑒨𑒟𑒰 𑒋𑒏𑒩 𑒢𑒱𑒥𑒢𑓂𑒡𑒢 𑒮𑒥-𑒩𑒖𑒱𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒰𑒩𑒏 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒏𑒩𑒰𑒋𑒥 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢𑒲 𑒥𑒰𑒡𑓂𑒨𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒾𑒿 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒏 𑒋𑒏𑒩𑒰𑒩𑒢𑒰𑒧𑒰 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒪𑒲𑒖𑒏 𑒞𑒨 𑒁𑒫𑒡𑒱𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒏 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒏𑒰𑒢𑒏 𑒮𑒦 𑒫𑒱𑒭𑒨-𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳 𑒞𑒏𑒩 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒔𑒪𑒞 𑒔𑒰𑒯𑒹 𑒍 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒯𑒼𑒃𑒏, 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒯𑒼𑒃𑒏 𑒫𑒰 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒏 𑒦𑒳𑒑𑒞𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒥 𑒯𑒼𑒃𑒏। 𑒖𑒿 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒏 𑒋𑒏𑒩𑒰𑒩𑒢𑒰𑒧𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒏𑒱𑒫𑒰 𑒪𑒲𑒖𑒏 𑒁𑒫𑒡𑒱 𑒥𑒲𑒞𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒂 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒹𑒠𑒰𑒩𑒏

𑒥𑒲𑒔𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒲𑒨 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒥𑒢𑒰𑒍𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒢𑒱𑒨𑓀𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒠𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒯𑒼𑒋𑒞।

𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒹𑒠𑒰𑒩𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒄 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒍 𑒞𑒨 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒮𑒧𑒨𑒮𑒿 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒢𑒰𑒃𑒋 𑒁𑒣𑒢𑒰-𑒂𑒣𑒧𑒹 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒦𑒋 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒨𑒠𑒱 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒰𑒠𑒹𑒬𑒮𑒿 𑒣𑒚𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒨𑒠𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒢𑒱𑒨𑓀𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒂𑒫𑒹𑒠𑒢 𑒠𑒋 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒖𑒧𑒰 𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑓁 𑒋𑒯𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒞𑒐𑒢𑒹 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒐𑒢 𑒏𑒱 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒥𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒖𑒿 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒂 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒹𑒠𑒰𑒩𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒠 𑒂𑒣𑒮𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒼𑒗𑒩𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒧𑒹 𑒮𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒢𑒱𑒨𑓀𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒣𑒰𑒮 𑒂𑒫𑒹𑒠𑒢 𑒠𑒋 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣, 𑒖𑒿 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒥𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒞𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒠𑒻𑒞 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑓁 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒥, 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒧𑒏𑒰𑒢𑒏 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒦𑒋 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒿 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒹𑒠𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒕𑒢𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒏 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒍 𑒧𑒖𑒑𑒴𑒞 𑒂𑒡𑒰𑒩 𑒥𑒢𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒡𑒰𑒩𑒝𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒍𑒞𑒯𑒱 𑒁𑒩𑓂𑒖𑒲 𑒠𑒋 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒠𑒹𑒬 𑒦𑒩𑒱𑒧𑒹 𑒮𑒦 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒢𑒱𑒨𑓀𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢 𑒥𑒢𑒍𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒻𑒏𑒙𑒰 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢𑒏 𑒁𑒡𑒲𑒢 𑒂𑒥𑒋𑒥𑒪𑒰 𑒧𑒏𑒰𑒢𑒏 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰𑒏 𑒮𑒲𑒧𑒰 𑒞𑒨 𑒏𑒋𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑓀𑒑𑒯𑒱 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨 𑒫𑒰 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 , 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒲𑒨 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒏𑒰𑒢𑒮𑒦 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒯𑒱 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒻𑒏𑒙𑒰 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒢𑒫 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒱𑒞 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒏𑒱𑓀𑒫𑒰 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒩𑒞 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒯𑒱 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒏 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒧𑒩𑒴𑒣𑒞𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒏 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒄 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒑𑓂𑒩𑒰𑒯𑒲 𑒦𑒋 𑒮𑒏𑒋 𑒂 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒪𑒼𑒏

एकर सुविधा सरकारसँ भेट सकए, तहि हेतु १९९२मे संसद द्वारा आदर्श किराया नियन्त्रण कानून पास कएल गेल। एहिमे किरायेदारीक विकासपर मौजूदा प्रावधानमे सँ किछुकेँ संशोधित करबाक प्रस्ताव छल आओर किरायाक एकटा सीमा सेहो निर्धारित कएल गेल जाहिसँ बेसी लेलापर किराया नियन्त्रण लागू नहि होएत। तकरबाद दिल्लीमे ओहि आधारपर १९९७मे कानून बनबो कएल जे स्थानीय व्यापारी वर्गक विरोधक कारण लागू नहि कएल गेल।

मकान मालिकक आ किरायेदारक बीच संबंध मधुर रहए आ कोनो मतभेद भेलापर सुगमतासँ तकर समाधान भए जाए तहि हेतु ई आवश्यक अछि जे दुनू पक्ष मकानकेँ किरायादारी प्रारंभ हेबासँ पहिने स्पष्ट प्रावधानक संगे किरायाक लीज एग्रीमेन्ट(किरायाक एकरारनामा) उचित मूल्यक स्टांप पेपरपर हस्ताक्षरित करथि। ओहिमे सभ बात जेना किराया कतेक होएत, मकान कतेक दिन किरायापर रहत, मकानक मरम्मति केना की हएत, मकान कहिआ खाली करए पड़त, स्पष्टतासँ लिखल रहए। जौँ सालभरिसँ अधिक हेतु किरायापर मकान देल जाइत अछि तँ एकरारनामाक निबंधन सेहो कराएब जरूरी अछि। एहिसँ दुनू पक्षकेँ हितक समाधान भए जाइत अछि। अस्तु, मकान किराया लेबए वा देबएसँ पहिने उपरोक्त बातसभकेँ ध्यानमे राखैत कानून सम्मत किरायाक एकरारनामा बना लेबाक चाही आ तकर अनुबंधकेँ दुनू पक्षकेँ पालन करैत रहक चाही जाहिसँ सुख-शांति बनल रहए। ई सभ बात जँ ठीकसँ कएल गेल अछि तँ मकानकेँ किरायापर देबामे कोनो हर्जा नहि छैक।

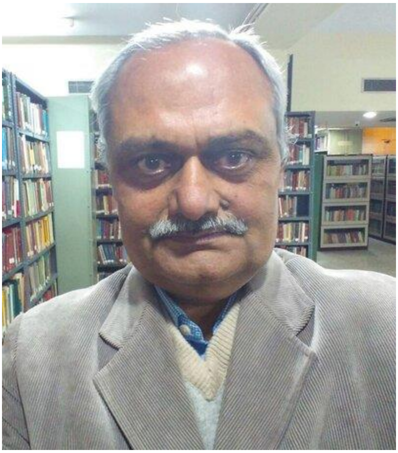
- रवीन्द्र नारायण मिश्र, मसिहारनगामाड़ियोम

- रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वएस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अड़ेर डीह, मातृक: सनिघाश्वि ड्योढ़ी, वृत्ति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट,

દિલ્લી(સેવાનિવૃત્ત), શિક્ષા: ચન્દ્રધારી મિથિલા મહાવિદ્યાલયસઁ બીએસ-સી ભૌતિકી વિજ્ઞાનમે પ્રતિષ્ઠા : દિલ્લી વિશ્વવિદ્યાલયસઁ વિધિ સ્નાતક, પ્રકાશિત કૃતિ: મૈથિલીમે: પ્રકાશન વર્ષ:૨૦૧૭ ૧ભોરસઁ સાઁઝ ધરિ (આત્મ કથા), ૨ પ્રસંગવશ (નિબંધ), ૩સ્વર્ગ એતહિ અછિ (યાત્રા પ્રસંગ); પ્રકાશન વર્ષ:૨૦૧૮ ૪ શુભાદ (કથા સંગ્રહ) ૫ નમસ્તસ્યૈ (ઉપન્યાસ) ૬ વિવિધ પ્રસંગ (નિબંધ) ૭મહાકાળ(ઉપન્યાસ) ૮ભલકોટર(ઉપન્યાસ); પ્રકાશન વર્ષ:૨૦૧૯ ૯સીમાક ઓહિ પાર(ઉપન્યાસ)૧૦સમાધાન(નિબંધ સંગ્રહ) ૧૧માતૃભૂમિ(ઉપન્યાસ) ૧૨સ્વપ્નલોક(ઉપન્યાસ); પ્રકાશન વર્ષ:૨૦૨૦ ૧૩શંખનાદ(ઉપન્યાસ) ૧૪રૂપએ થકિ જીવન(સંસ્મરણ)૧૫ઢહૈત દેવાલ(ઉપન્યાસ); પ્રકાશન વર્ષ:૨૦૨૧ ૧૬પાથેય(સંસ્મરણ) ૧૭હમ ઓતહિ રહલ છી(ઉપન્યાસ) ૧૮પ્રલયક પ્રાત(ઉપન્યાસ); પ્રકાશન વર્ષ:૨૦૨૨ ૧૯બીતલ ગેલ સમય(ઉપન્યાસ) ૨૦પ્રતિબિમ્બ(ઉપન્યાસ) ૨૧બદલ રહલ અછિ સમકછિ(ઉપન્યાસ) ૨૨રાષ્ટ્ર મંદિર(ઉપન્યાસ) ૨૩સંયોગ(કથા સંગ્રહ) ૨૪નાચ રહલ છલ વસુધા(ઉપન્યાસ) ૨૫દીપ જરૈત રહए (ઉપન્યાસ)।

અપન મંતવ્ય દતિોરાલિસતાડડવદિહાગ્ગામાલિયોમ **પર પઠાઉ।**

૨૫રવીન્દ્ર નારાયણ મિશ્ર- માતૃભૂમિ (ઉપન્યાસ)- ૨૪ મ ખેપ



<u>𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩</u>

<u>𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒴𑒧𑒱 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒫𑒰𑒯𑒱𑒏 -(𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮)</u>

२४

𑒑𑒼𑒫𑒱𑓀𑒠 𑒂 𑒧𑒰𑒡𑒫 𑒑𑒰𑒧 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒞𑒱𑒯𑒱 𑒚𑒲𑒏𑒪 𑒣𑒰𑒚𑒬𑒰𑒪𑒰 𑒪𑒑 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰𑒯।

"𑒋𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒿𑒔𑒪 𑒁𑒕𑒱?"

"𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒞𑒹𑒖𑒲𑒮𑒿 𑒄 𑒮𑒦 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒮𑒼𑒔𑒱 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒯𑒴𑒮𑒿 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨 𑒋𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒞𑒮𑒿 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝𑒫𑒰𑒩𑒱𑒙𑒼𑒪𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒮𑒦𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒔𑒳𑒣𑒔𑒰𑒣 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒋 𑒮𑒏𑒪। 𑒋𑒯𑒢 𑒞𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪 𑒄 𑒙𑒼𑒪। 𑒋𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒕𑒪 𑒖𑒐𑒢 𑒋𑒯𑒱 𑒙𑒼𑒪𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢𑒮𑒦 𑒦𑒩𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒖𑒞𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒴 𑒞𑒞𑒯𑒱 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒦𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒙𑒼𑒪𑒧𑒹 𑒂𑒃 𑒏𑒲 𑒯𑒰𑒪 𑒁𑒕𑒱? 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒱𑒞 𑒮𑓀𑒣𑒠𑒰 𑒕𑒪 𑒄 𑒣𑒰𑒚𑒬𑒰𑒪𑒰 , 𑒞𑒏𑒩𑒼 𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒋 𑒮𑒏𑒪𑒰𑒯।"

"𑒖𑒐𑒢 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒂𑒠𑒧𑒲 𑒬𑒞𑓂𑒩𑒳 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒏𑒩𑒞 𑒏𑒏𑒩𑒼

𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒧𑒼𑒮𑒏𑒱𑒪 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒏𑒩 𑒞𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒞𑒲𑒏 𑒫𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒰𑒯। 𑒏𑒯𑒰𑒿𑒠𑒢𑒱 𑒍 𑒫𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒯𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒏𑒩 𑒞𑒿 𑒖𑒹 𑒕𑒟𑒱 𑒮𑒹 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒴𑒗𑒪 𑒁𑒕𑒱 ।"

"𑒂𑒫 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒪 𑒖𑒰𑒋? 𑒋𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒞𑒿 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒏𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒫𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒞𑒹𑒖𑒲𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒖 𑒂𑒑𑒴 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒫𑒜𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪, 𑒮𑒹 𑒮𑒼𑒔𑒱 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨𑓃 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒑𑒹𑒪𑒰 𑒮𑒰𑒞 𑒠𑒱𑒢 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒞𑒫𑒹 𑒮𑒧𑒨𑓃𑒧𑒹 𑒧𑒏𑒰𑒢𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒂𑒑𑒴 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪।"

𑒍 𑒮𑒦 𑒂𑒣𑒮𑒧𑒹 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒏𑒱 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒏𑒩 𑒂𑒫𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒪𑒻𑒞 𑒮𑒦 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒪।

"𑒏𑒯𑒱𑒂 𑒑𑒰𑒧 𑒁𑒫𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪𑒯?"

"𑒂𑒫𑒱𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲?

"𑒍! 𑒯𑒧 𑒞𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒱𑒌𑒏 𑒖𑒹 𑒂𑒫 𑒞𑒴𑒿 𑒮𑒦 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲𑒡𑒰𑒧𑒹𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒫𑒯।"

"𑒫𑒲𑒔𑒹 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒫𑒰𑒣𑒮 𑒯𑒼𑒫𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒪।"

"𑒮𑒹 𑒏𑒱𑒌𑒏? 𑒑𑒰𑒧 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒦𑒰𑒑𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏 । 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲𑒡𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒱𑒞𑒯। 𑒚𑒲𑒏"𑒫𑒹𑒖𑒰𑒋 𑒫𑒳𑒗𑒱𑒞𑒯𑒏।-

"𑒮𑒼𑒔𑒢𑒹 𑒮𑒋𑒯 𑒩𑒯𑒱𑒌𑒏। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒯𑒰𑒿 𑒯𑒼𑒫𑒋 𑒠𑒹𑒪𑒱𑒌𑒏?"

"𑒥𑒹𑒮। 𑒯𑒧 𑒏𑒲 𑒏𑒹𑒪𑒱𑒁𑒯?"

"𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒄 𑒏𑒳𑒫𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒣𑒰𑒚𑒬𑒰𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒏𑒋 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒩 𑒫𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲। 𑒄 𑒞𑒿 𑒮𑒰𑒩𑓂𑒫𑒖𑒢𑒱𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒕𑒻𑒏। 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰 𑒕𑒻𑒏। 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒖𑒮𑒦𑒏 𑒏𑒲𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒕𑒪। 𑒋𑒢𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪।"

સુચાકર ઉઠૈતસબકેઁ ૨સાના કેઉથિ। ઓસબ ઉઠી બળૈત હિનિકાસબ દસિ વઢઉ। ઉઠૈત સબ ગોવિંદ આ માધવપર દનાદન પ્રહાર કરૈત ગેઉ। ઉઠીક પ્રહાર ઉગાતિહિ દુનૂગોટે ડામહિ પ્પિસઉાહ।

"કહૈત છઉથિહ ળે એહિ મામઉામે ટાંગ નહિ અડાવહ। મુદા તોરાસબકેઁ વહુત દાવી બાએ ગેઉ છહ। હમર આપસી મામઉા અછિ। ૬ ળગાહ સાર્વઽળનિક કોના બાએ ગેઉક? સબદિનિસઁ હમર પુરપ્પાક એહિપર અધિકાર રહઉ અછિ। હમર વાવૂક નામે રસીદ કટૈત છનિ। તૂઁ સબ તઁ ળવરદસ્તી પૈસાન છહ। આવો સમય છૈક। અપન કાળમે ઉાગા ળાહ, નહિ તઁ"।

દુનૂગોટે માર ઉાગાઉાસઁ કુહરા રહઉ છઉાહ। કી વળાતિથિ?

"હિનિકા દુનૂગોટેકેઁ ઘર ધરા પહુઁચા દહુન। આ હે! દવાઽક દોકાનવઉાસઁ મલહમ કીના દિઅહુન। ચોટસબ પર ઉાગૈત રહતાહ। સે વાળિ-" સુચાકર ળોરસઁ ડહાકા પાડઉનિ। ગોવિંદ આ માધવ વેસુધ રહથિ। પ્રતિકાર કરવાક સ્થિતિમે નહિ રહથિ। હુનકા ઉઠૈતસબ ડડાપુડાકએ ડાગરવાનાટોઉક - । પાકડ઼ીક ગાછતરમે ઓહિ હાઉમે રાપ્પિ દેઉક આ ચઉિ ગેઉ

- રવીન્દ્ર નારાયણ મિશ્ર પિતાક નામસ્વર્ગીય સૂર્ય નારાયણ મિશ્ર ; માતાક નામસ્વર્ગી :યા દયાકાશી દેવી વએસવર્ષ ૬૮ ; પૈતૃક ગ્રામ : ડીહ અડેર, માતૃકસનિધિયાઅ ડ્યોઢી ; વૃતિ ભારત સરકારક ઉપ સચિવ : (સેવાનિવૃત્ત), સ્પેશઉ મેટ્રોપોઉટિન મળિસ્ટ્રેટ, દિલ્લી(સેવાનિવૃત્ત), શક્ષિા-એસચન્દ્રધારી મિથિલા મહાવિદ્યાઉચસઁ વી : : ભૌતિક વિળ્ઞાનમે પ્રતિષ્ઠા સીદિલ્લી વિશ્વવિદ્યાઉચસઁ વિધિ સ્નાતક, પ્રકાશિત કૃતિ પ્રકાશન વર્ષ:૨૦૧૭ :મૈથિલીમે :ઓરસઁ સાઁઝ ધરિ આત્મ) (કથા, ૨(નિવિંધ) પ્રસંગવશ , ૩(યાત્રા પ્રસંગ) સ્વર્ગ એતહિ અછિ; પ્રકાશન વર્ષ:૨૦૧૮ ૪ ૬ (ઉપન્યાસ) નમસ્તસ્યૈ ૫ (કથા સંગ્રહ) ક્ષુસાદ (ઉપન્યાસ) ઉળકોટ૧૮ (ઉપન્યાસ) મહાળ૭ (નિવંધ) વિવિધ પ્રસંગ;

પ્૧કાશન વ઼્૧ષ:૨૦૧૯ ૯નવિ઼ય) સમાયા઼ન૧૦(ઉપન્ય઼ાસ) શ્રોહિ પા૧ સીમાક઼ (ઉપન્ય઼ાસ) સ્વ઼પ્નઊક઼૧૨ (ઉપન્ય઼ાસ) માΩ઼ૂમ઼િ૧૧ (સંગ્૧હ; પ્૧કાશન વ઼્૧ષ:૨૦૨૦ ૧૩૯હૈ઼૧૫(સંસ્મ૧૧ા) ૬૯૯ થકિ ળીવ઼ન઼૧૪ (ઉપન્ય઼ાસ) શંપ્પના઼દ (ઉપન્ય઼ાસ) દેવાઊ; પ્૧કાશન વ઼્૧ષ:૨૦૨૧ ૧૬ સંસ્મ) પાથેય઼૧ાહ્મ શ્રાવ઼ ૧૭ ((ઉપન્ય઼ાસ) પ્૧ઊય઼ક પ૧ા઼Ω૧૮ (ઉપન્ય઼ાસ) ૧૯ઊ છી; પ્૧કાશન વ઼્૧ષ:૨૦૨૨ ૧૯વદઊિ ૧૯ઊ શ્રછ઼િ ૨૧ (ઉપન્ય઼ાસ) પ્૧ાવિમ઼્િવ૨૦ (ઉપન્ય઼ાસ) વીΩ઼ીઊ સમય઼ (કથા સંગ્૧હ) સંય઼ોગ઼૨૩ (ઉપન્ય઼ાસ) ૧ાષ્ટ્૧ મંદ઼િ૨૨ (ઉપન્ય઼ાસ) સમ્રકછ઼િ (ઉપન્ય઼ાસ) દીપ ળ઼ૈΩ ૧૯઼૯૨૫ (ઉપન્ય઼ાસ) નાયિ ૧૯ઊ છઊિ વ઼સુય઼ા૨૪

શ્રપન મંΩવ઼્ય઼ દΩિ૧ાઊ઼િસΩાઙ઼ઙ઼વ઼દિ઼હ઼ા૦ગ઼માઊ઼િયોમ **પ૧ પઙ઼ાઉ।**

રદ્કુમાન મનોળ કશ્યપ- પ્નાનદિાન



કુમાન મનોળ કશ્યપ

૧ ટા ઙઘુકથા

પ્નાનદિાન

" ાોના ાીન- ાીન ટા સંાાન ઞાગવ઼ાન દેનહે હો઼ એકરે શ્રાઉન ઊ ઞાનાપિટ શ્રન્ન શ્રા દસઢ઼ કપડ઼ા ાસ ળુમાિ ને હ઼ૈ યાનમિ ઊ શ્રૌન કહઁા સે ળુમા ાૈ? વુયની! ઉપનવ઼ાઙા ળે કરૌ છથિન સે નીકે ઙાગો઼ શ્રપન વૌશ્રા કે ઞાગ મે નાળળોગ હૈ઼ નાળ કનાૈ઼ નાળ! શ્રપના શ્રાઉન ળડ઼ે નઈ હે ાઝસે કો઼ હૈ ાસ શ્રપને પૂના! શ્રપન ળનમઙ સુખ- યૈન સે નહો઼ ઉહે ને હન માઈ- વાપ યાહે હે! શ્રાન ળે હોઉ઼ વડ઼ ઞાગમાંા છૈ છૌડ઼ા઼ શ્રપનો નાળ ઞોગાા શ્રા હમનો શ્રાઉન કે દનાદ્ના મેટઙક઼ ! " મુસ્કયિ઼ાઈાા નમઙપ્પના નોટક ગાઙ્ડી સસ વુયની કે મુઁહ પન હાવ઼ા કનસ ઙાગૈ઼ શ્રાટઙ સમટાય઼ઙ કેથડ઼ી પન યાિ઼ા પડ઼ઙ

𑒥𑒳𑒔𑒢𑒲 𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒦𑒴𑒩 𑒥𑒰𑒙𑒹 𑒯𑒳𑒪𑒏𑒲 𑒠𑒻𑒞 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨𑒏 𑒩𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒏𑒹 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒫𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒋𑒏 𑒙𑒏𑓂𑒏 𑒞𑒏𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪।

𑒍𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒠𑒴𑒩 𑒬𑒯𑒩 𑒧𑒹 𑒏𑒞𑒯𑒳 𑒮𑒧𑒰𑒩𑒼𑒯 𑒧𑒢𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒪 𑒞𑒲𑒢 𑒙𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒠 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒖𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒻𑒪!

-**𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒢𑒼𑒖 𑒏𑒬𑓂𑒨𑒣, 𑒮𑒧𑓂𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑓁** 𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹 𑒅𑒣-𑒮𑒔𑒱𑒫, **𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏𑓁** 𑒮𑒲-११, 𑒙𑒰𑒫𑒩-४, 𑒙𑒰𑒃𑒣-५, 𑒏𑒱𑒠𑒫𑒄 𑒢𑒑𑒩 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 (𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲 𑒯𑒰𑒙 𑒏𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹), 𑒢𑒄 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲-११००२३ 𑒧𑒼 ९८१०८११८५०, ८१७८२१६२३८ 𑒄-𑒧𑒹𑒪: 𑒩𑒻𑒩𑒱𑒞𑒱𑒞𑒼𑒏𑒧𑒰𑒢𑒼𑒖०𑒑𑒧𑒰𑒱𑒨𑒼𑒧

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒠𑒱𑒞𑒼𑒩𑒰𑒱𑒖𑒰𑒛𑒛𑒫𑒠𑒱𑒯𑒰०𑒑𑒧𑒰𑒱𑒨𑒼𑒧 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

२.७ 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒝- 𑒁𑒑𑓂𑒢𑒱 𑒬𑒱𑒐𑒰 (𑒐𑒹𑒣-𑓑𑓖)



𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒝 (𑓑𑓙𑓖𑓐-), 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 - 𑒋𑒧𑓂 𑒋, 𑒢𑒻𑒯𑒩 - 𑒐𑒩𑒰𑒖𑒣𑒳𑒩, 𑒠𑒩𑒦𑒓𑓂𑒑𑒰, 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩 - 𑒑𑒼𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰𑒩𑒲 (𑒫𑒪𑒯𑒰), 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮 - 𑒩𑒰𑒿𑒔𑒲, 𑒗𑒰𑒩𑒐𑒝𑓂𑒛, 𑒗𑒰𑒩𑒐𑓀𑒛 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒋𑒫𑓀 𑒥𑒰𑒪 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑒳𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑 𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒪 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒣𑒩𑒱𑒨𑒼𑒖𑒢𑒰 𑒣𑒠𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒣𑒠 𑒮𑒿 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒅𑒣𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒮𑓂𑒫𑒞𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒪𑒹𑒐𑒢।
𑒧𑒴𑒪 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒲- 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒲𑒨 𑒖𑒱𑒞𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒏𑒩𑓂𑒝, 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠- 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒝

અગ્નિ શિખા (ભાગ - ૧૬)

પૂર્વ કથા:
ઉર્વશી રાજા પુરૂરવા કે મંગલ ટીકા લગા કસ દાનવ સસ યુદ્ધક વાસ્તે વિદા કરૈત છથિ લ એકર પશ્ચાત્ ઓ અચેત ભસ મૂર્છિત ભસ જાઇત છથિ લ રાજા પુરૂરવા ઉર્વશી કે પ્રતિ આકર્ષિત ભસ જાઇત છથિ લ
આબ આગૂ:
યુદ્ધક દુંદુભી બાજિ ઉઠલ લ ઓકર હૃદય-વિદારક ધ્વનિ પાતાલ લોક મેં અત્યંત તીવ્ર ગતિ સંસ પ્રવિષ્ટ ભસ ગેલ લ દેવતા કે દ્વારા કએલ આક્રમણક સમાચાર દાનવરાજ કેશી કે ભેટલ, મુદા ઓ ક્ષણ માત્ર કે લેલ વિચલિત અથવા ચિંતિત નહિ ભેલ લ કારણ એકર આશંકા સસ ઓ તસ ઓહિ દિનિ સંસ યુદ્ધક તૈયારી કરવા મેં લાગલ છલ જાહિ દિનિ ઇંદ્ર સઁગ પુરૂરવાક ભેંટ હોયવાક બાત ઓ સુનને છલ અપન દૂતક મુખ સંસ લ અપન દાનવ સેના કે શ્રેષ્ઠ યોદ્ધા સભ કે સઁગ સૈન્ય વ્યૂહ રચના કસ પાતાલ લોક સસ યુદ્ધક નિમિત્ત પ્રયાણ કેલક દાનવરાજ કેશી લ ઓકર હુંકાર સસ પૃથ્વી કાઁપસ લાગલ, દસો દિશા ત્રસ્ત ભસ ગેલ।
દેવતાક સૈન્ય-દલ કે મધ્ય આકાશ માર્ગ સસ પુષ્પક વૃષ્ટિ હોમય લાગલ લ ત્રિદિવક રથ આકાશ માર્ગ મેં સ્થિત છલ લ આશીર્વાદ સ્વરૂપ હુનક રથ સંસ ત્રિદિવ કે દ્વારા પુષ્પ-વૃષ્ટિ કએલ જા રહલ છલ। ઈ દેખિ દેવતાગણ મેં હર્ષ કે લહરિ પસરિ ગેલ, અત્યન્ત ઉત્સાહિત ભસ ગેલ છલાહ ઓ સભ લ કિછુ ક્ષણ ઉપરાન્ત આકાશ માર્ગ મેં હી દુનૂ પક્ષ મેં યુદ્ધ પ્રારમ્ભ ભેલ। સર્વપ્રથમ ઇંદ્ર અપન સૈનિક કે સઁગ દાનવ સેના સસ યુદ્ધ-રત ભેલાહ લ અસ્ત્ર-શસ્ત્ર કે સનસનાહટ-ઘનઘનાહટ વાતાવરણ મેં ગૂંજિ ઉઠલ લ શનૈ:-શનૈ: યુદ્ધ ભયાવહ ભેલ જા રહલ છલ લ દેવતા કે પક્ષક વીર સૈનિક યથાશાઈ ભેલ જા રહલ છલાહ લ યુદ્ધ મેં દાનવ પક્ષ કે બહુત કમ યોદ્ધા ઘાયલ અથવા મૃત ભેલ છલ લ દાનવ-ગણ મેં ઉત્સાહક તરંગ ઉમગલ છલ લ

इन्द्र के रथ टूटि गेलनि, ओ युद्ध क्षेत्र मे रथ सँ खसि पड़लथि, मुदा ओहि समय पुरूरवा आबि स्थिति के सम्हारि लेलथि। खसऽ सँ इन्द्र के ओ बचा लेलथि। आब इन्द्र विश्राम हेतु चलि गेलथि, आ सेना पुरूरवा के नेतृत्व मे युद्धरत भेल। देखितहि भरिमे दानव पक्षक वीर योद्धा धराशाई होमय लागल। स्थिति एकदम विपरीत भऽ गेल, आब देवतागण मे उत्साह उमगि पड़ल छल। दानव-गण धान-गहुमक बालि सन कटि-कटि कऽ खसल जा रहल छल। केशी के भौंह क्रोध सँ वक्र भऽ गेल। आब अपन सेना के नेतृत्व सम्हारऽ ओ स्वयं आबि गेल।

घमासान युद्ध होमय लागल, दुनू पक्षक वीर धराशाई होमय लागलाह। जखनि अस्त्र-शस्त्र के युद्ध मे दानव-पक्ष के अधिक वीर धराशाई होमय लागल, तखनि आसुरी माया के प्रपंच दानवराज केशी पसारनाई प्रारंभ केलक। आग्नेयास्त्र, सर्पास्त्र इत्यादि के प्रयोग होमय लागल। अंधकार ओ तीव्र प्रकाशक माया रचऽ लागल। एक सँ अनेक केशी दृष्टिगत होमय लागल। मुदा पुरूरवा वास्तविक केशी के चिन्हबा मे कनिको गलती नहि केलथि आ ओकरा कुशलता सँ चीन्हि कऽ अपन तीरक वर्षा करऽ लागलाह ओकरा ऊपर। ओ घायल भय खसि पड़ल। ओ आपस चलि गेल पाताल लोक विश्रामक वास्ते। आब दूसर-दूसर दानव सेनापति सबहक नेतृत्व मे युद्ध होमय लागल। ई युद्ध लगातार चारि दिन तक होइत रहल। मुदा आब दानव-गण मे उत्साहक क्षीणता आबि गेल छल दानवराज केशी के घायल भऽ युद्ध क्षेत्र सँ बाहर होयबाक कारण। ताहि पर राजा पुरूरवा के कुशल नेतृत्व मे अति विशिष्ट अस्त्र-शस्त्रक प्रहार के कारण एहि युद्ध मे दानव अत्यंत कमजोर पड़ि कऽ हारि गेल आ ओ सभ युद्ध क्षेत्र सँ पलायन करऽ लागल। दानव सैनिक गणक उत्साह समाप्त भऽ गेल छल। युद्ध समाप्त भेल, देवता विजयी भेलाह।

विजित देवगण मे हर्षक लहरि पसरि गेल। देवगणक जयघोष के नारा सँ दिग्दिगंत गूंजि उठल। देवगण के द्वारा इन्द्रक संग राजा पुरूरवा के जयघोषक नारा तीव्र स्वर मे बहुलता सँ लगाओल गेल। पुरूरवा के जय

ઘોષક ય્વની કે સંગ દેવગામ પ૧ પુનઃપુષ્પ-વ્ૃષ્ટિ ભેઉ ઉ હ્૧ષોઉઉસિત પુ૧૧વા ૨ન્દ્૧ એવં અન્ય દેવતા કે સંગ સ્વ૧્ગક દિશા મે આપસી ઊઉ પ્૧યાણ કસ ગેઉથિ ઉ

અમ૧ાવતી મે પ્૧વિષ્ટ હોઇતહિ માત્૧ દેવાંગના સભ પુષ્પ-વ્ૃષ્ટિ પ્૧ાંભ કસ દેઉતિ ઉ સમ્પૂ૧્ણ સ્વ૧્ગઊક આનંદ સાગ૧ મે સ૧ાવો૧ ભસ ગેઉ છઊ ઉ આઇ સ્વ૧્ગ ઊક મે પ૧મ આશ્ચ૧્ય કે વાત ભસ ૧હઉ છઉ કિ ઇન્દ્૧ કે સ્થાન પ૧ પુ૧૧વા કે ળય ઘોષક ય્વની ગુંળિત ભસ ૧હઉ છઉ ઉ એના વુહા૨ત છઉ ળેના સ્વ૧્ગ કા ૧ાળા ઇન્દ્૧ નહિ પુ૧૧વા હિ હોથિ ઉ

ળપ્પ૨ા સિસ દેવતાક વળિય ભેઉ દાનવ-ગામ પ૧, ઓહિ દિન સસ નિત્દિન કોનો ને કોનો ઉત્સવ મનાઓઉ ળા ૧હઉ અછિ સ્વ૧્ગ ઊક મે। પ્૧ત્યેક ઉત્સવ મે પુ૧૧વાક સમ્માન ભસ ૧હઉ અછિ ઉ આશ્ચ૧્ય તસ સભ કે એહિ વાતક હોઇત છનિ કિ ઇન્દ્૧ અપન પ્૧મુખ ગુણ ઇ૧્ષ્યા કે વિસાન્ યુક્ત છથિ ઉ ઓ તસ સ્વયં પુ૧૧વાક પ૧ાક્૧મ પ૧ મોહિત ભેઉ છથિ। ઓ હુનક સમક્ષ અપના કે અત્યંત તુચ્છ અનુભવ ક૧સ ઊગઉ છથિ ઉ હુનકા અનુભવ હોઇત છનિ ળેના કિ સ્વ૧્ગક સિંહાસન કે વાસ્તવિક અધિપતિ પુ૧૧વા હોથિ ઇન્દ્૧ નહિ! ઓ અપન મોન મે પુ૧૧વાક વિશિષ્ટ યોગ્યતા સ્વીકા૧ કસ ભેને છથિ।ઓ અપના કે પુ૧૧વાક સમક્ષ અત્યંત નિમ્ન સ્ત૧ પ૧ પાબિ ૧હઉ છથિ। પુ૧૧વા કે સમક્ષ ઓ માત્૧ એક સામાન્ય સૈનિક સન માનિ ૧હઉ છથિ અપના કે।
મુદા પુ૧૧વાક વિચા૧ ભિન્નહિ અછિ। ઓ વિળય કે૧ સમ્પૂ૧્ણ શ્રેય પુ૨ંદ૧ કે ઊપ૧ સમ૧્પિત કસ ૧હઉ છથિ ઉ ૧ાળા પુ૧૧વા કે હૃદય યા મષ્તિસ્ક કે ગ૧્વક લેશ માત્૧ સ્પ૧્શ તક નહિ કેઉક અછિ ઉ ઓ અપના કે સામાન્ય માનવ બુદ્ધિ ૧હઉ છથિ ઉ અપન એોક પ્૧શંસા સુનિ ઓ કનિકો ગ૧્વિત નહિ ભેઊથિ।
ઊકિન એક૧ અ૧્થ ઇ નહિ ળે ૧ાળા નિઃસ્પૃહ છથિ। ૧ાળા કે હૃદય મે

નિઃસ્પૃહિતા નહિ બિભૂષ ઉછાહ છલનિ - કામ્મ થકિોહ ઉ૧્વશી! ૧ાળા કે ઉછાહ છલનિ ઉ૧્વશી સઁસ પુનઃ ભેંટ હોયવાક! શ્રો ઉ૧્વશી ળે શ્રપ્૧તિમ સુંદ૧ી!શ્રપ્સ૧ાગામ્મ મે સ્૧્વાધિક સૌદ૧્યવતી સઁગ ગુમ્મવતી છથિ! એહિ કામ્મ તસ શ્રો પુરૂ૧વા કે હૃદય કે સમ્મોહિત કેને છથિ! પુરૂ૧વા મુગ્ધ છથિ હુનકા પ૧ ! પુરૂ૧વા! ળે પૃથ્વી પ૧ શ્રપના કે વ્૧ાહ્મય૧ાયન્વ કે મહાન પુળા૧ી વુહૈત છથિહ! સ્વ૧્ગ મે શ્રપન શ્રો વશિષ્ટ યન ગુમા યુક્ત છથિ! ઉ૧્વશી કે પ્૧ેમ મે વદિગ્ધ, વહ્વિલ પ્૧ેમી સમાન શ્રો તસ ઉ૧્વશી સઁસ મળિન કે૧ કોનહુના ઉપયુક્ત શ્રવસ૧ પ્૧ાપ્ત હોયવાક પ્૧યાસ મે છથિ!

મુદા પ્૧તિદિન કે વ્યસ્તતા મે શ્રો શ્રપના કે શ્રસહાય સન શ્રનુભવ કસ ૧હલ છથિ લ ઉ૧્વશી સઁસ કોના પુનઃ ભેંટ હોનિ શ્રો વૂહિ નહિ પાવિ ૧હલ છથિ લ ઉ૧્વશી સઁસ મળિન ક૧વા હેતુ હુનક હ્૧દય શ્રત્યંત વ્યગ્૧ છનિ લ

શ્રોમહ૧ ઉ૧્વશી કે મનો સ્થિતિ એહિ સઁસ કછિુ ભનિ્ન નહિ છનિ। હુનકો હ્૧દય મે પુરૂ૧વા વદ્યિમાન છથિ! ઉ૧્વશી કે હ્૧દય ૧મલ શ્રછિ પુરૂ૧વા મે! સ્વ૧્ગ મે શ્રાયોળિત કોનો ઉત્સવ મે શ્રો નહિ ળાઇત છથિ લ કતેકો નમિન્ત્૧ામ્મ કે શ્રો શ્રસ્વીકૃત કસ દેને છથિ લ પુરૂ૧વા સઁસ મળિન કે૧ શ્રવસ૧ક સંધાન મે સ્વયં ઉ૧્વશી શ્રત્યંત વ્યસ્ત છથિ। શ્રન્ય સમસ્ત કા૧્ય હુનકા સમક્ષ એહિ સમય ગૌમ્મ ભેલ છનિ।

વહુત સમય તક દાનવગામ્મ સઁસ ત્૧સ્ત શાસન વ્યવસ્થા કે વાદ પુનઃ નવીન ૧ૂપ મે સ્વ૧્ગક શાસન મે શ્રામૂલ પ૧િવ૧્તન ક૧વા હેતુ ઇન્દ્૧ શ્રપન સભા સભાસદ કે દ૧વા૧ મે શ્રામંત્૧િત કએને છથિ।દેવ૧્ષિ ના૧દ એહિ શ્રવસ૧ પ૧ વદ્યિમાન છથિ સ્વ૧્ગલોક મે। પુરૂ૧વા કે એહિ સભા કા૧્ય મે કનિકો ૧ુચિ નહિ છનિ, તથાપિ શ્રો શ્રન્યમનસ્ક ભાવ સઁસ વૈસલ છથિહ સભા મે લ

સપ્તઋષિ કે વચિા૧ છલનિ કિ સ્વ૧્ગ કે સંહિાસન પ૧ પુરૂ૧વા કે વૈસાશ્રોલ ળાએ, મુદા હુનક એહિ પ્૧સ્તાવ કે પુરૂ૧વા સ્વયં શ્રસ્વીકૃત કસ દેલનિ લ એહિ શ્રનુચિત પ્૧સ્તાવ સઁસ ઇન્દ્૧ શ્રત્યંત ભયભીત ભસ ગેલથિ, મુદા સપ્તઋષિ કે સમ્મુખ શ્રો કછિુ વાળિ નહિ સકલાહ લ એહિ સંવંધ મે સભા કેશ્રો વચિા૧ મગ્ન

छथि ओहि समय आकाशवाणी भेल -

"पुरूरवा के स्वर्गक अर्द्धशासक बनाओल जाए" - ई धीर गंभीर प्रवृत्ति वाणी भगवान विष्णु के छलन्हि। इन्द्र ई आकाशवाणी सुनि निराश भऽ गेलाह। सप्तऋषि के समर्थन एहि दिव्यवाणी सँ आर दृढ़ भेलैन्हि। इन्द्र के स्वर्ग मे अपन अर्द्धासन पुरूरवा को देमय पड़लन्हि। ओना त पुरूरवा के सहमति एकर पक्ष मे नहि छल, मुदा भगवान विष्णु के आदेशक अवहेलना केनाई पुरूरवाक वास्ते असंभव कार्य छल।
स्वर्ग मे पुरूरवा के राज्याभिषेक के विशाल आयोजन होमय लागल। सभासदगण मे अति प्रसन्नताक लहरि व्याप्त भेल। सब देवपुरुष देवांगना प्रसन्न छलथि, मुदा राजा के कोनो विशेष प्रसन्नता नहि भेलनि। ओ त उर्वशी के वियोग जनित पीड़ा सँ अपन हृदय मे उठि रहल दर्दक लहरि के सहन करबा मे असमर्थ भऽ रहल छलाह। हुनक हृदय मंदिर मे त एक अनिंद्य सुंदरी कोमलांगी देवी प्रतिष्ठित भय गेल छलीह। ओ छलीह त्रिलोकक सब सौंदर्यवती नारी मे सर्वश्रेष्ठ सौंदर्यवती अप्सरा उर्वशी ! हुनक हृदय त जेना काँच सूत सन बन्हायल हुनके दिस प्रेरित होइत छलन्हि। अनमनायल सन भाव सँ ओ सभा के कार्यकलाप के देखि रहल छलाह। सुरसरि के जल सँ हुनक अभिषेक भेलैन्हि, एवं राजमुकुट स्वर्गक परंपरानुसार हुनका धारण करय पड़लन्हि।

क्रमशः

अपन मंतव्य दितोरिअलस्ताफ्फविदेह@ग्मैलचोम **पर पठाउ।**

२८.जगदीश प्रसाद मण्डल-जिनगी भार बनि गेल



जगदीश प्रसाद मण्डल

जिनगी भार बनि गेल

नोकरीसँ निवृत्त भेला पश्चात हेमन्त कुमार गाममे रहैक विचार मनमे रोपि लेलैन। किछु छी तँ गाम-समाज गामक समाज छी। केतबो आस्ठद-आसमानी, बाढ़ि-रौदी किए ने भेल मुदा गामक समाज अपनो ओहने अछि जेहेन हजार बरख पूर्व छल। एकर माने ई नइ बुझब जे गाममे रोड-सड़क ओहिना अछि आ पोखरि-इनार ओहिना अछि जहिना हजार बरख पूर्व छल। एकर माने ई जे अपनो गामक किसान खेतीसँ जुड़ल छैथ, गाए-महींस पोसबसँ जुड़ल छैथ। ओना, किछु नव बेवसाय सेहो बढ़ल अछि आ किछु पुरान बेवसाय सेहो समाप्त भेबे कएल अछि। समयानुसार जीवन चलैए। जँ से नहि चलत तँ ओ नष्ट भऽ जाएत। जेना बैलगाड़ी, हाथी, घोड़ाक सवारी नष्ट भऽ गेल आ नव-नव इंजीन-चालित सवारी आबि गेल अछि।

गाममे रहैक विचार हेमन्त कुमारकेँ ई छेलैन जे सेवा निवृत्त होइसँ सात दिन पहिने धरि गामकेँ बिसरल छला। जहियासँ नोकरी शुरू केलैन तहियेसँ कहि कहब जे तहूसँ पहिनेसँ, मोटा-मोटी जन्मेसँ बुझू, किएक तँ पिता सरकारी नोकरी करै छेलैन, परिवार संगे रहै छला, कहियो काल माने सालमे

માસ દણિક છૂટ્ટી ભેલ, ગામમે વતિૈ છલ। વ્રહ એક માસક છૂટ્ટીક સમયક ગામ હેમન્ત કુમારક મનકેં પકૈડ઼ લેને છેલૈન। પકૈડ઼ ઈ લેને છલૈન જે શહર-બાજારક એહેન જીવન અછિ જે એક મકાનમે અનેકો પરિવાર રહૈ છૈથ, જનિકર જીવન શૈલી સેહો ભિન્ન છૈન। તૈસંગ શહર-બાજારમે કાજક વ્યસ્તતા સેહો બેસી રહૈત અછિ, જહિસઁ દોસરાસઁ સમ્બન્ધ બનૈમે કઠિન ભઽયે જાઇ। ગામક જીવન અપ્પન ઓહન અછિ જેકર સમ્બન્ધ-સૂત્ર અલ્પાંશે કટિ તે મુદા અપ્પનો જીવતિ અછિ જે જાતિ, પાઁજિ આ સમ્પ્રદાયસઁ ઊપર ઉઠલ અછિ। માને ઈ જે જેકરા સમાજમે તભિન બૂહે છથિ, તૂ પરિવારક વૃદ્ધજનકેં સમાજક આનો જાતિક વયસ્ક-જુઆન �બાબા�, �કાકા�, �ભૈયા� કહૈ છૈન આ ઓહો તહિરસઁ આદર સેહો કહૈત આવિ રહલ છૈન। એઠામ એકરા એક સામાજિક ધારાક પ્રવાહ કહિ સકૈ છથિ। મુદા એક જાતિકેં દોસર જાતિ બીચક કખિદારી કો કહબ જે જાતિ-જાતિક ભીતર કટુતા સેહો એતે દૂરી બનૌને અછિ જે સદિકાલ એક-દોસરકેં નચિયાઁ દેખૈએ। ખાએર જે અછિ, તહિસઁ હેમન્ત કુમારકેં કોન મતલબ છૈન, મતલબ છૈન અપન સેવા-નિવૃત્તિક પછાતિક શેષ જીવનસઁ।

સૂર્યાસ્તક સમય। તે સૂર્ય પૂર્ણરૂપેણ ડૂમલ છલ આ તે દણિક પ્રકાશ જકાઁ પ્રકાશતિ છલ। હેમન્ત કુમારકેં ઑફિસમે સૂચના ભેટ ગેલ છેલૈન જે એગાલ આઠમ દણિ અહાઁક ઑલ ઈ કાર્યાલય નહિ રહત। સાતમ દણિ સેવા-નિવૃત્તિક સૂચના ભેટ જાએત।

જહિના સામાન્યો લોક બુહૈએ જે સભ દણિ અહિના રહત। માને મૃત્યુ નહિ હેએત, તહિના અપ્પન તક હેમન્ત કુમાર સેહો બુહૈ છલ। તઁએ રામ નામક લૂટ અછિ, જેતે લૂટ લેત તેતે અપને સુખ હેએત। અપ્પન તક હેમન્ત કુમારકેં ગામ કહાઁ મોન છેલૈન, જઁ સે રહિતૈન તઁ દણિલમે ઘુલૈટ કટિ કનિતૈથ। પટનેમે મકાન કીનબાક કોન ખગતા છેલૈન। સરકારી ક્વાટરમે સભ દણિ રહલ। તખન મકાનક કોન ખગતા છેલૈન। ગામમે અપ્પનો બાબાક બનેલહા ઈંટા-ખપડ઼ાક ઘર છૈન।

દણિ ભરિક સૂર્યક કિરણ પેબ જહિના ઘૂલ ચકચકાઇત રહૈએ આ સૂર્યાસ્ત

હોસ્તે ળેના મઉપન પસન્દ ઉગૌ છૈ ˜તહિ્ના હેમન્ત કુમારકેઁ પાઁચ વળે શ્રપન કાર્યાલયસઁ નિકિઉઉા પઙ્કાસ્ત, જેઉેના મુદા, હાર સ્તરક શ્રશ્ક્સર ળહિ્ના શ્રપન સ્તરક મેનટેન કરૈ છૈથ તહિ્ના હેમન્ત કુમાર સેહો કેઉેના શ્રોના, ઑશ્ફિસિસઁ નિકિઉઉા પઙ્કાસ્ત, માને શ્રપન કાર્યાલયસઁ નિકિઉઉા પઙ્કાસ્ત, શેષ ળે દૂટા સ્ટાશ્ફ કાર્યાલયમે છૈન, શ્રો દુનૂ વુદ્દ ગેઉ છઉા ળે સાતમ દિન સાહેવ સેવા નિવૃત્ત જાડ યઉિ ળેતા એગાઉ શ્રશ્ક્સર કેહેન શ્રવૈ છૈથ સે દેખ્બા યાહી તૈ કાર્યાલયસઁ શ્રપ્પન ળે કોની સમ્વન્ધિત કાળ શ્રછિ શ્રો સજ કરા ઉેવ, જાવૃષિયક ઉઉ નીક રહત।

કાર્યાલયસઁ શ્રપન સેવા-નિવૃત્તિક સૂયના-પત્ર હાથમે જેને હેમન્ત કુમાર શ્રપન ડેરા પહુઁય ડ્રાસંગા નૂપક ટેવુઉપર રખ્ખૈના કપડ઼ા ખોઉિ, હાથ-પએર, મુઁહ-કાન ધોસ્કડ વૈસકમે વૈસવે કેઉાહ કિ પત્ની- રશ્મિ ળઉપાનક પ્લેટ શ્રાગૂમે રખ્ખિ, પુનઃ કયિન દિસિ વઢ઼િ ગેઉિ। શ્રપૂછ-વસ્તુક કયિન છેઉેન્હિ જાનિ મન હેમન્ત કુમાર ળઉપાન કરિ, યાહ પીવએ ઉગાઉા રશ્મિ સેહો યાહક કપ જેને શ્રાગૂમે વૈસ પીવએ ઉગાઉિ। તહિ વીય હેમન્ત કુમારકેઁ સેવા-નિવૃત્તિક યટ્ઠિપર નળૈર ગેઉેના શ્રોના, શ્રપનો શ્રપન શ્રાયુક હિસાવસઁ વુદ્દિ રહઉ છઉા ળે એો દિન નોકરી કેઉૈ। મુદા સે વસિર ગેઉ છઉા ળે શ્રાર પુનઃ યટ્ઠિ હાથમે એઉા પઙ્કાસ્ત મોન પડ઼ઉેના મોન પડ઼િતે યાહક યસ્કિમે ગતિરોધ શ્રાવએ ઉગાઉેના માને ળેના યાહ પીવૈ છઉા, તસ્મે ખ્બરોધ ઉત્પન્ન જેઉેના વાળઉ-

�સેવા નિવૃત્તિક યટ્ઠિ જેટ ગેઉા કાઉહિઁ સેવા-મુક્ત જાડ ળાએવ!�

વોઉ-જાનોસ દૈત રશ્મિ વિળઉિ-

�શ્રહીટા સેવા-નિવૃત્ત હએવ શ્રાકિ સજ હોસ્એ�

શ્રોના, હેમન્ત કુમાર શ્રપન ળીવનક યઢ઼ા-ઉતરી દેખ્બ રહઉ છઉા મુદા તેકરા છિપિવૈત વાળઉ-

�હઁ, સે તઁ સજ હોસ્તે શ્રછિ મુદા એો તઁ મનમે ખ્બુશી શ્રછિએ ળે વત્તીસ સાઉક નોકરીક ળીવન વેદાગ રહઉા�

રશ્મિક મનમે કિએ શ્રવતિન ળે ળીવન વદઉએ સજ કછિ઼ વદઉેએ શ્રા દોસર

ળીવ઼ન પદ્યનિ શૂન્ હોરુળ।

યાહ પીછાક પછારુન યટિ્ઠી પઢ઼િ હેમન્ન કુમાર પન્નીકેઁ કહછૈન-

�અપ્પન અહાઁ અપન કાળ દેખૂ, મન કછિુ ખરાપિ઼ાએઉ વુદ્દિ પિઙ઼ૈએ, નઁએ થોઙ઼ેકાઉ આરામ કરૂ।�

એક નઁ ઓહુના પઢ઼ઉ-ઉખિઉ ગુનશીઉ હોરુો છૈથ નૂમે ઉપર સ્નરક ળે મહિળા છૈથ ઓ નઁ આરો વેસી હોરુો છૈથ। ળહિના હેમન્ન કુમાર વળઉ નહિના રશ્મિ ઙારાંગા નૂમસઁ વહ્ના ગેઉ। સોશ્ચાપર ઓઙૈઙ, આઁખ્મિ મુરુન હેમન્ન કુમાર અપન ળીવ઼ન ગુનએ ઉગાઉ। ળીવ઼નક ઓરુ મોઙ઼પર આરુ આવિ ગેઉ છી, ળૈઙામસઁ એક ળીવ઼ન વદૈઉ દોસર ળીવ઼નક સમિાનમે પએર રાખ્ખ। અપ્પન નકક અપન ળીવ઼ન પ઼એહ ને રહઉ ળે પનિાળીકેઁ નીક નોકરી છેઉૈન, ખરપૂર કમારુ છેઉૈન, પરિવ઼ારક સંગ યાનૂ ખાઁરુક ખરાભ-પોષાભક આ નીક શકિ્ષા-દીક્ષા સેહો ખેટઉ, ળરુસઁ નીક-નીક નોકરી યાનૂ ખાઁરુકેઁ અછિ મુદા યાનૂ ખાઁરુક વીય અપન ળીવ઼ન ગેખ્મા કી અછિ, નહિ વીય ને આગૂક ળીવ઼ન નિર્યારનિ કરવ। અપન નઁ પ઼એહ ને અછિ ળે માના-પનિા મરિ ગેઉ। વીયમે અપને દુનૂ પરાની છી। માને પન-પન્ની, નૈવીય દૂટા વેટી અછિ ઓ દુનૂ ઙૉક્ટરી શકિ્ષા પૌનહિ અછિ દુનૂ અપ્પન-અપ્પન સાસુર વાસ કરૈએ।

રાનકિ નઅ વાળિ ગેઉ નેસર સૌઁહક સીમા સેહો ટપિ ગેઉ મુદા આઁખ્મિ વિન્ન કેને કુરસીપર ઓઙઙઉ હેમન્ન કુમાર કાઉહુક ળીવ઼ન ઉ નશિ્ચયપ઼ાન્મક વ઼િયાર નહિ કઙ સકઉ છઉ। નશિ્ચયપ઼ાન્મક વ઼િયાર કરૂપ઼ો કેના સકનિથ। કએિક નઁ દૂ ળીવ઼નક વીય વ઼િયાર શૂઁસઉ છેઉૈન। એક ળીવ઼ન ઓ છેઉૈન ળે સરકારક હાઈ સ્નરક અછિ આ દોસર સામાળકિ ળીવ઼ન છેઉૈન। વેવ઼હાર નૂપમે સરકારી છેઉૈન આ વ઼િયાર નૂપમે સામાળકિ છેઉૈન, ળરુ વીય અપન શેષ ળીવ઼ન વનિાએવ છૈન।

નરુ વયિ્યેમે રશ્મિ ઙારાંગા નૂમમે આવિ કહઉકૈન- �અહોંટા સેવ઼ા નવિ઼ૃન્ન ખેઉૌ હેન આકિ સિખ હોરુએ, નરુઉ અનેરુ કએિ એો મથહાનિ કેને છી।�

પન્નીક વ઼િયાર સુનિ હેમન્ન કુમાર વળઉ- �પ઼એહ નરુ નપ઼ કઙ પાવિ રહઉ છી ળે આગૂક ળનિગી કેના આ કેના વનિાએવ?�

𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒞𑒱𑒏 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒐𑓂𑒨𑒰𑒩𑒱𑒮 𑒩𑒬𑓂𑒧𑒱 𑒥𑒖𑒪𑒲-
�𑒋𑒙𑒰𑒧 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒩𑒯𑒥। 𑒁𑒣𑒢 𑒞𑒿 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒿𑒋 𑒢𑒲𑒏 𑒯𑒋𑒞 𑒖𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒹 𑒔𑒪𑒲।�
𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒨𑒰𑒢 𑒯𑒹𑒧𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒏 𑒯𑒵𑒠𑒨𑒧𑒹 𑒢𑒲𑒏 𑒑𑒛𑓃𑒰𑒢 𑒑𑒛𑓃𑒪𑒻𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒐𑒢 𑒞𑒏 𑒖𑒹 𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒕𑒪𑒻𑒢, 𑒍 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒱𑒐 𑒣𑒹𑒥 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒞𑒹 𑒞𑒿 𑒧𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞-𑒠𑒩-𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞 𑒪𑒼𑒏 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒡𑒩𑒞𑒲𑒣𑒩 𑒥𑒞𑒱𑒥𑒻𑒞 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒢𑒏 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒮𑒦 𑒥𑒨𑒰𑒢 𑒞𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢, 𑒂 𑒋𑒏𑒰𑒋𑒏 𑒧𑒳𑒯𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒩𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢-
�𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒥।�
𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒮𑒹𑒫𑒰-𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒖𑒹 𑒪𑒹𑒢-𑒠𑒹𑒢 𑒕𑒪𑒻𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒖𑒹 𑒥𑒿𑒙𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒢, 𑒖𑒹 𑒥𑒻𑒏𑒧𑒹 𑒕𑒪𑒻𑒢, 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒧𑒱𑒪𑒰𑒏𑒽 𑒖𑒐𑒢 𑒯𑒹𑒧𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒰 𑒞𑒿 𑒧𑒢 𑒏𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻𑒢 𑒬𑒹𑒭 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒹 𑒏𑒹𑒞𑒹𑒙𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒁𑒮𑒼𑒏𑒩𑓂𑒖 𑒯𑒋𑒞। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒁𑒦𑒰𑒫 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒯𑒋𑒞, 𑒞𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒣𑒹𑒢𑓂𑒬𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒧𑒰𑒮𑒹-𑒧𑒰𑒮 𑒦𑒹𑒙𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒞। 𑒏𑒯𑒱 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒁𑒥𑒱𑒞𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒖𑒢𑓂𑒧𑒏 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒠𑒹𑒐-𑒩𑒹𑒐 𑒖𑒿 𑒧𑒰𑒋-𑒥𑒰𑒣 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒟 𑒞𑒿 𑒍 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒡𑒩𑒞𑒲𑒣𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒙𑒱𑒏𑒱 (𑒖𑒲𑒥) 𑒣𑒾𑒞, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒫𑒵𑒠𑓂𑒡𑒰𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒏 𑒁𑓀𑒑-𑒣𑓂𑒩𑒞𑓂𑒨𑓀𑒑 𑒬𑒱𑒟𑒱𑒪 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒥𑒩-𑒥𑒹𑒧𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒂𑒏𑓂𑒩𑒧𑒝 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒹 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒃𑒪𑒹 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒏 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒞 𑒣𑒛𑓃𑒱𑒞𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒒𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒖𑒿 𑒩𑒯𑒪 𑒞𑒿 𑒥𑒹𑒙𑒰-𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳, 𑒣𑒼𑒞𑒰-𑒣𑒼𑒞𑒲 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒋 𑒂 𑒖𑒿 𑒮𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒞𑒿 𑒢𑒼𑒏𑒩-𑒔𑒰𑒏𑒩𑒏 𑒥𑒹𑒿𑒩 𑒔𑒪𑒻𑒋।
𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒮𑒒𑒢 𑒥𑒢𑒧𑒹 𑒯𑒹𑒧𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒢 𑒓𑒞𑒹 𑒔𑒏𑓂𑒏𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒑𑒰 𑒮𑒏𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹𑒞𑒹 𑒔𑒏𑓂𑒏𑒩 𑒪𑒑𑒥𑒻𑒏 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒞 𑒕𑒪𑒻𑒢। 𑒯𑒹𑒧𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒥𑒖𑒪𑒰-
�𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒮𑒼𑒔𑒱 𑒪𑒹𑒥। 𑒔𑒪𑒴 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒥।�
𑒩𑒬𑓂𑒧𑒱 𑒥𑒖𑒪𑒲- �𑒂𑒗𑒳𑒏𑒹 𑒮𑒼𑒔𑒪-𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒪 𑒮𑒿 𑒢𑒹 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒞।�
𑒯𑒹𑒧𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒥𑒖𑒪𑒰- �𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒥। 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒯𑒼𑒟𑒳 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒻𑒢𑒲 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒞𑒿 𑒕𑒱𑒨𑒰𑒯𑒹।�
𑒑𑒰𑒧 𑒂𑒥𑒱, 𑒕𑒁 𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒯𑒹𑒧𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒯𑒻𑒏 𑒍𑒯𑒢 𑒮𑒦 𑒥𑒹𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰,

માને સુવિધિપૂર્ણ ળીવન ચઉેઉ, ક્ડ ઉેઉેના ળરસઁ મન માર્ગિ ગેઉેન ળે શાન્તિપૂર્ણ ઢંગાસઁ શેષ ળીવન વિતા ઉેવ।

આર તેસર દિનિ, માને અપ્પન તક હેમન્ત કુમાર ઘર-આઁગન, દુઆર-દરવળ્ળા વનવૈક પાછૂ ઉગઉ છઉા તેઁ ગામ દસિ કોનો યિયાને ને છેઉેન, દૂન પરાની દરવળ્ળાક ઓસારપર વૈસઉ ગામ દસિ દેપ્પ રહઉ છઉા। રશ્મિ વળઉી-

�અપ્પન તકક વોતઉ ળીવન કો રહઉ આ અવૈવઉા જાવષ્યિક ળીવન કેહેન હએત?�

નિવૃત્ઉક વઉ ળહિના આત્મારામ હોરએ તહિના હેમન્ત કુમાર આત્મવઉક સંગ વળઉા-

�ળનિગી તઁ જાર વનયિઁ રહઉ અછિ, મુદા આઁપ્પિ તઁ તકૈ છી।�

- ળગદીશ પ્રસાદ મણ્ડઉળીક ળન્મ મુયવની ળઉાક વેરમા ગામમે ૫ ળુઉાઈ ૧૯૪૭ ઇસ્વીમે ભેઉેના મણ્ડઉળી હિન્દી એવં રાળનીતિ શાસ્ત્રમે એમ.એક. અહ્રતા પાવિ ળીવિકોપાર્ળન હેતુ ક્ૃષિ કાર્યમે સંઉગ્ન ભઽ રુચિપૂર્વક સમાળ સેવામે ઉાગિ ગેઉા। સમાળમે વ્યાપ્ત રૂઢિવાદી એવં સામન્તી વ્યવહાર સામાળિક વિકાસમે હનિકા વાયક વુઈ પડૈઉેના ઃઉત: ળમીન્દાર, સામન્તક સંગ ગામમે પ્રરળોર ઉડાઇ ડાઢ ભઽ ગેઉેના ઃઉત: મણ્ડઉળી અપન ળીવનક અધિકાંશ સમય કેસ-મોકદમા, ળહઉ યાત્રાદિમે વ્યતીત કેઉાહ ૨૦૦૧ ઇસ્વીક પછાશ્ત સાહિત્ય ઉેપ્પન-ક્ષેત્રમે એઉા। ૨૦૦૮ ઇસ્વીસઁ વિભિન્નિ પત્ર-પત્રિકાદિમે હનિક રચના પ્રકાશિત ભઅ ઉગઉેના ગીત, કાવ્ય, નાટક, એકાંકી, કથા, ઉપન્યાસ ઇત્યાદિ સાહિત્યિક મૌઉકિ વિધામે હનિક અનવરત ઉેપ્પન અદ્વિતીય સિદ્ધિ ભઽ રહઉેન અછિ। અપ્પન ધરિ દિર્ળન ભરિ નાટકએકાંકી, પાઁચ સાએસઁ ઊપર ગીતકાવ્ય, ઉનૈસ ગોટ ઉપન્યાસ આ સાઢે આઠસાએ કથા-કહાનીક સંગ કિછુ મહત્વપૂર્ણ વિષયક શોધઉેપ્પ આદિક પુસ્તકાકાર, સાએસઁ ઊપર ગ્રન્થમે પ્રકાશિત છૈના

મથિઉા-મૈથિઉીક વિકાસમે શ્રી ળગદીશ પ્રસાદ મણ્ડઉળીક યોગદાન અવિસ્મરણીય છૈના ઈ અપન સતત ક્રિયાશીઉતા આ રચના ધર્મિતાક ઉઉ

𑂫𑂱𑂦𑂱𑂢𑂹𑂢 𑂮𑂁𑂮𑂹𑂟𑂰𑂮𑂦𑂍 𑂠𑂹𑂫𑂰𑂩𑂰 𑂮𑂧𑂹𑂧𑂰𑂢𑂱𑂞𑂣𑂳𑂩𑂮𑂹𑂍ृ𑂞 𑂯𑂷𑂅𑂞 𑂩𑂯𑂪𑂰 𑂃𑂓𑂱, 𑂨𑂟𑂰- 𑂫𑂱𑂠𑂵𑂯 𑂮𑂧𑂹𑂣𑂰𑂠𑂍 𑂧𑂝𑂹𑂙𑂪 𑂠𑂹𑂫𑂰𑂩𑂰 𑂏𑂰𑂧𑂍 𑂔𑂱𑂢𑂏𑂲' 𑂪𑂐𑂳 𑂍𑂟𑂰 𑂮𑂁𑂏𑂹𑂩𑂯 𑂪𑂵𑂪 ' 𑂫𑂱𑂠𑂵𑂯 𑂮𑂧𑂹𑂧𑂰𑂢- २०११ , ' 𑂏𑂰𑂧𑂍 𑂔𑂱𑂢𑂏𑂲 𑂫 𑂮𑂧𑂏𑂹𑂩 𑂨𑂷𑂏𑂠𑂰𑂢 𑂯𑂵𑂞𑂳 𑂮𑂰𑂯𑂱𑂞𑂹𑂨 𑂃𑂍𑂰𑂠𑂵𑂧𑂲 𑂠𑂹𑂫𑂰𑂩𑂰- ' 𑂗𑂶𑂏𑂷𑂩 𑂪𑂱𑂗𑂱𑂩𑂵𑂒𑂩 𑂉𑂫𑂰𑂩𑂹𑂙- २०११ , 𑂧𑂱𑂟𑂱𑂪𑂰 𑂧𑂶𑂟𑂱𑂪𑂲𑂍 𑂇𑂢𑂹𑂢𑂨𑂢 𑂪𑂵𑂪 𑂮𑂰𑂍𑂹𑂭𑂩 𑂠𑂩𑂦𑂁𑂏𑂰 𑂠𑂹𑂫𑂰𑂩𑂰- ' 𑂫𑂶𑂠𑂵𑂯 𑂮𑂧𑂹𑂧𑂰𑂢- २०१२ , 𑂫𑂱𑂠𑂵𑂯 𑂮𑂧𑂹𑂣𑂰𑂠𑂍 𑂧𑂝𑂹𑂙𑂪 𑂠𑂹𑂫𑂰𑂩𑂰 ' 𑂢𑂶 𑂡𑂰𑂩𑂶𑂉' 𑂇𑂣𑂢𑂹𑂨𑂰𑂮 𑂪𑂵𑂪 ' 𑂫𑂱𑂠𑂵𑂯 𑂥𑂰𑂪 𑂮𑂰𑂯𑂱𑂞𑂹𑂨 𑂣𑂳𑂩𑂮𑂹𑂍𑂰𑂩- २०१४ , 𑂮𑂰𑂯𑂱𑂞𑂹𑂨𑂧𑂵 𑂮𑂧𑂏𑂹𑂩 𑂨𑂷𑂠𑂰𑂢 𑂪𑂵𑂪 𑂉𑂮𑂉𑂢𑂉𑂮 𑂏𑂹𑂪𑂷𑂥𑂪 𑂮𑂵𑂧𑂱𑂢𑂩𑂲 𑂠𑂹𑂫𑂰𑂩𑂰 ' 𑂍𑂸𑂬𑂱𑂍𑂲 𑂮𑂰𑂯𑂱𑂞𑂹𑂨 𑂮𑂧𑂹𑂧𑂰𑂢- २०१५' , 𑂧𑂱𑂟𑂱𑂪𑂰-𑂧𑂶𑂟𑂱𑂪𑂲𑂍 𑂫𑂱𑂍𑂰𑂮 𑂪𑂵𑂪 𑂮𑂞𑂞 𑂍𑂹𑂩𑂱𑂨𑂰𑂬𑂲𑂪 𑂩𑂯𑂫𑂰𑂍 𑂯𑂵𑂞𑂳 𑂃𑂎𑂱𑂪 𑂦𑂰𑂩𑂞𑂲𑂨 𑂧𑂱𑂟𑂱𑂪𑂰 𑂮𑂁𑂐 𑂠𑂹𑂫𑂰𑂩𑂰- ' 𑂫𑂶𑂠𑂹𑂨𑂢𑂰𑂟 𑂧𑂱𑂬𑂹𑂩 ' 𑂨𑂰𑂞𑂹𑂩𑂲' 𑂮𑂧𑂹𑂧𑂰𑂢- २०१६', 𑂩𑂒𑂢𑂰 𑂡𑂩𑂹𑂧𑂱𑂞𑂰𑂍 𑂍𑂹𑂭𑂵𑂞𑂹𑂩𑂧𑂵 𑂃𑂧𑂴𑂪𑂹𑂨 𑂨𑂷𑂏𑂠𑂰𑂢 𑂯𑂵𑂞𑂳 𑂔𑂹𑂨𑂷𑂞𑂹𑂮𑂢𑂰-𑂧𑂝𑂹𑂙𑂪 𑂠𑂹𑂫𑂰𑂩𑂰- ' 𑂍𑂸𑂧𑂳𑂠𑂲 𑂮𑂧𑂹𑂧𑂰𑂢- २०१७' , 𑂧𑂱𑂟𑂱𑂪𑂰-𑂧𑂶𑂟𑂱𑂪𑂲𑂍 𑂮𑂁𑂏 𑂃𑂢𑂹𑂨 𑂇𑂞𑂹𑂍ृ𑂭𑂹𑂗 𑂮𑂵𑂫𑂰 𑂪𑂵𑂪 𑂃𑂎𑂱𑂪 𑂦𑂰𑂩𑂞𑂲𑂨 𑂧𑂱𑂟𑂱𑂪𑂰 𑂮𑂁𑂐 𑂠𑂹𑂫𑂰𑂩𑂰 ' 𑂮𑂹𑂫. 𑂥𑂰𑂥𑂴 𑂮𑂰𑂯𑂵𑂥 𑂒𑂸𑂡𑂩𑂲 𑂮𑂧𑂹𑂧𑂰𑂢- २०१८' , 𑂒𑂵𑂞𑂢𑂰 𑂮𑂧𑂱𑂞𑂱, 𑂣𑂗𑂢𑂰𑂍 𑂣𑂹𑂩𑂮𑂱𑂠𑂹𑂡 ' 𑂨𑂰𑂞𑂹𑂩𑂲 𑂒𑂵𑂞𑂢𑂰 𑂣𑂳𑂩𑂮𑂹𑂍𑂰𑂩- २०२०' , 𑂧𑂶𑂟𑂱𑂪𑂲 𑂮𑂰𑂯𑂱𑂞𑂹𑂨𑂍 𑂃𑂯𑂩𑂹𑂢𑂱𑂬 𑂮𑂵𑂫𑂰 𑂄 𑂮ृ𑂔𑂢 𑂯𑂵𑂞𑂳 𑂧𑂱𑂟𑂱𑂪𑂰 𑂮𑂰𑂁𑂮𑂹𑂍ृ𑂞𑂱𑂍 𑂮𑂧𑂢𑂹𑂫𑂨 𑂮𑂧𑂱𑂞𑂱, 𑂏𑂳𑂫𑂰𑂯𑂰𑂗𑂲-𑂃𑂮𑂧 𑂠𑂹𑂫𑂰𑂩𑂰 ' 𑂩𑂰𑂔𑂍𑂧𑂪 𑂒𑂸𑂡𑂩𑂲 𑂮𑂰𑂯𑂱𑂞𑂹𑂨 𑂮𑂧𑂹𑂧𑂰𑂢- २०२०' , 𑂦𑂰𑂩𑂞 𑂮𑂩𑂍𑂰𑂩 𑂠𑂹𑂫𑂰𑂩𑂰 ' 𑂮𑂰𑂯𑂱𑂞𑂹𑂨 𑂃𑂍𑂰𑂠𑂵𑂧𑂲 𑂣𑂳𑂩𑂮𑂹𑂍𑂰𑂩- २०२१ 𑂞𑂟𑂰 𑂮𑂰𑂯𑂱𑂞𑂹𑂨 𑂄 𑂮𑂁𑂮𑂹𑂍ृ𑂞𑂱𑂧𑂵 𑂧𑂯𑂞𑂹𑂫𑂣𑂴𑂩𑂹𑂝 𑂃𑂫𑂠𑂰𑂢 𑂪𑂵𑂪 𑂃𑂧𑂩 𑂬𑂯𑂲𑂠 𑂩𑂰𑂧𑂤𑂪 𑂧𑂁𑂙𑂪 𑂫𑂱𑂒𑂰𑂩 𑂧𑂁𑂒 𑂠𑂹𑂫𑂰𑂩𑂰 ' 𑂃𑂧𑂩 𑂬𑂯𑂲𑂠 𑂩𑂰𑂧𑂤𑂪 𑂧𑂁𑂙𑂪 𑂩𑂰𑂭𑂹𑂗𑂹𑂩𑂲𑂨 𑂣𑂳𑂩𑂮𑂹𑂍𑂰𑂩- २०२२'

𑂩𑂒𑂢𑂰 𑂮𑂁𑂮𑂰𑂩 : १ 𑂅𑂢𑂹𑂠𑂹𑂩𑂡𑂢𑂳𑂭𑂲 𑂃𑂍𑂰𑂮, २ 𑂩𑂰𑂞𑂱-𑂠𑂱𑂢, ३ 𑂞𑂲𑂢 𑂔𑂵𑂘 𑂉𑂏𑂰𑂩𑂯𑂧 𑂧𑂰𑂐, ४ 𑂮𑂩𑂱𑂞𑂰, ५ 𑂏𑂲𑂞𑂰𑂁𑂔𑂪𑂱, ६ 𑂮𑂳𑂎𑂰𑂉𑂪 𑂣𑂷𑂎𑂩𑂱𑂍 𑂔𑂰𑂅𑂘, ७ 𑂮𑂞𑂥𑂵𑂐, ८ 𑂒𑂳𑂢𑂸𑂞𑂲, ९ 𑂩𑂯𑂮𑂰 𑂒𑂸𑂩𑂲, १० 𑂍𑂰𑂧𑂡𑂵𑂢𑂳, ११ 𑂧𑂢 𑂧𑂟𑂢, १२ 𑂃𑂍𑂰𑂮 𑂏𑂁𑂏𑂰 - 𑂍𑂫𑂱𑂞𑂰 𑂮𑂁𑂏𑂹𑂩𑂯 १३ 𑂣𑂁𑂒𑂫𑂗𑂲- 𑂉𑂍𑂰𑂁𑂍𑂲 𑂮𑂁𑂒𑂨𑂢 १४ 𑂧𑂟𑂱𑂪𑂰𑂍 𑂥𑂵𑂗𑂲, १५ 𑂍𑂧𑂹𑂣𑂹𑂩𑂷𑂧𑂰𑂅𑂔,

१६ हमेलिया बिआह, १७ रत्नाकर डकैत, १८ स्वयंवर- नाटक, १९ मौलाइल गाछक फूल, २० उत्थान-पतन, २१ जिनगीक जीत, २२ जीवन-मरण, २३ जीवन संघर्ष, २४ नै धाड़ैए, २५ बड़की बहिन, २६ भादबक आठ अन्हार, २७ सधवा-विधवा, २८ ठूठ गाछ, २९ इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, ३० लहसन, ३१ पंगु, ३२ आमक गाछी, ३३ सुचिता, ३४ मोड़पर, ३५ संकल्प, ३६ अन्तिम क्षण, ३७ कुम्भ- उपन्यास ३८ पयस्विनी- प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना ३९ कल्याणी, ४० सतभाए, ४१ समझौता, ४२ तामक तमघैल, ४३ बीरांगना- एकांकी ४४ तरेगन, ४५ बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह ४६ शंभुदास, ४७ रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह ४८ गामक जिनगी, ४९ अर्द्धांगिनी, ५० सतभैया पोखैर, ५१ गामक शकल-सूरत, ५२ अपन मन अपन धन, ५३ समरथाइक भूत, ५४ अप्पन-बीरान, ५५ बाल गोपाल, ५६ भकमोड़, ५७ उलबा चाउर, ५८ पतझाड़, ५९ गढ़ैनगर हाथ, ६० लजबिजी, ६१ उकड़ू समय, ६२ मधुमाछी, ६३ पसेनाक धरम, ६४ गुड़ा-खुद्दीक रोटी, ६५ फलहार, ६६ खसैत गाछ, ६७ एगच्छा आमक गाछ, ६८ शुभचिन्तक, ६९ गाछपर सँ खसल, ७० डभियाएल गाम, ७१ गुलेती दास, ७२ मुड़ियाएल घर, ७३ बीरांगना, ७४ स्मृति शेष, ७५ बेटीक पैरुख, ७६ क्रान्तियोग, ७७ त्रिकालदर्शी, ७८ पैंतीस साल पछुआ गेलौं, ७९ दोहरी हाक, ८० सुभिमानी जिनगी, ८१ देखल दिन, ८२ गपक पियाहुल लोक, ८३ दिवालीक दीप, ८४ अप्पन गाम, ८५ खिलतोड़ भूमि, ८६ चितवनक शिकार, ८७ चौरस खेतक चौरस उपज, ८८ समयसँ पहिने चेत किसान, ८९ भौक, ९० गामक आशा टूटि गेल, ९१ पसेनाक मोल, ९२ कृषियोग, ९३ हारल चेहरा जीतल रूप, ९४ रहै जोकर परिवार, ९५ कर्ताक रंग कर्मक संग, ९६ गामक सूरत बदैल गेल, ९७ अन्तिम परीक्षा, ९८ घरक खरच, ९९ नीक डगर डगेलौं, १०० जीवनक कर्म जीवनक मर्म, १०१ संचराम, १०२ भरि मन काज, १०३ आएल आशा चलि

गद्य, १०४ जीवन दान तथा १०५ अप्पन साती- लघु कथा संग्रह

ऐ [illegible]

२८.श्री आचार्य रामानन्द मण्डल-गौरी आ प्रेम मे धोखा



શ્રાચાર્ય નામાનંદ મંડળ

ગૌની શ્રા પ્નેમ મે ધોખ્ખા

૧

ગૌની

પંડિત મહાદેવ઼ મશ્નિ વીસ વીઘા ળમીન કે ળોતનિયિા નહથિ।ળમીદાને ઉપ્પા ઠાઠ વાત। કનાતી વ઼ાળા હવેળી શ્રા છાતદાન દનવાળા।નૌકન - ચાકન, દૂ ળોડ઼ા વૈળ, હનવાહ, ળન, એગો ભૈસ શ્રા એગો ગાય઼, ચનવાહ। પંડિત ળી પૂળા ન કનાવથિ વ઼નન્ પૂળા કનૈત।માને કી ય઼ળમાની ન।

સુવહ પૂળા પાઠ કે વાદ દનવ઼ાળા પન વૈઠકી। ળહાં મુંહળગ્ગા સજા કે સંગે ચાય઼ - પાન શ્રા તસવ઼ાહિ।એકન ૨ ન માને કિ ખેતી પન ધ્યાન ન, સે વાત ન। ખેતી કે સમય઼ ખેત કે શ્રાડ઼ી પન વૈઠ કે ળન મળદૂન પન ધ્યાન। ખેતી સે દૂ સૌ મન ધાન, એક સૌ મન ગેહૂં શ્રા જાનૂન તેળહન- દળહન હો ળાઇન। ગાંવ઼ કે નાળનીતિ કને મે માહિન નહતન। પ્નતષ્ઠિ઼ા ખૂવ નહૈન।

𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒖𑒲 𑒏𑒹 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒮𑒞𑒲 𑒠𑒹𑒫𑒲 𑒩𑒯𑒢𑒱।𑒮𑒞𑒲 𑒠𑒹𑒫𑒲 𑒐𑒴𑒥 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒩𑒯𑒨।𑒧𑒵𑒠𑒳𑒦𑒰𑒭𑒱𑒝𑒲 𑒂 𑒫𑒰𑒏𑓂𑒣𑒙𑒳𑒢𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒩𑒯𑒨। 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒖𑒲𑒨𑒼 𑒏𑒧 𑒢𑒻। 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒏𑒠 𑒏𑒹 𑒑𑒼𑒩 𑒬𑒩𑒲𑒩, 𑒥𑒛𑓃 𑒥𑒛𑓃 𑒂𑓀𑒐𑒱 𑒂 𑒩𑒼𑒥𑒠𑒰𑒩 𑒧𑒼𑒕।𑒧𑒰𑒟𑒰 𑒣𑒩 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒣𑒳𑓀𑒛। 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒐𑒳𑒬 𑒯𑒰𑒪।

𑒣𑒩𑓀𑒞𑒳 𑒫𑒱𑒡𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒡𑒰𑒢।𑒮𑒞𑒲 𑒠𑒹𑒫𑒲 𑒋𑒑𑒼 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒲 𑒏𑒹 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒣𑒩𑓀𑒞𑒳 𑒕𑒚𑒱𑒨𑒰𑒩 𑒏𑒹 𑒥𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒮𑒞𑒲 𑒠𑒹𑒫𑒲 𑒣𑒩𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒱𑒡𑒰𑒩 𑒑𑒹𑒪। 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒖𑒲 𑒏𑒹 𑒥𑒔𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒳𑒜𑓃𑒲 𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒼𑒩 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒲 𑒣𑒰𑒪 𑒪𑒏। 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒖𑒲 𑒠𑒳𑒐𑒲 𑒩𑒯𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒢।

𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒖𑒲 𑒂𑒥 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒬𑓀𑒏𑒩 𑒏𑒹 𑒂𑒅𑒩 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒏𑒩𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒢। 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒯𑒰𑒟𑒹 𑒧𑒰𑒙𑒲 𑒏𑒹 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒟𑒱, 𑒥𑒹𑒪𑒣𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒩 𑒩𑒰𑒧 𑒩𑒰𑒧 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒞। 𑒥𑒼𑒩 𑒥𑒹𑒪𑒣𑒞𑓂𑒩 𑒂 𑒏𑒢𑒹𑒩 - 𑒡𑒟𑒳𑒩 𑒤𑒴𑒪 𑒮𑒹 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒟।

𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒖𑒲 𑒂𑒥 𑒣𑒻𑒠𑒪 𑒏𑒰𑓀𑒫𑒩 𑒪𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒫𑒻𑒠𑓂𑒨𑒢𑒰𑒟 𑒡𑒰𑒧 𑒖𑒰𑒨 𑒏𑒹 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒻𑒪𑒢 𑒂 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒳𑓀𑒯𑒪𑒑𑒳𑒂 𑒮𑒥 𑒏𑒹 𑒥𑒞𑒻𑒪𑒢।𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒏𑒱 𑒁𑒃 𑒧𑒰𑒒 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒣𑓀𑒔𑒧𑒲 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒫𑒻𑒠𑓂𑒨𑒢𑒰𑒟 𑒣𑒩 𑒖𑒪 𑒔𑒜𑓃𑒰𑒨𑒪 𑒖𑒰𑒨।𑒮𑒥 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩𑒲 𑒦𑒹𑒪 𑒢𑒾𑒏𑒩 - 𑒔𑒰𑒏𑒩 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒩𑒮𑒼𑒃𑒨𑒰 𑒞𑒏 𑒏𑒰𑓀𑒫𑒩 𑒪𑒏𑒹 𑒖𑒰𑒨𑒞।𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒏𑒱 𑒐𑒰𑒨 𑒣𑒱𑒨𑒹 𑒏𑒹 𑒮𑒥 𑒮𑒧𑒰𑒢 𑒦𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒪𑒏𑒹 𑒔𑒪𑒞।𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒖𑒪𑒰𑒫𑒢 𑒚𑒯𑒩𑒰𑒫 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒐𑒩𑒲𑒠𑒪 𑒖𑒰𑒨𑒞।

𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒖𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒔𑒔𑒹𑒩𑒰 𑒮𑒮𑒳𑒩 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒡𑒰𑒧 𑒔𑒪 𑒏𑒹 𑒮𑓀𑒫𑒰𑒠 𑒣𑒚𑒻𑒪𑒢।𑒔𑒔𑒹𑒩𑒰 𑒮𑒮𑒳𑒩 𑒑𑒱𑒩𑒲𑒬 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒮𑒹 𑒐𑒴𑒥 𑒣𑒙𑒻𑒞।

𑒣𑒯𑒱𑒪𑒯𑒱 𑒏𑒯𑒱 𑒞𑒲𑒩𑓂𑒟𑒰𑒙𑒢 𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒨𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒢 𑒞 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒖𑒲𑒨𑒼 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒢। 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒖𑒲 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒡𑒰𑒧 𑒖𑒰𑒨 𑒏𑒹 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒖𑒲 𑒏𑒹 𑒒𑒩 𑒏𑒻𑒪𑒰𑒬𑒣𑒳𑒩 𑒁𑒋𑒪𑒢। 𑒣𑒩𑓀𑒞𑒳 𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒢 𑒣𑒔𑓂𑒔𑒲𑒮 𑒮𑒰𑒪 𑒏𑒹 𑒨𑒳𑒫𑒞𑒲 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒑𑒾𑒩𑒲। 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒖𑒲 𑒮𑒼𑒔𑒻𑒪𑒢 𑒏𑒱 𑒁𑒃 𑒮𑒰𑒪 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒏𑒹 𑒯𑒰𑒟 𑒣𑒲𑒪𑒰 𑒏 𑒠𑒹𑒫𑒨।𑒁𑒃𑒮𑒹 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒫𑒻𑒠𑓂𑒨𑒢𑒰𑒟 𑒏𑒹 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒻𑒫𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒱।

𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒏𑒰𑒪𑒱𑒠𑒰𑒮 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒞𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨, 𑒔𑓀𑒠𑒾𑒢𑒰 𑒮𑒹 𑒥𑒲𑒋 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒻𑒪 𑒩𑒯𑒻। 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒑𑒾𑒩𑒰𑓀𑒑𑒲, 𑒏𑒼𑒧𑒪𑒰𑓀𑒑𑒲 𑒂 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒳𑒬𑒪 𑒢𑒫𑒨𑒾𑒫𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒨। 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒫𑒻𑒠𑓂𑒨𑒢𑒰𑒟 𑒡𑒰𑒧 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒏𑒩𑒰𑒫𑒹 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒹

પ્રસન્ન જેઉના પંડિત મહાદેવ મશ્રિ આ ગૌરી કે પદા કદા ઓહા - સારી વાઉ મનોવિનોદો જેઉ રહ્યા।અરૂ જેટ સે દૂનૂ ગોપે હર્ષિતો રહ્યા।

વાવા ધામ યાત્રા શુરૂ જેઉ।સભ પથિર - પથિર વસ્ત્ર મે।સભસે આકર્ષક પંડિત મહાદેવ મશ્રિ આ ગૌરી પાઠક ઉાગે। ઊના સંયાસી - સંયાસિનિ।સભસે પહિલ કુઉ દેવતા, ગાંવ દેવતા આ મહાદેવ મઠ મે પૂજા જેઉ આ વાવા ધામ કે ઉઉ પ્રસ્થાન।હર હર મહાદેવ કે સ્વર સે ધરતી આકાશ ગુંજાયમાન હો ગેઉ।

સભ ઠહરાવ સ્થાન પર શવિ પુરાણ કે ચર્ચા પંડિત મહાદેવ મશ્રિ કરૈથ।સુનહિર કેવઉ આ કેવઉ ગૌરી પાઠક।આઉર ઉાગ ખાના - પીના કે વ્યવસ્થા મે। મુખ્ય વ્યવસ્થાપક રહથિ - ગરિીશ પાઠક।

શવિ પુરાણ કે કથા મે શવિ - સતી કે પ્રેમ, સતી કે હવન કુંડ મે પ્રાણ ત્યાગ આ ગૌરી કે શવિ સે પુનર્વિવાહ। પ્રેમ કથા સે દૂનૂ ગોપે કે પ્રભાવતિ હોય ઉાગઉ ।ધીપે ધીપે પંડિત જી આ ગૌરી મે પ્રેમ કે પ્રસ્ફુટન હોય ઉાગઉ।પ્રેમ કે રંગ મે રંગાય ઉાગઉ।અન્ય ઉાગ અરૂ પ્રેમ સે અંજાન રહ્યા।

આવતિ ગૌરી, પંડિત જી કે પૈરો દવાવે ઉાગઉ। પરંતુ વાવા વૈદ્યનાથ ધામ દર્શન આ જઉ ચઢાવે કે ધ્યાન રહ્યા। પંડિત જી આ ગૌરી સાકંક્ષ રહતના। યાત્રા સમાપ્ત જેઉ। ઠીક માઘ શ્રીપંચમી કે વાવા વૈદ્યનાથ કે દર્શન જેઉ આ પંડિત જી આ ગૌરી ઉગાિકાર વાવા વૈદ્યનાથ પર જઉ ચઢેઉના।સભ ઉાગ જઉ ચઢેઉના।

પંડિત મહાદેવ મશ્રિ અપપન કુઉ પુરોહતિ પંડા કે યહાં ઠેરા ડાઉ ઉન આ ગરિીશ પાઠક સે કહઉન - દૂ સપ્તાહ વાવા ધામ મે રૂકવાદૂ ગો કમરા ઉઉ ગેઉ। ભોજન વનાવે કે ઉઉ અઉગ સોએગો કમરા મે પંડિત જી, ગૌરી આ ગરિીશ પાઠક।દોસર રૂમ મે વાંકી ઉાગ।પરંચ ગરિીશ પાઠક કે જ્યાદા સમય ભોજન આદિ કે વ્યવસ્થા મે વીતે ।જ્યાદા તર દોસર કમરા મે રહથિ। પંડિત જી આ

ગૌમી કે એકમ ઊઝ મણિન મહ્યાદૂનૂ ગોમે કે પ્રેમ પમવાન યઢ઼િન મહ્યા એક ગમહ સે શવિ઼ શ્રા ગૌમી કે કથા દુહ્માવે કે વ઼યિામ કમે ઊાઊન।

 એકટા દિનિ પંડિત મહાદેવ઼ મિશ્ર વળઊન - ગૌમી । વાવા યામે મે દૂનૂ ગોમે કે વિશ્રાહ ક ઊવે કે યાહિ।એહ્ન પવ઼િત્ર સ્થાન શ્રા સમય઼ કંહ પાય઼વ।

ગૌમી વાળઊ - હાં। શ્રોહ્ય ળીાવાત ત પવ઼િત્ર શ્રા ભેક હ્યાહ્મહૂં શ્રાવિ શ્રંહ વિા ન ળીવ઼ સકૈય઼ છી। શ્રંહ સે હ્મમા પવ઼િત્ર પ્રેમ હે ગેઊ હ્ય઼।

પંડિત મહાદેવ઼ મિશ્ર વળઊન - વિયાત કે રૂહે મંળૂમ વુહ્યાય઼ હ્ય઼। ભગવાન ભોઊેનાથ કે ળીવ઼ન ઘટના સન હ્મમા સંગે ઘટ મહઊ હ્ય઼।

ગૌમી વાળઊ - વિયાત ળે કમાય઼ છથિ, શ્રયછે કમાય઼ છથિ। પમંતુ વાવૂ ળી સે પૂછ ઊયિ઼ કે યાહિ।

પંડિત મહાદેવ઼ મિશ્ર વળઊન - હ્મ ગમીશ વાવૂ સે પૂછ ઊવૈય઼। હ્મમા વ઼િશ્વાસ હ્ય઼ ળે વો માન ઊતન।

ગૌમી વાળઊ - ળી। હ્મમો વ઼િશ્વાસ હ્ય઼ ળે વાવૂ ળી માન ઊથિ।

દોસમ દિનિ માત મે ળવ ગમીશ વાવૂ સૂતે ઊ શ્રરઊન ત પંડિત ળી વળઊન - ગમીશ વાવૂ।એગો મહત્વ઼પૂર્ણ વાત કમે કે યાહિ છી।

ગમીશ પાઠક વળઊન - શ્રોહ્ય ળીાવાળૂ।

પંડિત ળી - હ્મ શ્રંહ સે ગૌમી કે હાથ માંગૈ છી। હ્મમા વ઼િશ્વાસ હ્ય઼ ળે હ્મમા ગૌમી કે હાથ દેવ।

ગમીશ પાઠક - શ્રયાનક ર માંગ સુનકે સન્ન મહ ગેઊન શ્રા સોયે ઊાઊન।

ગૌરી વાળઉ - હાં। વાવૂ ળી। શ્રોહ્ા ળી ઠીકે મંગાઉૈન હ્યા। હ્મહૂં શ્રોહ્ા ળી સે પ્રેમ હો ગેઉ હ્યા। હ્મના વો સાક્ષાત મહાદેવ઼ ઉઔત છથિ।હ્મિ તુંનકર ગૌરી।હ્મરો વ઼શ્િવ઼ાસ હ્ય ળે શ્રંહા શ્રોહ્ા ળી કે માંગ માન ઉેવૈય઼।

ગરિીશ પાઠક વળઉન - ઠીક હ્યા। કાઉર્હિ રાત મે વતાયવ।

ગરિીશ વાવૂ મન મે ગુનધુન કરય઼ ઉાગઉ।સાંઝ તક નષ્િકર્ષ નકિાઉ ઉા કિ શ્રોહ્ા પંડતિ મહાદેવ઼ મશ્િર શ્રા ગૌરી કે વશ્રિાહ સર્વ઼થા ઉચતિ હોયત।

રાત મે ળવ સુતે ગરિીશ વાવૂ શ્રરઉન ત પંડતિ ળી પુછઉૈન - ગરિીશ વાવૂ કિ વચિાર કૈઉયિન।

ગરિીશ વાવૂ વળઉન - ળે શ્રંહા શ્રા ગૌરી કે વ઼ચિાર હ્ય સેહે વ઼ચિાર હ્મરો હ્યા।ર ઉચતિ શ્રા મંગઉ વ઼ચિાર હ્યા।

કાઉર્હયિ વાવા કે મંદરિ મે શુભ પાણગ્િરહન સમ્પન્ન કૈઉ ળાય઼।

શ્રાર સવેરે દોપહર સે પહલિ ગરિીશ વાવૂ , ગૌરી કે હાથ પંડતિ મહાદેવ઼ મશ્િર કે હાથ મે સૌપ દેઉન।વાવા ભોઉેનાથ કે સાક્ષી માનૈત પંડતિ મહાદેવ઼ મશ્િર ગૌરી કે માંગ મે સેનૂર ભર દેઉન।વ઼શ્રિાહ વાવા યામ કે પંડા કરૈઉન।શ્રાર ગૌરી મહાદેવ઼ કે શ્રર્ધાંગનિી વન ગેઉ।સભ ખુશ રહે। વાવા કે ળયકારા ઉાગઉ।

એગો સ્કાર્પયિો શ્રા એગો મનિી ટ્રેસ્ટ ભાડ઼ા ભેઉ। સ્કાર્પયિો સે દુઉહનિ ગૌરી - દુઉ્હા મહાદેવ઼ શ્રા ટ્રક સે ગરિીશ વાવૂ શ્રા શ્રન્ય ઉોગ ઘરે કૈઉાશપુર શ્રરઉન। પંડતિ મહાદેવ઼ મશ્િર કે માય઼ દુઉ્હનિ ગૌરી શ્રા દુઉ્હા મહાદેવ઼ કે શ્રારતી ઉતાર ઉેન શ્રા ગૃહ પ્રવ઼ેશ કરૈઉન।

કુછ કાઉ વાદ ગૌરી એગો ઉડ઼કિા વ઼શ્િવ઼નાથ કે ળનમ દેઉકાસતી કે ળનમઉ ઉડ઼કિા કાશીનાથ કેય઼ો ગૌરી ખૂવ માને। દૂનૂ ઉડ઼કિા કાશીનાથ શ્રા વ઼શ્િવ઼નાથ ળવ઼ાન ભેઉ। શાદી વ઼શ્રિાહ ભેઉ। ગૌરી શ્રા પંડતિ મહાદેવ઼ મશ્િર શ્રાર દાદી - દાદા

𑒥𑒢 𑒑𑒹𑒪𑒢। 𑒣𑒩𑓀𑒞𑒳 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒂 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒂𑒃𑒨𑒼 𑒠𑒱𑒑𑒰𑒩 𑒧𑒹 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒯𑒨।

२

𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒧𑒹 𑒡𑒼𑒐𑒰

𑒂𑒃 𑒣𑓂𑒩𑒼 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧 𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒏𑒹 𑒐𑒴𑒢 𑒥𑒼𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒣𑒩𑒰𑒢 𑒣𑒐𑒹𑒩𑒴 𑒅𑒛𑓃 𑒑𑒹𑒪। 𑒫𑒼 𑒯𑒧𑒩𑒹 𑒧𑒳𑒯𑒪𑓂𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒥𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒢। 𑒯𑒧 𑒁𑒞𑒲𑒞 𑒧𑒹 𑒐𑒼 𑒑𑒹𑒪𑒾𑓀।𑒖𑒥 𑒯𑒧 𑒐𑒹𑒧𑒏𑒰 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖 𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒲। 𑒯𑒧 𑒮𑒰𑒃𑓀𑒮 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒩𑒯𑒲। 𑒫𑒼 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒩𑒯𑒪𑒢। 𑒫𑒼 𑒯𑓀𑒮𑒧𑒳𑒐, 𑒧𑒱𑒪𑒢𑒮𑒰𑒩 𑒂 𑒪𑒼𑒏𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒩𑒯𑒞। 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒮𑒥 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒄 𑒬𑒻𑒪𑒲 𑒮𑒹 𑒮𑓀𑒞𑒳𑒮𑓂𑒙 𑒂 𑒐𑒳𑒬 𑒩𑒯𑒹। 𑒯𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖 𑒏𑒹 𑒏𑒰𑒧𑒢 𑒩𑒳𑒧 𑒧𑒹 𑒥𑒻𑒛𑒧𑒱𑒙𑒢 𑒐𑒹𑒪𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒲। 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒋𑒏𑒪 𑒞 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒛𑒥𑒪 𑒥𑒻𑒛𑒧𑒱𑒙𑒢 𑒐𑒹𑒪𑒻𑒞। 𑒪𑒹𑒏𑒱𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒮𑓂𑒣𑒩𑓂𑒡𑒲 𑒐𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒹 𑒫𑒩𑒳𑒢 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒖𑒹 𑒐𑒹𑒧𑒏𑒹 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖 𑒏𑒹 𑒋𑒑𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒏𑒹 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒩𑒯𑒹। 𑒫𑒩𑒳𑒢 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧 𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒏𑒹 𑒠𑒼𑒮𑓂𑒞𑒰𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒥𑓀𑒡 𑒩𑒯𑒹। 𑒏𑒰𑒩𑒢 𑒏𑒱 𑒋𑒏 𑒞𑒳𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒩𑒯𑒹।

𑒖𑒥 𑒧𑒻𑒔 𑒯𑒼𑒨 𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒼 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧 𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒢𑒩 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒮𑒼𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒹 𑒧𑒻𑒔 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒥𑒹 𑒏𑒹 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨𑒹 𑒪𑒰𑒥𑒹। 𑒮𑒼𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒰𑒪 𑒦𑒩 𑒏𑒹 𑒩𑒳𑒣𑒫𑒰𑒢 𑒥𑒹𑒙𑒰, 𑒋𑒑𑒼 𑒣𑒰𑒢𑒲 𑒏𑒹 𑒥𑒼𑒞𑒪 𑒂 𑒔𑒰𑒨 𑒮𑒹 𑒦𑒩𑒪 𑒟𑒩𑒧𑒮 𑒦𑒲 𑒪𑒰𑒥𑒹।𑒧𑒻𑒔 𑒏𑒹 𑒠𑒾𑒩𑒰𑒢 𑒖𑒥 𑒣𑓂𑒩𑒼 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒏𑒹 𑒏𑓀𑒚 𑒮𑒳𑒐𑒹 𑒞 𑒮𑒼𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒹 𑒪𑒹𑒏𑒹 𑒣𑒰𑒢𑒲 𑒣𑒱𑒨𑒟 𑒂 𑒟𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒯𑒮𑒴𑒮 𑒯𑒼𑒨 𑒞 𑒔𑒰𑒨 𑒣𑒱𑒨𑒟। 𑒪𑒹𑒏𑒱𑒢 𑒫𑒼 𑒫𑒩𑒳𑒢 𑒏𑒹 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨𑒹 𑒣𑒰𑒢𑒲 𑒂 𑒔𑒰𑒨 𑒣𑒱𑒂𑒫𑒟𑒱।

𑒧𑒻𑒔 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒼 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒂 𑒫𑒩𑒳𑒢 𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒮𑓂𑒣𑒩𑓂𑒡𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒥𑒢𑒹। 𑒬𑒰𑒩𑒲𑒩𑒱𑒏 𑒏𑒮𑒰𑒫𑒙 𑒧𑒹 𑒫𑒩𑒳𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒮𑒹 𑒥𑒲𑒮 𑒩𑒯𑒹।𑒖𑒹𑒏𑒩 𑒤𑒰𑒨𑒠𑒰 𑒁𑓀𑒞𑒞𑓁 𑒫𑒩𑒳𑒢 𑒏𑒹 𑒧𑒱𑒪 𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒨। 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒫𑒩𑒳𑒢 𑒮𑒹 𑒧𑒻𑒔 𑒯𑒰𑒩 𑒖𑒰𑒨। 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒏𑒱 𑒣𑒰𑓀𑒔 𑒧𑒻𑒔 𑒯𑒼𑒨 𑒞 𑒠𑒴 𑒧𑒻𑒔 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒖𑒲𑒞𑒹 𑒞 𑒞𑒲𑒢 𑒧𑒻𑒔 𑒫𑒩𑒳𑒢 𑒖𑒲𑒞 𑒖𑒰𑒨।𑒁𑒩 𑒧𑒻𑒔 𑒏𑒹 𑒁𑒮𑒩 𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒂 𑒫𑒩𑒳𑒢 𑒣𑒩 𑒞 𑒢 𑒣𑒩𑒹। 𑒪𑒹𑒏𑒱𑒢 𑒁𑒮𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒏𑒹

𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒮𑒼𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒣𑒩 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨𑒹 𑒣𑒛𑓃। 𑒮𑒼𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒫𑒩𑒴𑒝 𑒏𑒹 𑒞𑒩𑒤 𑒂𑒏𑒩𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒮𑒼𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒼 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧 𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒮𑒹 𑒏𑒙𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪।

𑒖𑒥 𑒣𑓂𑒩𑒼 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧 𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒛𑓂𑒨𑒴𑒙𑒲 𑒣𑒩 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖 𑒖𑒰𑒨 𑒞 𑒫𑒩𑒳𑒝 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒥 𑒏𑒹 𑒂𑒫𑒰𑒮 𑒣𑒩 𑒂 𑒖𑒰𑒨।𑒫𑒩𑒴𑒝 𑒂 𑒮𑒼𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒣𑓂𑒨𑒰𑒩 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒩𑒻।𑒂 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒣𑓂𑒨𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒏𑒹 𑒠𑒹𑒯 𑒋𑒏 𑒯𑒼 𑒑𑒹𑒪। 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒏𑒱 𑒮𑒼𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒂 𑒫𑒩𑒳𑒝 𑒧𑒹 𑒫𑒰𑒮𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒨𑒰𑒩 𑒩𑒯𑒻। 𑒯𑒰𑒪𑒰𑓀𑒏𑒱 𑒫𑒩𑒴𑒝 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒦𑒼 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻।

𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒥 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒏𑒹 𑒩𑒰𑒮𑒪𑒲𑒪𑒰 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒠𑒹𑒐 𑒪𑒹𑒪𑒢। 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒥 𑒮𑒼𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒹 𑒐𑒴𑒥 𑒮𑒧𑒗𑒻𑒪𑒢। 𑒁𑓀𑒯𑒰 𑒃 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑒻𑒏 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲। 𑒁𑓀𑒯𑒰 𑒋𑒑𑒼 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒏𑒹 𑒧𑒰𑒨 𑒦𑒲 𑒕𑒲।

𑒪𑒹𑒏𑒱𑒢 𑒮𑒼𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒏 𑒏𑒱 𑒯𑒧 𑒫𑒩𑒳𑒝 𑒮𑒹 𑒣𑓂𑒨𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒃 𑒕𑒲।𑒯𑒧 𑒫𑒩𑒴𑒝 𑒏𑒹 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒩𑒯𑒥। 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒥 𑒏𑒯𑒪𑒢- 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒒𑒩 𑒮𑒹 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒅। 𑒪𑒹𑒏𑒱𑒢 𑒮𑒼𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒏- 𑒁𑓀𑒯𑒲𑓀 𑒒𑒩 𑒮𑒹 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒅।𑒃 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒞 𑒯𑒧𑒩 𑒯𑒋। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒹 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒂 𑒒𑒩 𑒯𑒋।𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒏𑒹 𑒦𑒲 𑒪 𑒖𑒰𑒅।

𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒥 𑒞 𑒮𑒼𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒹 𑒮𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻।𑒂𑓀𑒐𑒱 𑒮𑒹 𑒪𑒼𑒩 𑒔𑒳𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑓀𑒬𑒳 𑒏𑒹 𑒪𑒹𑒏𑒩 𑒒𑒩 𑒮𑒹 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒢। 𑒫𑒼 𑒂 𑒬𑒯𑒩 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒒𑒩 𑒮𑒹 𑒠𑒴𑒩 𑒦𑒰𑒛𑓃𑒰 𑒣𑒩 𑒛𑒹𑒩𑒰 𑒪𑒹𑒏𑒹 𑒩𑒯𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒢। 𑒥𑒰𑒠 𑒧𑒹 𑒨𑒯𑒲 𑒧𑒯𑒪𑓂𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒐𑒩𑒲𑒠 𑒏𑒹 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒥𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒢।𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒏𑒹 𑒦𑒲 𑒣𑒜𑒰𑒫𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒢। 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒹 𑒠𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒧𑒹 𑒡𑒼𑒐𑒰 𑒂 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒨𑒼𑒑 𑒧𑒹 𑒬𑒩𑒰𑒥 𑒂 𑒮𑒱𑒑𑒩𑒹𑒙 𑒣𑒱𑒨𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪।𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒃𑓀𑒖𑒲𑒢𑒱𑒨𑒩𑒱𑓀𑒑 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻।𑒠𑒳𑒩𑓂𑒠𑒱𑒢 𑒋𑒯𑒢 𑒦𑒼 𑒑𑒹𑒪 𑒏𑒱 𑒃𑓀𑒖𑒲𑒢𑒱𑒨𑒩𑒱𑓀𑒑 𑒏ॉ𑒪𑒹𑒖 𑒮𑒹 𑒂𑒫𑒰𑒮 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒏𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒜𑓃 𑒧𑒹 𑒅𑒤𑒢𑒻𑒞 𑒢𑒠𑒲 𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒫 𑒅𑒪𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰 𑒮𑒹 𑒛𑒳𑒥 𑒏𑒹 𑒧𑒩 𑒑𑒹𑒪। 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒥 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒧𑒹 𑒡𑒼𑒐𑒰 𑒂 𑒃 𑒂𑒒𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒰।𑒫𑒼 𑒐𑒰𑒙 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒱 𑒪𑒹 𑒪। 𑒣𑒛𑓃𑒼𑒮𑒲 𑒮𑒦 𑒛𑒰𑒑𑒛𑒩 𑒮𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒪𑒢।𑒣𑒩 𑒫𑒼 𑒐𑒳𑒢 𑒥𑒼𑒏𑒻𑒞 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒹 𑒫𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒼 𑒑𑒹𑒪𑒢। 𑒮𑒼𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒹 𑒁𑒢𑒳𑒏𑓀𑒣𑒰 𑒣𑒩 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖 𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒏𑒹 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲 𑒧𑒱𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒮𑒰𑒩𑒰 𑒫𑒱𑒩𑒰𑒮𑒞 𑒏𑒹 𑒧𑒪𑒏𑒰𑒃𑒢 𑒥𑒢 𑒑𑒹𑒪। 𑒁𑒃𑒪𑒰 𑒏𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒼 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧 𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒹 𑒠𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒧𑒹 𑒡𑒼𑒐𑒰 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒠𑒼 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒏𑒹 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒞𑒪𑒰𑒏 𑒢 𑒠𑒹𑒪𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒫𑒩𑒳𑒝 𑒂𑒃 𑒮𑒼𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒹 𑒕𑒼𑒛𑓃

કે શ્રપના પ્રવિાર સંગા ઝીવન ઝી રહ્ઞ હ્રા સોનિયા શ્રકેલ ઝીવન વિતા રહ્ઞ હ્રા શ્રપના કોડ્રી મે પ્રની શ્યામ મોહન કે શ્રોટો ટંગાલે હ્રર ।ઝૈ પર સુખ્લ માલા ટાંગાલ હ્રા

- શ્રાચાર્ય રામાનંદ મંડલ સામાઝિક ચિંતક સીતામઢી, સેવાનિવૃત્ત પ્રધાનાધ્યાપક, માતા-ચન્દ્ર દેવી, પિતા-સ્વ૰રામેશ્વર મંડલ, પત્ની-પ્રમિલા દેવી, ઝન્મ તિથિ-૦૧ ઝનવરી ૧૯૬૦ યોગ્યતા- એમ-એસસી (રસાયન શાસ્ત્ર), એમ એ (હિન્દી)। રૂચિ- સાહિત્યિક, મૈથિલી-હિન્દી કવિતા -કહાની લેખન શ્રા શ્રાલેખ્ર પ્રકાશિત પોથી - મૈથિલી કવિતા સંગ્રહ ભાસા કે ન વાંટિયૌ ૨૦૨૨ પ્રકાશિત રચના - સહિયા કવિતા સંગ્રહ પોથી - ઝનક નંદિની ઝાનકી શ્રા શૌર્ય ગાન ૨૦૨૨ પત્રિકા -મિથિલા સમાઝ, ઘર -બાહર શ્રા શ્રૂપ્રેવા (મૈસામ)। શ્રખ્વાર -દૈનિક મૈથિલ પુનર્ઝાગરણ પ્રકાશ સામાઝિક- સામાઝિક ચિંતન, દાયિત્વ- પૂર્વ ઝિલા પ્રતિનિધિ, પ્રાથમિક શિક્ષક સંઘ, ડુમરા, સીતામઢી સ્થાયી પતા- ગ્રામ-પંપિરા વિશનુપુર થાના- પરિહાર ઝિલા-સીતામઢી વર્તમાન પતા-પંપિરા સદન, મુરલિયાચક વાર્ડ-૦૪ સીતામઢી પોસ્ટ-ચકમહિલા ઝિલા-સીતામઢી રાઝ્ય-બિહાર પિન-૮૪૩૩૦૨

ऐ રચનાપર શ્રપન મંતવ્ય દિતૌ ગ્રિસાસાડવિદેહ઼ંગામઝિડિયોમ **પર પઠાઉ।**

२.१० डॉ. [illegible] [illegible]- मिथिला मैथिली के [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible]
(हास्य कटाक्ष)



𑒛𑒰. 𑒏𑒱𑒬𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩
𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒹 𑒒𑒳𑒢 𑒖𑒹𑒏𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒻𑒩 𑒏𑒹 𑒐𑒰 𑒑𑒹𑒪 (𑒯𑒰𑒮𑓂𑒨 𑒏𑒙𑒰𑒏𑓂𑒭)

𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒛𑓃𑒥𑒛𑓃𑒰𑒃𑒞 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻 𑒖𑒹 𑒃 𑒮𑒥 𑒒𑒳𑒢 𑒖𑒹𑒏𑒰 𑒐𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒮𑒥 𑒏𑒱𑒕𑒱? 𑒞𑒃𑒨𑒼 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒣𑒹𑒙 𑒢𑒻 𑒦𑒩𑒪𑒻? 𑒋𑒏𑒩𑒹 𑒮𑒥 𑒠𑒳𑒂𑒩𑒹 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒹 𑒋𑒯𑒢𑒹 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒞𑒱 𑒕𑒻 𑒏𑒲 𑒮𑒥𑒙𑒰 𑒅𑒪𑒂 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒏𑒥𑒪𑒰𑒞𑒲𑒋 𑒨𑒴𑒢 𑒨𑒻 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒥 𑒮𑒢 𑒏𑒰𑒥𑒱𑒪 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒢𑒹? 𑒧𑒑𑒰𑒨𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒨𑒏 𑒕𑒻? 𑒋𑒏𑓂𑒏𑒼 𑒙𑒰 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒫𑒪 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒼𑒐 𑒏𑒯𑒞 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒢𑒾? 𑒄 𑒮𑒥 𑒒𑒴𑒢 𑒖𑒹𑒏𑒰 𑒮𑒥 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒐𑒰 𑒑𑒹𑒪?

𑒯𑒧 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒮 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒲 𑒖𑒹 𑒏𑒰 𑒯𑒱𑒪𑒻 𑒯𑒾 𑒥𑒰𑒥𑒰, 𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒐𑒙𑒱𑒨𑒰 𑒒𑒴𑒢 𑒐𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒼 𑒏𑒲? 𑒁𑒾𑒢𑒲 𑒞𑒼𑒩𑒹 𑒣𑒼𑒞𑒥𑒰 𑒮𑒥 𑒐𑒙𑒱𑒨𑒰 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒠𑒱𑒪𑒏𑒾 𑒮𑒹 𑒍 𑒑𑒩𑒧𑒰𑒋𑒪 𑒕𑒯𑒴? 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒻 𑒯𑒾 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩 𑒞𑒯𑒴𑓀 𑒧𑒲𑒛𑒱𑒨𑒰 𑒫𑒪 𑒮𑒥 𑒏𑒲 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒼𑒢 𑒁𑒒𑒼𑒩 𑒏𑒩𑒻 𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒯? 𑒯𑒧𑒹 𑒤𑒹𑒩 𑒥𑒖𑒪𑒲 𑒯𑒾 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒯𑒾𑒪𑒲 𑒏𑒲 𑒮𑒹 𑒏𑒯𑒴 𑒢𑒹 𑒞𑒥𑒹 𑒢𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒁𑒢𑒴 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒻 𑒑? 𑒞𑒥𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒼𑒪𑒻 𑒨𑒴 𑒖𑒲 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒞𑒧𑒰𑒏𑒴𑒪 𑒐𑒳𑒂𑒥𑒯 𑒞 𑒩𑒨𑒱𑒢 𑒮 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒱𑒨𑒁

𑒯𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒹 𑒐𑒻𑒢𑒲 𑒥𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒐𑒳𑒋𑒪𑒲 𑒂 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒲 𑒖𑒹 𑒂𑒥 𑒏𑒯𑒼 𑒢𑒹 𑒏𑒟𑒲 𑒒𑒴𑒢 𑒐𑒰𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒻 𑒏𑒼𑒢 𑒥𑒩𑒑𑒰𑓀𑒯𑒱 𑒮𑒥 𑒜𑒹𑒩 𑒏𑒰𑒥𑒱𑒪 𑒥𑒢 𑒩𑒯𑒪𑒲? 𑒤𑒹𑒩 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒼𑒪𑒪𑒏𑒻 𑒖𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒢𑒹 𑒕𑒯𑒏 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒹 𑒒𑒳𑒢 𑒖𑒹𑒏𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒻𑒩 𑒏𑒹 𑒐𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒄 𑒯𑒼𑒯𑒏𑒰𑒩𑒲, 𑒣𑒹𑒙𑒣𑒹𑒮𑒳𑒂 𑒢𑒹𑒞𑒰, 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒥 𑒞𑒃𑒨𑒼 𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟𑒏 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒗𑓀𑒣𑒥𑒯? 𑒯𑒧 𑒥𑒖𑒪𑒲 𑒖𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒤𑒻𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒏𑒹 𑒏𑒯𑒴 𑒢𑒹 𑒖𑒹 𑒏𑒲 𑒯𑒼𑒪𑒻? 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒧𑒿𑒯 𑒥𑒱𑒖𑒏𑒥𑒻𑒞 𑒥𑒼𑒪𑒪𑒏𑒻 𑒯𑒾 𑒮𑒥𑒙𑒰 𑒯𑒧𑒯𑒲𑓀 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒁 𑒞𑒴𑓀 𑒮𑒥 𑒧𑒲𑒛𑒱𑒨𑒰 𑒫𑒪 𑒢𑒻 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒕𑒯𑒏 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒹 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒠𑒬𑒰? 𑒯𑒧𑒹 𑒏𑒯𑒪𑒱𑒨𑒻 𑒞𑒼𑒯𑒹 𑒏𑒯𑒼 𑒢𑒹 𑒯𑒾 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒹 𑒯𑒰𑒪

𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒻 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒕𑒯𑒏 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒧𑒹 𑒯𑒼𑒯𑒏𑒰𑒩𑒲, 𑒣𑒹𑒙𑒣𑒼𑒮𑒳𑒂 𑒢𑒹𑒞𑒰, 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒥 𑒁𑒮𑓂𑒟𑒩𑒖𑒰𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒄 𑒮𑒥 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒹 𑒒𑒴𑒢 𑒖𑒹𑒏𑒰 𑒐𑒰 𑒑𑒹𑒪? 𑒯𑒼𑒯𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒾𑒛𑓃𑒰 𑒮𑒥 𑒢𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒞𑒯 𑒑𑒧𑒞𑒯 𑒂 𑒯𑒴𑒛𑒾 𑒯𑒼 𑒯𑒼 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒤𑒱𑒩𑒞𑒯 𑒖𑒹 𑒮𑒥𑒙𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒋 𑒕𑒱𑒨𑒻 𑒞 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒮 𑒠𑒹𑒫𑒒𑒩 𑒖𑒢𑒹𑒑𑒩 𑒮 𑒑𑒼𑒛𑓂𑒛𑒰 𑒞𑒏 𑒮𑒥𑒙𑒰

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒱 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒩𑒰𑒖𑒡𑒰𑒢𑒲 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒹 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲? 𑒄 𑒯𑒼𑒯𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒥 𑒦𑓀𑒑𑒣𑒲𑒣𑒥𑒯𑒰 𑒮𑒥 𑒥𑒞𑒏𑒳𑒙𑓂𑒙𑒥𑒻𑒪 𑒙𑒰 𑒏𑒩𑒻 𑒖𑒹𑒞𑒯? 𑒏𑒩𑒥 𑒢𑒻 𑒠𑒹𑒐𑒞𑒯 𑒂 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒠𑒱𑒐 𑒪𑒹𑒏𑒏 𑒂𑒏𑒪𑒢 𑒏𑒩𑒞𑒯 𑒏𑒲? 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒄 𑒣𑒹𑒙𑒣𑒼𑒮𑒳𑒂 𑒢𑒹𑒞𑒰 𑒮𑒥 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒩𑒰𑒖 𑒯𑒼 𑒯𑒼 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒠𑒪𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑓂 𑒂𑒃 𑒞𑒪𑒏𑒱 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒥𑒏𑒹 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒲 𑒧𑒪𑒱 𑒔𑒰𑒪𑒴 𑒏𑒩𑒾𑒪 𑒢𑒻 𑒦𑒹𑒪 𑒂 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒣𑒩 𑒔𑓀𑒠𑒰𑒐𑒼𑒩𑒲 𑒣𑒼𑒮𑓂𑒙𑒩𑒥𑒰𑒖𑒲 𑒂 𑒖𑓀𑒞𑒩 𑒧𑓀𑒞𑒩 𑒣𑒩 𑒦𑒰𑒭𑒝𑒥𑒰𑒖𑒲 𑒙𑒰 𑒏𑒩𑒻 𑒖𑒰𑒃𑒋?

𑒯𑒧 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒹 𑒏𑒯𑒪𑒲 𑒯𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒩𑒰𑒖 𑒥𑒢𑒞𑒻 𑒞 𑒞𑒼𑒩𑒼 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒮𑓀𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒥𑒢𑒰𑒃 𑒠𑒹𑒞𑒻 𑒞 𑒚𑒲𑒏 𑒩𑒯𑒞𑒻 𑒢𑒹 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒰𑒖 𑒯𑒼𑒞𑒻? 𑒋 𑒮𑒳𑒢𑒞𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒂𑒩𑒼 𑒐𑒱𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒻 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮 𑒥𑒼𑒪𑒪𑒏𑒻 𑒯𑒹 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩 𑒞𑒼𑒯𑒴 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒪𑒰 𑒔𑒪𑒏𑒣𑒢𑒲 𑒥𑒞𑒱𑒨𑒰𑒃 𑒪𑒑𑒪𑒯? 𑒯𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒮 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒲 𑒖𑒹 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒯𑒼𑒃 𑒯𑒃?

𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒹 𑒯𑓀𑒮𑒲 𑒕𑒴𑒙 𑒑𑒹𑒪𑒻 𑒥𑒖𑒪𑒻 𑒁𑒃 𑒯𑒹 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩 𑒞𑒼𑒩𑒼 𑒁𑒃 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒥 𑒠𑒱𑒨𑒰 𑒢𑒻 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒕𑒯? 𑒯𑒹 𑒣𑒻𑒯 𑒧𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒥 𑒞 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒏𑒹 𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒁𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡, 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒩𑒰𑒛𑓃 𑒥𑒼𑒪𑒲, 𑒠𑒕𑒱𑒢𑒰𑒯𑒰 𑒣𑒕𑒱𑒧𑒰𑒯𑒰 𑒏𑒼𑒮𑒱𑒏𑒢𑒯𑒰 𑒧𑒡𑒹𑒮𑒲 𑒏𑒹 𑒦𑒹𑒠 𑒏𑒋 𑒐𑓀𑒛 𑒥𑒱𑒐𑓀𑒛 𑒏𑒹𑒪𑒏? 𑒯𑒧 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒲 𑒮𑒹 𑒏𑒲? 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒼𑒪𑒪𑒏𑒻 𑒯𑒹 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒥 𑒥𑒰𑒖𑒥 𑒏𑒹 𑒄 𑒮𑒥 𑒧𑒼𑒖𑒩𑒹 𑒢𑒹 𑒏𑒩𑒞𑒯? 𑒥𑒯𑒳𑒖𑒢 𑒥𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒥𑒼𑒪𑒲 𑒏𑒹 𑒄 𑒮𑒥 𑒩𑒰𑒛𑓃 𑒥𑒼𑒪𑒲 𑒏𑒯𑒞𑒯 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒪 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒥𑒼𑒪𑒲𑒏 𑒧𑒾𑒪𑒱𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒏𑒹 𑒥𑒠𑒻𑒪 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒯 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒥𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒞𑒯 𑒏𑒲? 𑒮𑒥𑒙𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒙𑒰 𑒂 𑒠𑒴 𑒔𑒰𑒩𑒲 𑒙𑒰 𑒧𑒼𑒢𑒪𑒑𑓂𑒑𑒴 𑒣𑒕𑒱𑒪𑒑𑓂𑒑𑒳𑒂 𑒏𑒹 𑒮𑓀𑒑 𑒩𑒐𑒞𑒯? 𑒄 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒥 𑒔𑒴𑒩𑒻 𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒏𑒹 𑒥𑒩𑓂𑒑 𑒦𑒹𑒠𑒲 𑒥𑒢𑒰 𑒒𑒴𑒢 𑒖𑓀𑒏𑒰 𑒐𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒻 𑒏𑒯𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒋𑒏𑓂𑒏𑒼 𑒙𑒰 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒑𑒣 𑒧𑒰𑒢𑒞 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒾 𑒅𑒢𑒙𑒹 𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟𑒏 𑒧𑒴𑒿𑒯 𑒙𑒰 𑒗𑒰𑓀𑒣𑒞 𑒏𑒲?

𑒯𑒧 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒮 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒲 𑒖𑒹 𑓒 𑒏𑒯𑒼 𑒞 𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒏𑒹 𑒙𑒼𑒣𑒲 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒰 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒗𑒰𑓀𑒣𑒱 𑒠𑒱𑒞𑒯𑒼 𑒏𑒲? 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒼𑒪𑒪𑒏𑒻 𑒯𑓀 𑒯𑒹 𑒄 𑒮𑒥 𑒙𑒼𑒣𑒲 𑒣𑒻𑒯𑒩𑒥𑒻 𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒩𑓀𑒑𑒞 𑒮𑒥 𑒕𑒻 𑒁𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒄 𑒏𑒯𑒁 𑒞 𑒥𑒮𑒯𑒰 𑒥𑒩𑒠 𑒏𑒹 𑒞𑒼 𑒏𑒲 𑒏𑒯𑒥𑒯𑒏? 𑒯𑒧𑒹 𑒥𑒼𑒪𑒪𑒱𑒨𑒻 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒹 𑒞 𑒚𑒹𑒚𑒲 𑒧𑒹 𑒥𑒩𑒠𑒹 𑒏𑒯𑒥𑒻 𑒢𑒹? 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒻 𑒔𑒴 𑒖𑒲 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒥𑒪𑒰 𑒮𑒥 𑒞 𑒥𑒮𑒯𑒼 𑒥𑒩𑒠 𑒏𑒹 𑒏𑒰𑒧𑒡𑒹𑒢𑒴 𑒑𑒰𑒋 𑒥𑒢𑒰

𑒠𑒹𑒞𑒾 𑒂 𑒏𑒯𑒪𑒾 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒧𑒹 𑒅𑒖𑒰𑒢 𑒯𑒩 𑒞 𑒧𑒢𑒧𑒰𑒢𑒰 𑒖𑒹 𑒧𑒼𑒢 𑒯𑒋𑒞 𑒮𑒹 𑒏𑒯𑒥𑒻 𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒠𑒹𑒐𑒾𑒪𑒰 𑒞𑒏𑒻𑒪𑒰 𑒣𑒢 𑒖𑒹 𑒥𑒮𑒯𑒰 𑒥𑒩𑒠 𑒏𑒲 𑒏𑒰𑒧𑒡𑒹𑒢𑒴 𑒑𑒰𑒋 𑒏𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒮𑒼𑒗𑒰 𑒋𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒞 𑒅𑒢𑒙𑒹 𑒄 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒦 𑒯𑒧𑒩𑒹 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒂 𑒮𑓀𑒒𑒪𑒼𑒏𑒲 𑒏𑒻𑒯 𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟𑒏 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒠𑒿𑒣𑒥𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒏 𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒰𑒞𑒯 𑒏𑒲? 𑒖𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒩 𑒔𑒩𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒢𑒹 𑒦 𑒖𑒰𑒋? 𑒖𑒰𑒥𑒹 𑒞𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒏𑒰𑒞𑒲, 𑒣𑒹𑒙𑒣𑒼𑒮𑒳𑒂 𑒂 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒠𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒦𑒏 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒩 𑒔𑒩𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒢𑒹 𑒯𑒼𑒞 𑒞𑒰𑒥𑒹 𑒞𑒏 𑒄 𑒮𑒦 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒹 𑒒𑒴𑒢 𑒖𑒹𑒏𑒰 𑒐𑒼𑒐𑒪𑒰 𑒏𑒻 𑒐𑒰𑒃𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒲?

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

२.११. 𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒰𑒧𑒞- 𑒞𑒲𑒢 𑒙𑒰 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰



लाल देव कामत

तीन टा पोथीक समीक्षा

१

प्रक्रियाधीन सामाजिक परिवर्तन' क स्वर

मैथिली साहित्यमे राजनीति शास्त्रीय आ मनोवैज्ञानिक साहित्य क' रचना कम देखल जाइत अछि। आजुक परिवेश मेँ एकछाहा निरक्षरता वा कहि सकैत छी अक्षरता लिखिवाक बाढि आयल छैक। पद्दके वनिस्पत गद्य लेखन काज कम भ' रहलैक हन्। एहि यथनसारिक छिड़ियावैत आत्मकथा, निबन्ध, यात्रा प्रसंग, कथा संग्रह आ प्रेरक संस्मरणमे दिस उन्मुख रहैत श्री **रवीन्द्र नारायण मिश्र** जी एगारह गोट उपन्यास धरि प्रकाशित कए चुकल छथि। हालहिमे हुनक **"बदल रहल अछि सभ किछु"** मैथिली उपन्यास पढलौंह जेकर ओ स्वयं लेखक आ प्रकाशक छथि। एहि पोथी मेँ १३२ टा पन्ना अछि। निमिन कागतमे छपल पोथीके सरकारी आइएसवी एन प्राप्त भेल छैक आ २५० टाका दामधरि निर्धारण कयने छथि। १४ अप्रैल २०२२ कें ग्रेटर नोएडा

(३०५१०) दिल्ली एनसीआर प्रक्षेत्र सँ छपल एहि पोथीके ओ अपन पितामह स्व० श्रीशरण मिश्र जीके स्मृतिमे समर्पण करने छथि।पोथीक मादे पाठक कैं अपन रचना सभक विषयमे सेहो कहने छथिन जे "ई- पत्रिका विदेह" मेँ नियमित अभैत रहलाह हन्। चर आवरण रंगील गत्ताक विषयमे पृथक सँ जनतव देलन्हि, जे पौत्री काश्वी दिशिसँ दिवाल पर उकेरल गेल चित्र थिकैन्हि।हिनिकर पूर्व प्रकाशित उपन्यास विधामे यथा-: नमस्तस्यै, महराज, लजकोटर, सीमाक ओहिपार , मातृभूमि , स्वप्नलोक, शंखनाद, ढहैत देवाल, हम आबि रहल छी, प्रलयक प्रात, बीति गेल समय, प्रतिबिम्ब आओर सद्य:प्रकाशित नव उपन्यास ' बदलि रहल अछि सभ किछु ' छन्हि। हिन्दी आ अंग्रेजी मेँ सेहो पुस्तकक रचना कतेको भेल छन्हि, जे इन्टरनेट पर उपलब्ध छैक। एहिमे पाठककेँ राजनीति दलक नेताक आन्तरिक चरित्र आ व्यवहारिक चरित्रमे जे अन्तर छैक तेकर ठेह भेटैत च। कुल ३४ टा पाठके एकसुरमे गहीर अभिरुचि केर संग पढल जा सकैत छै।ओना मैथिलीमे पाठकक आब अकाल अछि। तेँ पत्र_ पत्रिकाक संगहि स्तरीय पोथीक किनिनिहार लोक आ संस्था कमसम देखार छथि। बहुत परिपक्व पाठक पोथी समीक्षा पढि - गमि नव पोथी किनिमे प्रकाशन आ दोकानदार पहुँचैत छथि।एखन राजनीति जे बिहारक चलैत आछि से पुर्णतः राजनीतिज्ञ क' आगू- पाछू घुमैत अछि।तेँ मेँ समाजक लोकके समय आ परिश्रम सेहो जाइत छैन्।संतोषक फल भेटैत छन्हि संरक्षक सँ प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ संरक्षण।रहस्यमय स्थितिकि राज बनाकय उपयोग करैत जे नायक कार्यकर्ता ओ लठैत - समांग बनाकय पोसने रहैत ; अपना पाँछा टकौने रहैत छथि, सयह पैघौत बनल देखाइछ। मुदा जहिना उदय भेलासन्ता सूरजो कमतर होइछ, तहिना स्थापित नेताजी कैं समयक सँग परिस्थिति भोगय पडैत छैक। प्रस्तुत उपन्यासक कथ्य, भाव-भंगिमा क' नाप शीर्षस्थ उत्कर्ष धरि पहुँचल छैक।आधुनि समकालीन उपन्यासकार हेतुकर हा जे "ककरा ल अराजव हे !" मेँ क्षेत्रीय निम्नता

_પંચકોશી, દક્ષિણાહા આ આદૌસક પ્રયોગ કએને છથિ, ઓહિઠામ નરેન્દ્ર નારાયણ મિશ્ર જીક સ્થાન શક્તિપુરમ આ એજિયપુરમ સન ભારતમે પ્રચલિત દક્ષિણ ઈલાકાક નામ મુન્દ્રેક કએલનિ અછિ।દિહાતી મરટુઆર-વપટુઆર અબોધ બાલિકા' ક ભરણ- પોષણ ઓકર મામાજી અપના ગામમે કરૈત બી ૯ વર્ષ પઢવૈત છૈક।એક પ્રતાપી નેતાજી કેઁ ઓ બાલિકા કેર મામૂજી ઓહિઠામક અવરજાત રહૈત છૈક। સે હુનક ગહકી નજૈર અવશ્ય પડ઼લ છલૈક, તેઁ સુઝાવ દૈત છૈક જે એકરા વિયાહક ચિન્તા એખન નૈ કરૂ। હમરા ડેરા પર રહલાસઁ લને અવસરૌક।ઓતય નીક જકાઁ ઓરિયાઉન ક' સંગહિ નોકરી ચરા દેવૈન।ઓહિ સઁ કથા-સંબંધ પૈઘ ઘર-વરમે આસાન સઁ ભ' જાયત। મુદા હુનકા હૃદયમે કિછુ દોસર ભાવ ઉમરૈત રહૈક।આને કિછુ લોકસભ સંદીપજી સેહો ઓહના ગેલાહ નેતાજીક સંગ। ઉપન્યાસ' ક પાઠક પઢૈતકાલ આરમ્ભે મેં વાસ્તવિક જીવનગતિ અનુભવ કરૈત સંભવત: સ્વ૦ રેલમંત્રી લલિત નારાયણ મિશ્ર જીકે બમ હત્યાકાંડ આ સ્વ૦ પ્રધાનમંત્રી રાજીવ ગાંધી જીકે મૃત્યુ બમવિસ્ફોટ કાંડ , મંચ પરહક દૃશ્ય સઁ ભયાક્રાન્ત ભ' ઉઠૈત હોયથિ।ઓના આગૂ જે દૃષ્ટાંત બેટૈછ નેતાજીક પત્નિ મહિમાક ' રાજ્યપ્રમુખ બનૈત ઘરી સ્વત: વાસ્તવિક જીવનમે બિહાર' ક એક મુખ્યમંત્રી જીકે ધર્મપત્નિ મોન પડ઼ૈત જે હો પંચ દીર્ઘ કથા ક' વિસ્તાર પબૈત ઈ સામાજિક ઉપન્યાસ એક રાજનીતિક ષડયન્ત્ર ક ' નજારા વડ઼ા જૈમકેઁ દેખબૈમે સમર્થ ભેલ છૈઈ।

નવતુરિયા લોકનીક રાજનીતિક દલ ગઠન હોઈછ-જનક્રાંતિ દલ। એહિ દલક હમ ' શબ્દ' સઁ તાત્પર્ય અછિ- લેખક સ્વયં , જે કદાચિત લેખકક હૃદયમે બસૈત અછિ। શક્તિનાથ આ સંદીપ કેઁ સંગ પુરૈત નારી નિકેતન સઁ ભાગિ પરાયલ શિખા પ્રમુખ પાત્ર રહૈત છથીન।ઓમ્હર સમગ્ર વિકાસ દલક રાજ્યપ્રમુખ નેતાજીક સબ તરહેઁ ચલતી રહૈત છૈન।એક તરહેઁ અન્તરરાષ્ટ્રીય તસ્કરી ગિરોહ ' ક પરોક્ષ સમર્થન રહૈત છૈન। નારી નિકેતનક અપના ઇચ્છા સઁ અનૈતિક પ્રયોગ કરૈત છથિ।પાઁચટા મૂશદણ્ડ નજી લઠૈત સદા હરદમ અપને છાહ જેકાઁ કાજ આવૈ છૈન।સરાયિ ગામમે શીખા નહિં બેટૈત છૈક મુસકદણ્ડ સવકે।વિકટ સ્થિતિ હિલૈત જહન આજીવન કારાવાસ ભોગય છથિ, તઁ પત્નીક

सहारे पार्टीक तागैत अपने लग राखै छथि।ओहि अपरायी मुसदम्डक दखलंदाजी सँ त्रस्त होइत, हृदय परिवर्तन होय छैन महिमा जीके।आ ओ संदीप सँ जे पहिल पूर्व परायित कार्यकर्त्ता नेताजीक रहनि, एसकरे भोट करय आबि जाइ छथिन। ताहि सँ पुर्ववर्नी अपना पद सँ त्याग -पत्र देवाक जनतव मीडिया कें सेहो द' देने रहै छथीन्ह।आब विपक्षीक तागैत शिप्पाजीक नेतृत्वकल सँ एतेक वढैत छन्हि जे वाजियोत्सव मनावैत योग्य होइछ।पाँचटा सीट मात्र निर्दलीय उम्मीदवार जीतै छैक, सेहो वयह जे हिनिका अपनहि पार्टीक असंतुष्ट टिकिट वंचित क्रान्तिकारी छथि।राज शासनक सव प्रत्याशी हारि गेलै, कारण दू गुट वनल छलैक आ मतदाता' क वीच सेहो छवि धूमिल भेल रहैक।स्वेत वस्त्रधारी आब गुलावि परिधान मे प्रतिनिधि सभाक वैसारमे आवि अपना जगह पर स्वयं नँय वनि श्री शक्तिनाथ कें फूलमाल लधैत राज्य प्रमुख मनोनीत करैत सत्ता सोपलाह। एहि स्वेच्छाचारिता ल समर्थक जनता लोकनि जिन्दावाद नाराक जयघोष करैत रहल। चुनावी राजनीति समयमे महिमाजीक पार्टीक किछु असंतुष्ट नेता आ कार्यकर्त्ता जे अलग गुट वनाकय पार्टीक प्रतिष्ठा मलीन करैत भट्ठा वैसा देलकैक, ताहि गुटक नामयारी लेखक महोदय नै क' सकलाह।आओर नेताजीक सुभ संज्ञा सेहो किछु राख्ख सकै छलाह। श्री मिश्र जीक उपन्यास लेखन शैलीक हम कायल छी, किछु एहनसन पाँति द्रष्टव्य अछि-:

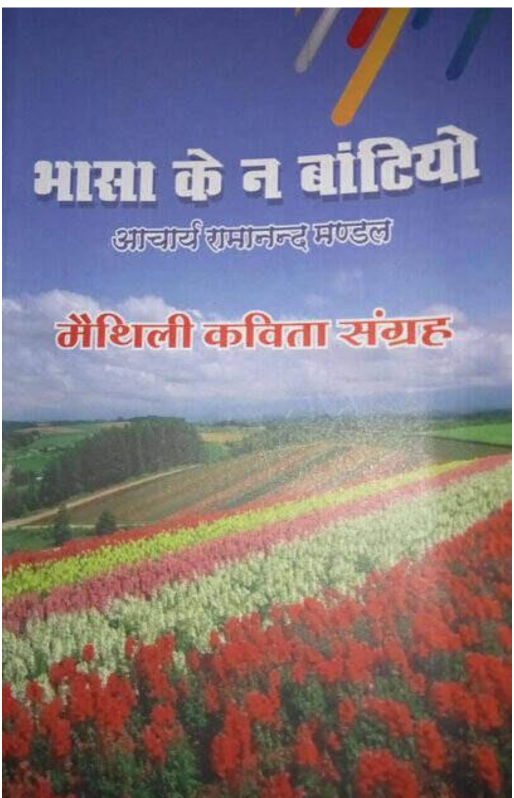
सरकारी घोषणा सँ जनता वहुत खुस रहय।मासे-मासे पानि विजलीक विल नहि देवय पड़ैक। मासमे दू वेर कलीक कलि मंगनीमे राशन भेटि जाइक। सभ अपन-अपन दरवाजा पर तास खेलाए, भोजन करए आ सांझ पड़तहि सुति रहए। पृष्ठ-११० सँ उधृत।

उपन्यासमे दू दलक उपरयढ़ , पुलिसिया कार्रवाई , हवाई जहाज यात्रा , अस्पतालक दृश्य, सीवीआई जांच , माननीय उच्च अदालत केर निष्कर्ष रोचक लगल।आब २० साल सँ वेसयि राज्य करैत सभै खप गेलैक।समाजक अनुकूल वातावरण सृजन भेलैक, जाहि सँ वालिका सव डाक्टर, इंजिनियर

वर्ग रहैछ। सर्व जातीय एकता बढ़ए आ सामुहिक भोजमे- उत्सवमे समरसता देखए जाइछ। ज्ञानपरिन सबजाना हुअ छाबै आ शिक्षाक त्याग सँ हुनक स्वप्न साकार होइत गेलैक।एहि तरहेँ सामाजिक परिवर्तन सतत् साकारात्मक दृष्टि बढैत जेना सभ बुझाया। सामाजिक सद्भावना सभ जतन-जतन करैत करथि तँ आप्सनि एक नहिन्न शब्द -चलैबेत - चलैबत अवश्ये शिष्याजी करथि।

२

मथिलिमे मांगैन प्रवास छइ!



ળગાત ળનની માય઼ મથિિલ ઉત્સ્થ ળાનકી' ક પત્પ્રાય઼વ઼ાચી નામે ળે ળિલ અછિ , અતિ શ્નયાન્વ઼તિ નુપેઁ તૈ સીતામઢી સઁ યત્યતિ નામ ઉત્રૈત આય઼લ અછિ **આચાત્ય઼ ત્રામાનંદ મંડલક** । મૈથિલી ભાષા' ક કવ઼િ શ્ની મંડલ ળીક હાલહિ એક નવ઼ પોથી કેઁ મથિિલ સમાળ ટ્નસ્ટ - દિલ્લી, પ્નકાશિત કેલક અછિ। એહિ કવ઼િતા સંગ્નહ **"ભાસા કે ન વાંટિયૌ"** ૯૮ પૃષ્ટક પોથી કેઁ આદ્યોપાન્ત પઢલા મનલગૂ વ઼િષિય઼ સવ પાઠક કેઁ સદ્ય઼પ્નકાશિત એ ૮૭ ગોટ નવ઼ કાવ્ય઼મે સવ ત્નસક ત્નસાસ્વ઼ાદન કત્નૈત, અનેક તત્હક અનુભવ઼ સેહો પ્નાપ્ત હેતન્હિ। સીમાવ઼ત્તી ક્ષેત્નક ત્નહવ઼ાસકિ મૈથિલી ભાષા મેઁ નેપાલક વ઼ળ્ળિકા ટોન દેખાઇછ। ય઼થા - મથિિલ મે કી છઇ ? મથિિલ મે સીતા છઇ! સીતા' ક ળનમ અસથાન છઇ! મથિિલ મે નદી આ પોખત્ન એઇ! પાન માછ આ મખાન છઇ ! મથિિલ મે દત્નભંગા ત્નાળ છઇ ! લાલ - લાલ મકાન છઇ! મથિિલ મે ત્નાળકવ઼િ વ઼િદ્ય઼ાપતિ છઇ! મથિિલ મે મંગૈન ખવ઼ાસ છઇ ! પયગાછિયા ઘત્નાના કે ત્નાગ છઇ! મથિિલ મે ભાત્નતી આ મંડન છઇ! સુગ્ગા પઢ઼ૈત પુત્નાન છઇ! મથિિલ મે અય઼ાચી છઇ! પત્નસૌત કલિય઼ાની માય઼ મહાન છઇ! ત્નચના મે માટિ કે સૌંઘ છઇ ! મથિિલ મે શહીદ ત્નામસ્થલ મંડલ છઇ! દેસ લેલ સહાદત મહાન છઇ ! મથિિલ મે પાગ છઇ ! પગડ઼ી છઇ! મથિિલ કે શાન છઇ! ત્નામા મથિિલ મહાન છઇ !!

એહિ વ઼િશિષ્ટિ શૈલીક ભાષાક ઉપભાષા , વોલી - વ઼ાત્નીક માનક કેત્ન શ્રેત્નમે કછિ લોક આગ્રહ સઁ ત્નહૈત અય઼લાહ હેતા। પત્નંચ તાહિ સઁ માતૃભાષા અનુત્નાગી સમસ્ત લોક વોચ સાત્વ઼ળનિકતા મેઁ સંકોત્નમતા શ્રેઁટેક કાળ માનલ ળાઇછ। આના ભાષાક માનકીકત્નમ કત્નય઼ વાલા કિય઼ો કે હોય઼ છથિ? ળહેન માય઼ક મુખાત્નવ઼િન્દ સઁ નકિલલ વ઼ાત્નીકેઁ નાન્હિટા સઁ વય઼ય઼ા સુનૈત - સપ્પૈત આગૂ વઢૈત અપના પત્નવ઼િશ મેઁ અપન ગપ્પ સઁ આગાલ મૈગ પત્ન ત્નહલ લોક કેઁ તથ્ય઼ વ઼ુઝૈનાઇ મે સક્ષલ હોઇત છૈક। તખન ઇ તાતિમ્હા ઠાઢ કત્નવાક કોન કાળ? ગ્નાયિત્નસન સત્નવેમે માનલની ળે મૈથિલી ભાષા આતિમે વાભનકે નહિ ત્નહની। હુનક ભાષા સંસ્કૃત આ લોકવાત્ની વ઼ાદમે અવ઼હટ્ટ ત્નહની, ળાહિમે વ઼િદ્ય઼ાપતિ ળીક ત્નચના પ્નમાત્નમતિ નુપેઁ છન્હિ। મથિિલ ક' સોલ્હકન સમાળક ળે ભાષા વોલી ત્નહય઼ સયહ મૈથિલી

થીક। એહિ નારળો નાળિ માન્યતા ન્દૈન શાસકીય સ્તર પર મહત્વ વઢઉ નૈક। સન્વે મે રહો જેટઉની મિથિળિ' ક વાસી હિન્દૂ સમાળ વીય યૌદહો દેવાન પૂળઉ ળાર્ક। કોનૂ - કોનૂ વ્યક્તિ ળાતિ આ વન્ગમે એકહુટા દેવી દેવતા આ ઈષ્ટ ગુનૂકેં નૂપમે ભગવાન્ ભગવતી આનાય્ય દેવ નૈત આયઉ છૈક। ઘનક અન્થાત્ ગહ્વનમે એકટા દેવાન નુપમે ' સાહેવ ખ્વાસ ' ક ' પૂળા ભાવ સેહો હોરા નહઉ છૈક। એક ગોસાઈ ઘનક ભગત મુહેઁ ભાવ ખેઉત, વાક્ દૈત સુનઉ અછિ - "હો સેવક! તો સવ ખ્વાસ શવ્દક પૈઘૌત ખૂવ માનૈત અયઉહ। ળે પહિઉ સમયમે ખ્વાસ નહિ સમ્વોયન કનેય તઁ માનિ ખ્વાએ છઉ આ આવ ળૌ ઓહિ વંશળકે કયિો ઉકનકિ ખ્વાશ કહ્વહ્ક તઁ માનિ ઓકના હાથે ખેવેટા કનવહ। આળાદીક વાદ ળમાના ઉનૈટ ગેઉક। ઓના સમાળમે ળે દયિાદિ પૈઘ સંખ્યાઁમે નૈત અછિ, સે અઉપ દયિાદિ વાઉકે સુટવૈત મોળન નહીં દૈત, ઉપેક્ષા કનય સઁ વાળ નૈ અવૈછ। ભાનતીય સંવિયાન ક' નાષ્ટ્નીય સ્વીક઼ૃત ઉક્ષ્ય ય - સમાનતા। મુદા અસમાનતા ભનઉ છૈક। સામાળકિ ન્યાયકે ળગહ સામાળકિ અન્યાય મયઉ છૈકાતૈં કવિન મહોદય અપન પાઁતિ સઁ મુખ્ન ભ' કવિતિયાના ક' અળસ્ત્ન સ્નોત વહેને છથિ। યથા :-

સંસ્ક઼ૃત મે ઉખ્યાર અ શતપથ વનામ્હન।
હિન્દી મે ઉખ્યાર અ યતુની યમાન ॥
મૈથિઉ મે ઉખ્યાર અ સતિયિ યનુકારન।
ઉખ્યિવાઉ છરથ વન્યસ્વવાદી નયનાકાનગાન॥
વન્યસ્વવાદી કે સનમાન દઉતિ કે અપમાન।
સભ ગ્નન્થન મે હ્ય વન્યસ્વવાદી કે ગુનગાન॥
દઉતિ ઉપેક્ષતિ કે હેય કરઉન અપમાન।
દઉતિ ઉપેક્ષતિ કન ળોનિ કે કનશ પ્નજૂગાન॥
તએ વો દઉતિ ઉપેક્ષતિ કે કનશ હૈય ગુમ્મગાન!

આરયો સમાળ મે પૂળઉ ળાર વિભિદકગાન!! કવિ ળીક તાત્પન્ય છન્હિ ઓળકો તથિ મેં ઉક ખ્યાસ વનય યાહૈત છૈક। ખ્યાસ શવ્દક પન્યાયવાયી નૂપમે ખ્વાસ

𑒢𑒯𑒱𑒞𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱 𑒌 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒏𑓂𑒩𑓐-𑓖𑓘 𑒬𑒲𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒣𑒰𑒚 "𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒮" 𑒧𑒹𑒿 𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒨𑒟𑒰
-: 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒮 𑒕𑒲, 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒮 𑒕𑒲।
𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒕𑒲, 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒮 𑒕𑒲।
𑒮𑒰𑒡𑒴 - 𑒮𑓀𑒞 𑒕𑒲 , 𑒄𑒬𑓂𑒫𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒮 𑒕𑒲।
𑒯𑒢𑒳𑒧𑒰𑒢 𑒕𑒲, 𑒩𑒰𑒧𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒮 𑒕𑒲।
𑒮𑓀𑒞 𑒞𑒳𑒪𑒮𑒲 𑒕𑒲 , 𑒩𑒰𑒧𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒮 𑒕𑒲।
𑒅𑒑𑒢𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒕𑒲 , 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒏' 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒮 𑒕𑒲।
𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒧𑒹 , 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒧𑒹 , 𑒂𑒃𑒨𑒢𑒱 𑒥𑒯𑒳𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒏 𑒂𑒥𑒰𑒠𑒲 𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒏' 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒯𑒩 𑒮𑓂𑒞𑒩 𑒣𑒩 𑒅𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒂 𑒠𑒼𑒯𑒝- 𑒬𑒼𑒭𑒝 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒏। 𑒮𑒦𑒰 𑒮𑒼𑒮𑒰𑒨𑒙𑒲 𑒏' 𑒦𑒲𑒛𑓃𑒏 𑒯𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒥𑒻𑒏𑒫𑒰𑒩𑓂𑒛 𑒏' 𑒥𑒼𑒡 𑒧𑓀𑒔𑒏 𑒬𑒼𑒦𑒰 𑒥𑒜𑒥𑒻𑒞 𑒂𑒩𑒫𑒰𑒩𑓂𑒛 𑒏𑒻𑒿 𑒮𑒔𑒹𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒧𑒹 𑒏𑒫𑒱𑒨𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒨 𑒅𑒚𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱 𑒠𑓂𑒩𑒭𑓂𑒙𑒫𑓂𑒨 𑒁𑒕𑒱-:
𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒏𑒹 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒲, 𑒯𑒧𑓂𑒧𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒴𑓀।
𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒏𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒪𑒲, 𑒯𑒧𑓂𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒴।
𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒏𑒹 𑒖𑒰𑒢𑒪𑒲, 𑒯𑒧𑓂𑒧𑒩 𑒖𑒰𑒢𑒴।
𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒏𑒹 𑒣𑒜𑒪𑒲, 𑒯𑒧𑓂𑒧𑒩 𑒣𑒜𑒴।
𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒏𑒹 𑒣𑒳𑒖𑒪𑒲, 𑒯𑒧𑓂𑒧𑒩 𑒣𑒳𑒖𑒴।
𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒏𑒹 𑒑𑒰𑒩𑒪𑒲, 𑒯𑒧𑓂𑒧𑒩 𑒑𑒰𑒅।

𑓓
𑒬𑒹𑒭 𑒨𑒳𑒠𑓂𑒡 " 𑒖𑒲𑒫𑒙𑒣𑒢" 𑒏𑒹𑒩 𑒢𑒰𑒧 𑒟𑒲𑒏!



𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒼𑓐 (𑒛𑒰𑓐) 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒩𑒰𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒖𑒲𑒏 𑒮𑒠𑓂𑒨𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒪𑒒𑒳 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 "𑒬𑒹𑒭 𑒨𑒳𑒠𑓂𑒡" 𑒋𑒏 𑒫𑒱𑒏𑒙 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒌𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮𑒱𑒏 𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒟𑒲𑒏। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒮𑒿 𑒋𑒧𑓐𑒋𑓐𑒂 𑒣𑒲 𑒋𑒔 𑒛𑒲 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒩𑒰𑒧𑒖𑒲 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒏𑒳𑒪𑒣𑒞𑒱, 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒧𑒹𑒿 𑒩𑒯𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒟𑒱।𑒍 𑒋𑒧 𑒋𑒪 𑒙𑒲 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖 𑒮𑒯𑒩𑒮𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒯𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒬𑒹𑒭 𑒨𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒏𑒧𑒱𑒞 𑓕𑓕𑓐 𑒙𑒰𑒏𑒰, 𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑓑𑓑𑓒 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒩𑒝 𑓒𑓐𑓒𑓐 𑒄𑓐 ; 𑒮𑒩𑒮𑓂𑒫𑒞𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒮 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒮𑒿 𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒂 𑒏𑒫𑒱𑒪𑒣𑒳𑒩 𑒪𑒯𑒹𑒩𑒱𑒨𑒰𑒮𑒩𑒰𑒨 (𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰) 𑒏𑒹𑒩 𑒁𑒖𑒰𑒭𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢 𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒩𑒰𑒋𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒋𑒏 𑒥𑒠𑒢𑒰𑒧 𑒬𑒥𑓂𑒠 ' 𑒏𑒼𑒩𑒼𑒢𑒰' 𑒮𑓀𑒠𑒩𑓂𑒦𑒧𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒄 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒖𑒲𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒨 𑒧𑒾𑒪𑒱𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒫𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒏𑒟𑒰 𑒣𑒩𑒱𑒡𑒱-𑓑𑓙𑓘𑓗, 𑒧𑒹𑒒 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒂𑒏𑒰𑒬 𑓒𑓐𑓑𑓑 𑒕𑒣𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒩𑒯𑒢𑒱। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒪𑒼𑒏 𑒢𑒰𑒙𑓂𑒨- (𑒂𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰 𑓒𑓐𑓑𑓐) 𑒂 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑒩𑒼𑒩𑒳𑒯 -𑓒𑓐𑓑𑓒 𑒣𑓂𑒩𑒥𑓀𑒡 𑒢𑒱𑒥𑓀𑒡 𑒫𑒱𑒡𑒰𑒏𑒹 𑒁𑒞𑒱𑒩𑒱𑒏𑓂𑒞 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒏' 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒞𑒵𑒞 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮 - 𑓒𑓐𑓑𑓙 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒣𑒩𑒧𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒣𑒯𑒔𑒰𑒢𑒏𑒩 𑒥𑒲𑒔 𑒔𑒼𑒙𑒲𑒏'

𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒼𑓐 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒩𑒰𑒧 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢- 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒢𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒂 𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒮𑒵𑒖𑒢𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒱𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒮𑒿 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒮𑒯𑒦𑒰𑒑𑒱𑒞𑒰 𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒲𑒨 - 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒮𑓀𑒑𑒼𑒭𑓂𑒚𑒲 𑒏' 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒐𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒂𑒍𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒣𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒡𑒱𑒫𑒹𑒬𑒢𑒧𑒹 𑒧𑒖𑒱𑒯𑒩 𑒖𑒰𑒨 𑒧𑒳𑒐𑒩 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒏𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿, 𑒋𑒏 𑒥𑒠𑒢𑒰𑒧 𑒬𑒥𑓂𑒠 "𑒏𑒼𑒫𑒲𑒛-𑓑𑓙" 𑒣𑒩 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒏𑒪𑒧 𑒖𑒹 𑒔𑒪𑒪𑒢𑒱 𑒮𑒹 𑒋𑒏 𑒪𑒒𑒳 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒮𑒼𑒗𑒰 𑒂𑒨𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒠𑒴 𑒮𑒰𑒪 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒯𑒱𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒏𑒹𑒿 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒂𑒢𑒱 𑒁𑒏𑒰𑒢𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒑𑒴𑒿𑒖 𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒢 𑒔𑒩𑒰 𑒥𑒯𑒱𑒩𑒮𑒢 𑒦' 𑒖𑒰𑒃𑒕 । 𑒏𑒼𑒩𑒼𑒢𑒰 𑒫𑒰𑒃𑒩𑒮 𑒮𑒢 𑒫𑒻𑒬𑓂𑒫𑒱𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒂𑒄 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩 𑒦𑒩𑒱𑒧𑒹 𑒣𑒮𑒩𑒪 𑒂 𑒞𑒏𑒩 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒰𑒢 𑒪 𑒫𑒻𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒙𑒲𑒏𑒰 𑒁𑒫𑒱𑒭𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒨 𑒮𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒮𑒳𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒏' 𑒅𑒣𑒰𑒨 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒃 𑒞𑒾𑒛𑓃𑒣𑒩 𑒮𑒼𑒗𑒰 𑒂𑒢𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻𑒢 ; 𑒖𑒻 𑒮𑒿 𑒂𑒥 𑒔𑒻𑒢𑒏 𑒮𑒰𑓀𑒮 𑒦𑒹𑒙 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒏।

𑒔𑒲𑒢𑒏 𑒫𑒳𑒯𑒰𑒢 𑒬𑒯𑒩 𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧𑒞𑒨𑒰 𑒄 𑒕𑒳𑒂𑒕𑒴𑒞 𑒩𑒼𑒑 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒪 , 𑒖𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨𑓁 𑒮𑒥 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒬𑒧𑒹 𑒞𑓂𑒫𑒩𑒲𑒞 𑒑𑒞𑒱𑒨𑒹 𑒫𑒰𑒨𑒳 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒣𑒮𑒩𑒪। 𑒋𑒯𑒱 𑒩𑒼𑒑 𑒏𑒹𑒩 𑒪𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒠𑒹𑒐 𑒞𑒞𑓂𑒏𑒰𑒪 𑒥𑒔𑒰𑒍𑒏 𑒞𑒩𑒲𑒏𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒨𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒜𑒛𑒱𑒑𑒰𑒩 𑒪𑒼𑒏 𑒢𑒱𑒨𑒧 𑒣𑒰𑒪𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒟𑒰 𑒬𑒱𑒟𑒱𑒪𑒞𑒰 𑒥𑒩𑒞𑒻𑒏 𑒮𑒿 𑒃𑒞𑒩 𑒁𑒏𑒛𑓃𑒣𑒢 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒫𑒻 𑒖𑒹 𑒁𑒟𑒰𑒯 𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒩𑒯𑒻𑒏। 𑒞𑒻𑒨𑒼 𑒮𑒥 𑒮𑒧𑒳𑒠𑒰𑒨 𑒂 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏𑒹 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒑𑒝 𑒁𑒣𑒢𑒰 -𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 𑒮𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒑𑒩𑒴𑒏𑒞𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒾𑒪𑒢𑒱। 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒫𑒩𑓂𑒭𑒏𑒹 𑒨𑒬𑒮𑓂𑒫𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒡𑒰𑒢𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒢𑒩𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒦𑒰𑒃 𑒧𑒼𑒠𑒲 𑒖𑒲 𑒮𑒥 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒯𑒟𑒏𑓀𑒛𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒫𑒻𑒞 𑒖𑒢 𑒖𑒰𑒑𑒩𑒝 𑒏𑒩𑒻𑒞𑒹 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒯। 𑒋𑒯𑒱 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒏𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒞 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒲 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒖𑒳𑒙𑒪𑒰𑒯 𑒮𑒹 𑒁𑒠𑒧𑓂𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒮𑒏' 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒨𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒲𑒧𑒹 𑒛𑒰𑒏𑓂𑒙𑒩 - 𑒢𑒩𑓂𑒮 𑒂 𑒮𑒯𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒮𑓂𑒙𑒰𑒤 𑒫𑒻𑒩𑒱𑒨𑒱𑒩 𑒑𑒖𑒥𑒏𑒹 𑒮𑒰𑒯𑒮 𑒂 𑒖𑒲𑒫𑒙𑒣𑒢 𑒠𑒹𑒐𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒥𑒰𑒫𑒞 𑒍𑒯𑒱 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒏 𑒂𑒏𑒪𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒋𑒏 𑒢𑒲𑒧𑒢 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒏' 𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒁𑒪𑒥𑒞 𑒁𑒫𑒱𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝𑒲𑒨 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏। 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒩𑒼𑒔𑒏𑒞𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒣𑒜𑓃𑒪 𑒖𑒰𑒋 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒧𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒔𑒪𑒱𑒞 𑒪𑒼𑒏𑒼𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒂 𑒁𑒧𑒩 𑒫𑒰𑒝𑒲 𑒋𑒯𑒱 𑒩𑒳𑒣𑒹𑒿 𑒖𑒑𑒯 - 𑒖𑒑𑒯 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒻𑒏। 𑒨𑒟𑒰 - 𑒢𑒰𑒬𑒹 𑒏𑒰𑒪 𑒫𑒱𑒢𑒰𑒬𑒹 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱, 𑒧𑒰𑒩𑒰 𑒏𑒱𑒧 𑒥𑒣𑒩𑒰𑒯𑒩𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒲, 𑒋𑒮𑒑𑒩 𑒫𑒵𑒯𑒮𑓂𑒣𑒞𑒱𑒨𑒼 𑒗𑒴𑒚, 𑒅𑒢𑒙𑒰 𑒔𑒼𑒩 𑒏𑒼𑒞𑒫𑒰𑒪𑒏𑒹 𑒛𑒰𑓀𑒙𑒨, 𑒥𑒩 - 𑒥𑒩 𑒒𑒼𑒛𑓃𑒲

જાસઉ ળાએ - નઙ઼હિ ઘોડ઼ી કહ્ય઼ કળેક પાર્નિ, સાદા ળીવ઼ન ઉચ્ચ વ઼ચિાર,
વહુળન હિતાય઼ વહુળન સુખ્ખાય઼, વસુધૈવ઼ કુટુંવકમ્ । ગૌસ્વ઼ામી ળીક સંદેશ -:
ઈશ્વ઼ર અંસ ળીવ઼ અવ઼ગિાસી।
ચેતન અમલ સહળ સુખ્ખ રાસી।।
કવ઼તિયાનામે ઉપન્ય઼ાસકાર મહોદય઼ ગવૈત છથિ-
માઈ હે! કોરોનાક કહર કહઌ ને ળાય઼
દોહા -: કોરોના કાલ નહિ મહાકાલ થકિ!
લોકક ળીવ઼નક લેલ મહાળંળાલ થકિ!!
ળગત ચરાચરીક વ઼ગિાસક જૂયાલ થકિ!
વ઼શ્વિ઼ માનવ઼તા ' ક અભિસાપ થકિ!!
કોરોનાક મહામારી કેર વ઼યાઉ મેં લાગલ મહાપરાક્રમી કર્મીકે ય઼ાદ દયિ઼ાવૈત
અપનાકે મહાય઼ોદ્ધા સચ્ચિદ કરાય઼ લ હુનકા મહાકવ઼ વ઼હિારીક પાઁતિ સેહો સ્મરામ્ર
કરૈત દુઃખ્ખ આ અસસ્થલતા સ્થતિિ સઁ ઉવરાસ હોરક મનોવલ પ્રચાનતા દેખ્ખેલનિ
અછિ-:
" દઈ દઈ ક્ય઼ો કરાત હૈ , દઈ દઈ મીનહિીરા!
ળાપૈ સુખ્ખ ચાહત લિય઼ોઁ , તાકો દુખ્ખહિ ન ભેરી!!"
પોથીક એગારહો પાઠ ચરા પાઠકકે એ વ઼ષિય઼ મેં એક -એક પલ કોના માનવ઼ માત્રકે
વતિ રહલૈક આ આગૂક સમય઼ કોના ખ્ખેપલ ળાએ, સે ચનિ્તતિ રહૈત અપન લખ્ખન
કાર્ય઼મે પુરાન સ્લોક સંસ્કૃત મેં સેહો ઠામ - ઠામ પ્રય઼ોગ કય઼ને છથિ।
ળેનાકિ-:
ય઼દા ય઼દા હિ ધર્મસ્ય઼ ગ્લાનર્િભવ઼તિ ભારત।
અભ્યુસ્થાનમ ધર્મસ્ય઼ તદાત્માનં સૃળામ્ય઼હમ્।।
એહિ તરહેં દેખ્ખલ ળા સકૈછ -:
પરિત્રાણાય઼ સાધૂનાં વ઼ગિાશાય઼ ચ દુષ્કૃતામ્ ।
ધર્મસંસ્થાપનાર્થાય઼ સમ્ભવ઼ામિ યુગે - યુગે।।

गीता - रामायण, महाभारत मेँ वर्णित कर्मक तथ्यके एहिमे समेटने छथि।
जाहि सँ उपन्यास पढ़ैत काल आस्था प्रगाढ़ भ' उठैछ। यथा -:
कर्मप्रधान विश्वकरि राखा
जो जस करहि सो तस फल चाखा
जस करनी तस भोगहु ताता नरक जातपुनि क्यो पछताता
सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया:
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भागभवेत्
ईहाँ न लागए राउर माया
अछि वृथा न जाए देव - ऋषि वाणी
आब संस्कृत भाषा सँ समान्य पाठक दूर होइत जाइछ, से एहि उपन्यास ' शेष युद्ध ' केँ पढ़ैत घरि सहजे अभ्यास क' सकैत अछि -: कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा।
सर्वत्र मैथुन त्यागो ब्रह्मचर्य प्रचक्षते ॥
दोसर देखू -: दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम् ॥
असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम्।
अपरस्परसम्भूतं किमन्यत्कामहैतुकम ॥
एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः।
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः ॥
भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकार आत्मीय मे भिन्नता प्रकृतिरिष्टया ॥
एहि तरहेँ देखल जा सकैछ जे दुर्गासप्तशती सँ सेहो पाँति मोन पाड़लनि अछि

-:

जयन्ति मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते॥
उपन्यासकार ठीक' क पहिल ए वचिमे डेग उठलन्हि अछि, तेँ भाषल तँ नहिये छथि, परंच गाँथल वा गुथल प्रचलित देहाती शब्द केर जगह पर परोसल

नरसन्न शब्दक प्रयोग कयने छथि। अपन कविता जावें ए तरहें राजाराम प्रसाद जी पाँति गैयके मैला आँचलके अमर कथा शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु जीके शैलीकेँ जीवन्त रखलनि हिन्।

कोरोना जायत अपन कलकिपुर गाम।

जारती आँगन बनत मनोरम धाम॥

नव चेतन नव - विहान सँ देवकी होयत प्रयाण।

जन - जन करत राष्ट्र गुणगान।

सर्वधर्म समन्वय सँ सजग होयत उत्थान।

देवकी जन - लकमे नव अजायिनक होयत मान॥

आ करोना महायोद्धा लोकनिकेँ समर्पित करैत अपन उपन्यास मेँ सेहो कवि हृदय हुनक लागि गेल छन्हि। आब मूलभूत चर्चा करै सँ पूर्व जखन सुख शांति प्राप्ति पर ओ मगन भ' गावि रहलाह, से पाँति हिरसें मोन पड़ैत य -:

अयं निजः परोवेत्ति गणना लघु चेतसाम्।

उदार - चरितानां तु वसुधैव कुटुंवकम्॥

जहन कोनो समय संकट उपस्थित होइछ तँ सनातनधर्मी लोक थपरी पारनाइ, शंख फूकनाइ आ थारी बजौनाइ आदि काज करैछ। से दिनांक २२-३-२०२० केँ ५ मीनट धरि रविदिन साँझके ५ बजे जनता कर्फ्यू केर आगाज भेल। प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी जीके रेडियो पर "मन की बात" कार्यक्रममे जनतव सेहो देल गेलैक। भारत वर्षमे प्रथम चरण केँ २४ मार्च सँ २१दिन ले ९ मीनट तक दीप लेसकय मध्य रात्रि २९ मार्च ९ बजे रात्रि सँ शुरू रहैक। फेर द्वितीय चरणके ३ मई सँ २० मेई धरि आ पुनः घोषणा १४ -४-२० केँ माननीय मोदीजी जयनाद कयलन्हि। रोग बढैत गेल, मरल बढैत गेल। तेसर बेर फेरो लकडाउन के बढाओल गेल, जे ४ मई सँ १७ मई २०२० ई० तक दू सप्ताह लेल आदेश जारी भेलैक। १८-५-२० सँ ३१-५-२०२० तक १४ दिनक लेल प्रभावी लकडान रहल। जायर दिवाई नँय तावत् धरि ढिलाय नहीं!

सब नाना गामेगाम शहर-बजारधरि जोरसोर सँ चलल। चारिम १८- ५ सँ ३१ तारीख धरि दू सप्ताह लेल बढ़ाओल गेलैक। चारिम १ सितम्बर २० के निर्देश जारी भेलैक जाहिमे देशक विभिन्न राज्यमे आन्तरिक विशेष सुविधाक संग जारी भेलैक। अनलाक ८ जून २० सँ चालू भेल, २१ जून कें होयबाला छठा अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस कोरोना कें बलि चढ़ि गेल। १६ जुलाई सँ ३१ ता० तक लाकडाउन रहल। ई तिथि ऐतिहासिक महत्व के छैक जे कोरोना विषय पर शोध करनिहार शोधकर्तागण कें एहि उपन्यास सँ बहुत किछु ज्ञान भेटतनि।

कहल गेल छैक ' सेवा हि परमो धर्म:' से " वयं सेवा महे" भारत केर मिशन थीक - सेवा करब, परोपकारी होयबाहेतु गामक स्कूल, सार्वजनिक मकान मेँ गामक लोक जे प्रवासी शहर सँ कोरोना कालीन समयमे अपन गाम आयल तँ मास्क , चाह जलपै, साबुन सेनेटाइजर आ उगी- गमछा धरि मुखिया-वार्ड सदस्य के आपूर्ति करबाक आदेश वीडियो सँ भेटलैक। राहत कालमे अनियमितता करय वाला सब नेहाल भेल। जिला प्रशासन अनुमंडल कें , ओतुका अधिकारी अंचलमे अपन जिम्मा थोपलनि। एहि उपन्यास पढ़त काल इहो बात सब पाठक कें समक्ष आओत। कोरोना वायरस मास्कक आदत धरि सबके लगाके छोड़लक। नन्द विलास रायकें सेहो अपन मैथिली कथामे विनु मास्कके प्रहरी चेकपोस्ट लगा तैनात पुलिसकर्मीगणके मोटरसाइकिल सवार सँ मास्क नहि लगेबाक कारणे दण्ड ओसुलैत देखल नहि गेलैक। गाम आयल आगंतुक अतिथि कें लोक डराव केनाय छोड़िए देने रहय। आवश्यक काज सँ अल्प समयमे हाट बजारक काज निपटाबैक। बाईलोके नव जान पहचान छोड़ि, चिन्हारे लोक सँ सेहो लसधैर केर आशंकामे लोक सचेत रहथि।

एहनामे राज्य सरकार द्वारा सख्त घोषणा भेल रहैक - मृतकके दाह संस्कार मेँ मात्र ५० गोटे , आ वैवाहिक कार्यक्रम मेँ दूनू पक्ष सँ २० गोटे वर-वधू सहित भाग लेथि। हमरो कचोट य जे भातीजाक आदर्श विवाहमे हीत अपेक्षित कें बरात सिमोल नहि ल' जा सकलैह। जौं कदाचित कियो मोबाइल सँ ओटो खिचकय जिला प्रशासनमे विडियो वाइरल करैत तँ , समधीन जीके परेशानी बढ़ि जयतैन। खायर अडबगो ल' कें तँ जनेऊ उपनाइनमे पारघाट

નીકો સમયમે બદલિ જાઇછ। કોરોના મહામારી એક તરહ સઁ જીવનક રંગ મોડ઼ પર કહિયો ન કહિયો સમય અનુરૂપ સહજીવન સીખેબાક ક્રમમે સ્પષ્ટતા સ્વતઃ બઢૈત। માનવ જાતિક ભોગ કોરોના સમયમે ભોગલક સે અપન અનુભવ સઁ રાજારામ પ્રસાદ જી સન અનેકો લેખક એ જ્વલંત મુદ્દા પર સબ વિધામે ખૂબ રચના કયલ। પરંચ છપાઈ કેર સમસ્યા બહુત રાસ રહૈક।એહનામે 'પરિચય પ્રકાશ' કેર લેખન કાજ સ્વયં દીનાનાથ પ્રસાદ "જુવરાજ" અપન કવિતા ક' ટીકા કયલન્હિ, સે શ્રીક પ્રકાશન દરભંગા સબ તરહક યરા પાપડ઼ બેલનાઈ સીખ્યા છોડ઼ૈક છપાઈ કાલ। દોસર કોનૂ રચનાકાર યરા ખેલક લાગ્રપન સઁ કોનો સમયકે એહન ઉદાહરણ અનતિમે નઁય ય, જેહન કોરોના સમય વૃહદ રૂપેં યરા સાહિત્ય સૃજન ભેલ યા ઈ પોઝેટીવ વાત ભેલ પરંચ પોઝેટીવ હોય સઁ સબકે બઁચય પડ઼ૈક। રચહ વિનાશ લેલ કેર બીચ અદમ્ય સાહસક પરિચય દેલનિ મહાયોદ્ધા લોકનિ હુનક સંઘર્ષક દસ્તાન થીક ઈ પોથી। એહિ કૃતિકેં જહન -જહન પઢલ જાએત , રોમ-રોમ પુલકિત હોઇત રહત સે આસ જગૌત અછિ દેશ - વિદેશ, દોસર રાજ્ય નગર સઁ પ્રવાસી ચૈન્યક સઁગ અપન ગૃહ પહુઁચ કય આનન્દવાદ ગાબથિ-:

જનની જન્મ ભૂમશ્ચ સ્વર્ગાદપિ ગરીયસી!

- મો૦૭૬૩૧૩૮૦૭૬૧

અપન મંતવ્ય દિતોરિયલ઼સ્તાફ઼વિદેહા઼જીમેલ઼કોમ **પર પઠાઉ।**

𑓓 𑒣𑒠𑓂𑒨 𑒐𑒝𑓂𑒛

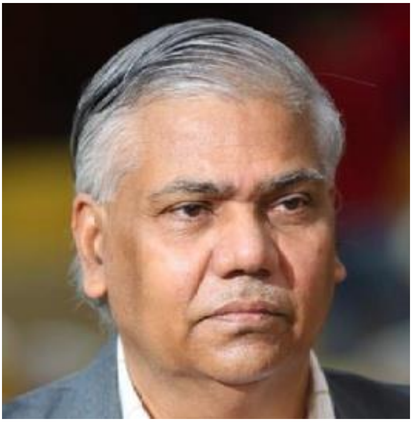
𑓓.𑓑𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒢𑒰𑒢𑒲

𑓓.𑓒𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒰𑒧𑒞- 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒨𑒝

𑓓.𑓓𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒫𑒻𑒠𑓂𑒨𑒢𑒰𑒟- 𑒑𑒖𑒪- 𑒂𑒬𑒰𑒨𑒰𑒩- "𑒩𑒖𑒢𑒲 𑒕𑒢𑓂𑒠"

𑓓.𑓔𑒛𑒺 𑒏𑒱𑒬𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩- 𑒯𑒻 𑒞𑒼𑒩𑒹 𑒢 𑒑𑒾𑒬𑓂𑒩𑒰 𑒕𑒨𑒱𑒬𑓂𑒩𑒯

𑒑𑒷𑒣𑒰𑒪 𑒏𑒱𑒬𑒷𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒢𑒰𑒩𑒲



નાળ કશિોન મશ્રિન, નટિાયર્ડ યીશ્ઠ ળેનનઉ મૈનેળન (ફ), વી(મુપ્યુાઉય)એઉએનએસ, દઙ્ઉી, ગામ -શ્રેપેન ડીહ, પોશ્રેપેન હાટ, મયુવની

નાની

મે સ્ૃષ્ટિ, શક્તિ નૂપ શ્રછિ ના ની ,
સન્વો ય્ય, વ઼િ યિ નિયના ક પ્યા ઢ઼ી।

ગુામ્ર શ્રો શી ઉ સઁ યમકૈત શ્રાનન,
કા નના- સિ ન પન શો જાિત કુન્તઉ

પતિ વ્નાતા ળા નકી, ગેઉી હ પ્નજુ ના મ સંગ વ઼ન મે,
ગા ન્ગી ઉગાઉી હ નક્ષત્ન સન, વ્નમ્હળ્સા ન ગગાન-મે।

દૌ ડ઼ઉી સા વ઼િત્ની, ળમના ળક દો શ્રાનિ,
સત્યવ઼ા ન્ ળી ગેઉથિ, ગેઉા ય઼મ હા નિ।

નાં ગના કેહેન વ઼ી, પના ક્નમી ,

છઊ હ, હાઁ સી ક ના ણી ?
શૌ ન્યક શ્રનગાણ િ- ણા ની
। રુા િહ સ મે શ્રછ િકહા ણી

ક પ િશ્રહ િવા ી વણ િક઼' સ િનેહ,
શ િસુ ઊઊ મા ए, મમ ા ક ગેહ।

વુદ્ય િ, પના ક્નમ, શૌ ન્ય, વ િળ્આ ન,
સજ ક્ષેત્ન મે વેટી, વેટા સમા ન।

ણા ની યઊા વર્થ િશ્રંન ન િક્ષ યા ન,
ખે ી મે વएહ, કટૈ છર્થ િયા ન ।

પ઼ઊ યનામ્ર एવ઼ેસ્ટક શ િપ્યન,
જા મ િની વ િનુ ઘન નહ િહિ રુછ ઘન।

ક ેકો કંપની ક, સી શ્રોઈ,
કો ન ક્ષેત્ન મે પછા ઙ઼ ણા ની કે ક િશ્રો?

નેત્ની, શ્રજ િનેત્ની , વ઼ િદુષી , ગુનુશ્રારુણ િ,
। ગ િનહસ્ ી ક વएહ છર્થ િન્હ ગ િનથા રુણ િ

પ્નશા સણ િક, પુઊ િસ , સૈન્ય઼ શ્રર્ય િકા ની ,
કો ન ક્ષેત્ન મે નહ િશ્રછ િણા ની?

યૂઙ઼ી- સો હા ગ િણ િહા થ મે ઊહડી,
સીં થ િમે યમકૈન સ િન્દૂન,
જા નસ ઊઊ પળા નર્થ િયુઊહા,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

३.२.मुन्नी कामत- रामायण



मुन्नी कामत
रामायण

राजा दशरथ अवधक सूत
तीन रानी चारि सपुत।
कौशल्या कैं पाहुन राम
केकई पुत्र भरत ललाम।
सुमित्राक दू टा लाल
लक्ष्मण, शत्रुघ्न शोभित भाल।
बहिसैए लागल अवध धाम
बाल रूपमे विष्णु अभिराम।
अलौकिक छटा रघुनंदन भाइ
बाल-क्रीडा देखि शविशंभू ललचाइ।
ज्ञान उपार्जन लेल बनल जोगी
ऋषि वशिष्ट लग पहुँचल चारू सहयोगी।
ऋषि वशिष्टक शिक्षा महान
गुणी बनल सब बालक केर गुरुअक मान।
भेल उजागर सबदिशा रामचरित्र

ओतय पहुँचला विश्वामित्र।
संगहि लऽ रघुवरके ऋषिवर
चलला दूर्गम पथ पर।
कहि काज छल जे ऽमकल तर
देथिन पुरूषोत्तमे ओकर उत्तर।
भेल विश्वास मुनिवर कैं
करता अवश्य ऐह खण्डित धनुष कैं।
मंद मुस्कान संग पहुँचला जनक धाम
आयोजित छल सभाक स्वंयमवर ओहिठाम।
शिवक सद्यि धनुष कोय नै हिला सकलक
देख ई जनक मुख अपन मलीन केलक।
जे पहाड़ बनल सब लाल छल
ओतबे सहज प्रभु राम लाल छल।

चारू धिया जनक कैं, अवध कुलक मान बनल
सीता-राम, मांडवी -भरत, उर्मी-लक्ष्मण, श्रुतकीर्ती -शत्रुघ्न संगे
चलल।
मिथिलामे पाहुन राम ऐला
घर -घर मंगल गान बजल
जनक दुलारी आब अवधक लाली
मोहस्था संगे सभ सखी चलल।
देख रंग -रूप सभाके
तीनो रानी हर्षित भेल
बेर -बेर उतारि नजैर
सोना -चांदी लुटाउल गेल।

राज्याभिषिक होउत रामक

सीता राजरानी छेली
जोगे सब ऋषि मुनियेक बीच
पुरुषोत्तम राम उत्तराधिकारी छेली।
पर विधान लिखल कहि और छल
मंथराक कूटनीतिसँ कैकेयी क्रोधित छल।
कूटभवन मे स्वयं कैं कैद केलक
राजा दशरथ लग अपन सहचर पठौलक।
पैद दियेलक ओऽ तीन वचन
जे देने छेलथिन युद्धक क्षणमे।
मांगैय लेल अपने तत्पर भेल
विनाशे काल बुद्धि हरि गेल।
राजा दशरथ जे देखलक
कैकेयी संग कानी लाग
कैह वैसल राजू कहिव वचन अछि हिमरा राखव अहाँक मान।
मांग वैसल जहिया पर वैसल लाग
भरत होयत एकर शिवदमे पूरा ब्रह्मांड।
भरत लेल राज्याभिषेक
राम लेल १४वर्षक वनवास
सुनते अवधे दशरथ के रुकि गेल सांस।
त्यागलक तखने कुटिल नारी
वनल काऽ राजा गेल मति मारी।
सुनते राम भेलक वनवासी रूप
वाल्या, भ्राता सगे त्यागलक भूप।
ढनमनैत रहल तहिक साज
नै -नै करैत करैत रहल अवध समाज।
केवट, निषाद, शवरी उधारा
तपस्वी राम सबहक सहारा।

𑒩𑒴𑒣 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒝𑒏 𑒠𑒹𑒐 𑒦𑒹𑒪 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒣𑒢𑒐𑒰 𑒧𑒼𑒯𑒱𑒞
𑒥𑒱𑒨𑒰 𑒁𑓀𑒏𑒳𑒩𑒻𑒪 𑒁𑒑𑒾𑒨 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒁𑒯𑒱𑒞।
𑒢𑒰𑒏 𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒣𑒢𑒐𑒰 𑒏𑒹𑒪𑒏 𑒔𑒱𑒞𑒏𑒰𑒩 𑒦𑓂𑒩𑒰𑒞।
𑒢𑒰𑒩𑒲𑒋, 𑒢𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒏 𑒠𑒳𑒐 𑒑𑒰𑒟𑒰।
𑒮𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒯𑒩𑒝 𑒩𑒰𑒫𑒝𑒏 𑒣𑒰𑒣𑒏 𑒁𑓀𑒞 𑒕𑒪
𑒁𑒯𑒱𑒪𑒹𑒪 𑒞𑒿 𑒦𑒑𑒫𑒢 𑒁𑒫𑒞𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪।
𑒯𑒢𑒳𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒢 𑒢𑒻 𑒦𑒏𑓂𑒞 𑒏𑒼𑒢𑒼
𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩𑒏𑒰𑒝𑓂𑒛 𑒮𑒖𑒪 𑒁𑒕𑒱
𑒯𑒵𑒠𑒨𑒧𑒹 𑒖𑒏𑒩 𑒥𑒮𑒪 𑒮𑒱𑒨𑒰𑒥𑒩
𑒕𑒰𑒞𑒲 𑒤𑒰𑒩𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।
𑒣𑒰𑒣𑒏 𑒒𑒻𑒪 𑒤𑒴𑒙𑒪 𑒩𑒰𑒫𑒝𑒏 𑒮𑓀𑒯𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪
𑒁𑒫𑒡 𑒢𑒑𑒩 𑒧𑒹 𑒮𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒡𑒼𑒥𑒲 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒹 𑒁𑒣𑒧𑒰𑒢 𑒦𑒹𑒪।
𑒦𑒩𑒪 𑒏𑒼𑒐𑒱 𑒩𑒰𑒖𑒧𑒯𑒪 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑
𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒁𑒮𑒑𑒩 𑒤𑒹𑒩 𑒫𑒢𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒲
𑒯𑒧 𑒁𑒥𑒪𑒰 𑒢𑒻 𑒕𑒲 𑒮𑒬𑒏𑓂𑒞 𑒢𑒰𑒩𑒲
𑒥𑒢𑒱 𑒪𑒫 -𑒏𑒳𑒬𑒏 𑒖𑒢𑒢𑒲
𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒦 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒧𑒹 𑒢𑒱𑒣𑒳𑒩𑓂𑒝 𑒏𑒹𑒪𑒲।

𑒧𑒰𑒋𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒱𑒨𑒰𑒥𑒋 𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢
𑒥𑒰𑒪𑒏 𑒪𑒫- 𑒏𑒳𑒬 𑒒𑒳𑒩𑒱 𑒋𑒪।
𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒨 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒫𑒡 𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒏𑒹𑒿
𑒂𑓄 𑒩𑒰𑒧 -𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒟𑒰 𑒏𑒻𑒯 𑒮𑒳𑒢𑒹𑒪।
𑒦𑒩𑒪 𑒮𑒦𑒰 𑒥𑒖𑒰𑒍𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒧𑒰𑒿 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒋𑒏 𑒥𑒹𑒩
𑒠𑒱𑒨𑒨 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒯𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒁𑒑𑓂𑒢𑒱 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒤𑒹𑒩।
𑒥𑒹𑒩 -𑒥𑒹𑒩 𑒁𑒯𑒱 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒧𑒩𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱𑒞 𑒡𑒱𑒨𑒰 𑒢𑒻 𑒩𑒖𑒪𑒲
𑒤𑒰𑒙𑒪 𑒡𑒩𑒞𑒲 𑒮𑒼𑒢𑒱𑒨𑒪 𑒦𑒴𑒧𑒱𑒖𑒰 𑒍𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒪𑒳𑒣𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒲।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒠𑒱𑒞𑒼𑒩𑒰𑒪𑒱𑓃𑒮𑒞𑒰𑒛𑒛𑓃𑒫𑒱𑒠𑒱𑒯𑒰𑓀𑒑𑒰𑒧𑒰𑒪𑒱𑓃𑒨𑒼𑒧 **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑒩𑓃𑒩𑓃𑒫𑒰𑒫𑒰 𑒫𑒻𑒠𑓂𑒨𑓃𑒢𑒰𑒟- 𑓑𑓘𑓕- 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨- "𑒋𑒏𑒢𑒲 𑒕𑒢𑓂𑒠"



𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒻𑒠𑓂𑒨𑒢𑒰𑒟

𑓇

𑒑𑒖𑒪

𑒂𑒡𑒰𑒩- "𑒢𑒖𑒩𑒲 𑒕𑒢𑓂𑒠"

२ १ २ २ २ १ २ २ २ १ २ २ २

𑒮𑒦-𑒧𑒢𑒼𑒩𑒟𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒮𑒱𑒢𑒏𑒱𑒨 𑒧𑒼𑒢𑒧𑒹 𑒠𑒰𑒥𑒲।
𑒥𑒴𑒜𑓃 𑒦𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒞𑒻𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒥 𑒥𑒮𑒱𑒨𑒰𑒥𑒲।

𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒫𑒰 𑒣𑒳𑒞𑒯𑒳𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒩𑒰𑒑 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒱 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒲𑒿,
𑒠𑒰𑒥𑒱 𑒏𑒱 𑒞𑒰𑒧𑒮 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒑𑒱 𑒮𑒳𑒢𑒑𑒰𑒥𑒲।

𑒂𑒃 𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒞𑒰𑒏𑒥 𑒋𑒏 𑒮𑒣𑒢𑒰 𑒟𑒱𑒏,
𑒏𑒯𑒱 𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒗𑒑𑒛𑓃𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒼𑒏 𑒁𑒖𑒧𑒰𑒥𑒲।

𑒂𑒣𑒮𑒲 𑒧𑒞𑒦𑒹𑒠𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒢 𑒏𑓂𑒨𑒼 𑒖𑒰𑒢𑒨,
𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒥𑒳𑒔𑒱𑒨𑒰𑒏𑒲 𑒮𑒯𑒱𑒞 𑒮𑒥 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒪𑒗𑒰𑒥𑒲।

𑒧𑒰𑒿 𑒦𑒫𑒰𑒢𑒲𑒣𑒩 𑒖𑒏𑒩 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒯𑒼 "𑒥𑒰𑒥𑒰"-,

𑒐𑒳𑒠 𑒩𑒯𑒥 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒪𑒐𑒢 𑒌𑒬𑓂𑒫𑒩𑓂𑒨-𑒮𑒳𑒐 𑒣𑒰𑒥𑒲।

- 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒻𑒠𑓂𑒨𑒢𑒰𑒟, 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒱𑒨𑒰𑒿(𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩)

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 ggajendra@videha.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓓.𑓔.𑒛◌ॉ. 𑒏𑒱𑒬𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩- 𑒯𑒾 𑒞𑒼𑒩𑒹 𑒞 𑒑𑒾𑒂 𑒕𑒟𑒱𑒁𑒯



𑒛𑒰◌ॅ 𑒏𑒱𑒬𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩
𑒯𑒾 𑒞𑒼𑒩𑒹 𑒞 𑒑𑒾𑒂 𑒕𑒟𑒱𑒁𑒯

𑒯𑒾 𑒞𑒼𑒩𑒹 𑒞 𑒑𑒾𑒂 𑒕𑒟𑒱𑒁𑒯

𑒢𑒲𑒏 𑒯𑒃 𑒏𑒲 𑒁𑒡𑒪𑒰𑒯 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒥𑒯𑒏 𑒪𑒻?
𑒏𑒼𑒄 𑒯𑒰𑒏𑒲𑒧 𑒩𑒯𑒾 𑒏𑒲 𑒏𑒼𑒄 𑒕𑒻 𑒯𑒩𑒥𑒰𑒯?
𑒋𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒰 𑒏𑒹 𑒯𑒰𑒪 𑒔𑒰𑒪 𑒣𑒳𑒕𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒥𑒯𑒏
𑒯𑒾 𑒞𑒼𑒩𑒹 𑒞𑓀 𑒑𑒾𑒂 𑒕𑒟𑒱𑒁𑒯𑓃

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒑𑒰𑒧 𑒧𑒹 𑒋𑒢𑒰 𑒦𑒽 𑒑𑒹𑒪𑒻 𑒅 𑒏𑒧𑓂𑒣𑒲𑒙 𑒏 𑒑𑒹𑒪𑒻
𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒮𑒪𑒰𑓀 𑒥𑒛𑓂𑒛 𑒢𑒰𑒧𑒲 𑒮𑒪𑒰𑓀 𑒖𑒧𑒲𑒠𑒰𑒩
𑒨𑒳 𑒖𑒲 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒲 𑒥𑒰𑒖𑒥? 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒑𑒰𑒧 𑒧𑒹 𑒋𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒪?
𑒂𑒥 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒼𑒡 𑒥𑓃𑒪𑒰 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒥 𑒏𑒯𑒰𑒿 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪?

𑒂𑒥 𑒢𑒻 𑒍𑒯𑒹𑒢 𑒑𑒰𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒪𑒻 𑒂 𑒢𑒻 𑒑𑒧𑒻𑒨𑓃𑒰 𑒪𑒼𑒏
𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒹𑒖𑒰𑒋 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒰 𑒥𑒰𑒠𑒼 𑒑𑒰𑒧 𑒮 𑒮𑒲𑒢𑒹𑒯
𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒑𑒳𑒧𑒰𑒢 𑒁𑒦𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒩𑒰𑒕𑒱𑒰 𑒪𑒥 𑒧𑒰𑒢
𑒏𑒼𑒃 𑒢𑒹 𑒥𑒼𑒪 𑒦𑒩𑒼𑒮 𑒠𑒹𑒞 𑒖𑒹 𑒞𑒼𑒩𑒹 𑒞 𑒑𑒾𑒂 𑒕𑒟𑒱𑒁𑒯?

𑒂𑒥 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱 𑒧𑒹 𑒥𑒿𑒙𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒑𑒰𑒧
𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒩𑒣𑓀𑒔 𑒏𑒹 𑒑𑒳𑒪𑒰𑒧 𑒦𑒹𑒪 𑒑𑒰𑒧
𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒁𑒢𑒏𑒰 𑒮 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒧𑒞𑒪𑒥 𑒕𑒻?
𑒂𑒤𑒞 𑒥𑒱𑒣𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒃 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒮𑓀𑒑 𑒕𑒻 𑒠𑒻𑒞?

𑒖𑒢 𑒯𑒩𑒫𑒰𑒯 𑒑𑒩𑒱𑒯𑒞 𑒥𑒼𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒯𑒰𑒏𑒲𑒧 𑒁𑒮𑓂𑒮𑒩
𑒮𑒥 𑒋𑒏𑒠𑒼𑒮𑒩𑒰 𑒮 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻
𑒂𑒥 𑒮𑒥 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒳𑒂𑒩𑒟𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒂𑒢𑓂𑒯𑒩
𑒏𑒞𑒾 𑒥𑒱𑒪𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒪𑒼𑒏𑒹 𑒞 𑒑𑒾𑒂 𑒕𑒨𑒱𑒁𑒯 𑒥𑒪𑒰 𑒑𑒰𑒧𑓂

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial@videha.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒋।**

